SUDAH NIDHI

G. K. U. 1959

जनवरी १९५९ ई०

वर्ष ५० { वार्षिक मूल्य ३) सुधानिधि { सं० १

ॐ

आयुर्वेदकी पताका

विजयी विश्व तिरङ्गा प्यारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥
जीवनदान दिलाने वाला।
नूतन शक्ति बढ़ाने वाला।
त्रिगुण [illegible] प्रतीक दुलारा।
[illegible] [illegible]गुरु न्यारा॥ झण्डा० ॥१॥
[illegible] [illegible]रसाने वाला।
[illegible] [illegible]याने वाला।
रोगीजनका प्रबल सहारा।
वैद्य जगतका उदित सितारा॥ झण्डा० ॥२॥
इस झण्डेके नीचे आकर।
स्वस्थवृत्त उपदेश सुनाकर।
भरद्वाज, धन्वन्तरि, शङ्कर,
घोषित कर जग यश विस्तारा॥ झण्डा० ॥३॥
इसकी शान न जाने देंगे।
सर्वस न्योछावर कर देंगे।
आयुर्वेद स्वराज्य बतावे।
विश्वविदित इतिहास हमारा॥ झण्डा० ॥४॥
आओ प्यारे वैद्यो आओ।
दीन दुःखीको गले लगाओ।
एक साथ सब मिलकर गाओ।
प्यारा आयुर्वेद हमारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा।
विजयी विश्व तिरङ्गा प्यारा॥ झण्डा० ॥५॥

जय जय आ[illegible] पताके

आयुर्वेद सरोज विकासिनि
वैद्यवृन्दवर मानसवासिनि
श्री धन्वन्तरि [illegible]
भरद्वाज मुनि [illegible]
शङ्कर-पञ्चानन [illegible]
निगमागम संचा[illegible]
त्रिगुण त्रिदोष प्रतीक विशुद्धे
सुधाकुम्भ परिचिन्हित रूपे
शुक्लारुण हरिताभ सवर्णे ॥जय० ३॥
शरणागत जन रक्षणमूर्ते
मानव जीवन शान्ति निकेते
सकल समुन्नति साधन भूते ॥जय० ४॥
नवतलमेत्य विमृज्य विशङ्काम्
आयुर्वेद-स्वराज्य प्रतिष्ठाम्
जय विज्ञान जगद्गुरु रूपे ॥जय० ५॥

सम्पादक

आयुर्वेद बृहस्पति श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल आयुर्वेदपञ्चानन, साहित्यवाचस्पति, प्रयाग,

श्री धन्वन्तरयेनमः

सम्पादक—
: आयुर्वेदबृहस्पति श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल आयुर्वेदपंचानन, साहित्यवाचस्पति, प्रयाग

वर्ष ५० सं० १ — सुधानिधि — जनवरी १९५९ ई० पौष २०१५ वै०

सुधा स्वादीयसी ह्येतद्वचो नहि परीक्षितम् ।
प्रददाति सुधामेष सुधास्रावी "सुधानिधिः" ॥

विज्ञापन १) प्रतिपंक्ति प्रतिकालम

वार्षिक मूल्य ३) प्रति अङ्क ।-)

पचासवाँ वर्ष

नमामि धन्वन्तरि मादि देवम्
सुरासुरै र्वन्दित पाद पद्मम् ।
लोके जरा रुग्भय नाश हेतुम्
दातार मीशं सकलौषधी नाम् ॥

पूर्ण मङ्गलकारी, सर्वविघ्नहारी, जीवनीशक्ति सञ्चालक, उत्साह और शक्ति एवं प्रेरणा प्रवर्तक श्रीमन् लक्ष्मीनारायण भगवान धन्वन्तरिका स्मरण एवं आयुर्वेद प्रवर्तक कुलपति महर्षि भरद्वाजकी वन्दना कर हम सुधानिधिका पचासवाँ वर्ष आरम्भ करते हैं। यह पहला अङ्क रोगी निर्बल हाथोंसे अनेक भारोंसे दबे हुए मस्तिष्कसे लेखकोंके आदि गुरु गणेशजी और सारी विद्या बुद्धिकी प्रेरक माता सरस्वतीका ध्यान कर लिखा गया है। भगवान हमें स्वास्थ्य और शक्ति दें। आयुर्वेदजगतके वैद्य और मित्र हमें सहारा दें, सहयोग दें और सुधानिधिके पाठक रूपसे सुधानिधिका मूल्य भेजनेकी कृपा करें। उच्च श्रेणीके वैद्य और कार्यकर्ता इसे पढ़नेकी कृपा करें, इसके सुझावोंको पढ़कर आयुर्वेद जगतमें कर्तव्यकी प्रेरणा विद्युत शक्तिसे विस्तीर्ण करें। सुधानिधिके सञ्चालनका आर्थिक भार आप अपने ऊपर समझ तीन रुपया शीघ्र भेजनेकी कृपा करें। इसे चाहे आयुर्वेदकी सहायता समझें, चाहे इस दास पर किया हुआ उपकार समझें, चाहे आयुर्वेदिक व्यवसायका एक स्वेच्छा प्रदत्त टैक्स समझें; परन्तु रुपया अवश्य भेजें। महँगा कागज, महँगी छपाई और महँगा पोस्टेज सँभालनेकी हममें शक्ति नहीं। आपके सहाय प्रदानसे ही वह कार्य हो सकता है। आप सबके उदारता प्रकट करनेसे ही हममें शक्ति, उत्साह और कार्यक्षमता बढ़ सकती है। आशा है वैद्यजगतका प्रोत्साहन हमें प्राप्त होगा और सुधानिधि उनके सामने आवश्यक सुझाव और विचार प्रकट करते रहनेमें समर्थ और सफल होगा। इतिशम्।

सम्मेलन २३ फरवरीको होगा!

पिछले अङ्कमें हमने लिखा था कि दिल्लीमें होनेवाला आयुर्वेद महासम्मेलन जनवरीके प्रथम सप्ताहमें होगा। किन्तु कुछ कारणोंसे सम्मेलनका अधिवेशन अब जनवरी नहीं फरवरीमें २३ से २५ तारीख तक होगा। स्नातक सम्मेलन और पताकारोहण एवं सम्पादक सम्मेलन २२ को ही होंगे। सम्मेलनके साथ एक प्रदर्शिनी होने वाली है। वह अधिक भव्य और उपदेशजनक बन सके, इसके लिये समयकी आवश्यकता थी। इसके सिवाय जनवरीमें दिल्लीमें भयङ्कर जाड़ा पड़ता है। उस जाड़ेको सहने और बराबर सम्मेलनके कार्योंमें योगदान देते रहनेमें सदस्योंको अड़चन पड़ सकती थी। विशेषकर दक्षिणके सदस्य ऐसे शीतके अनभ्यस्त होनेके कारण बहुत कष्ट पाते। अतएव जनवरीमें न होकर शीत घट जाने पर फरवरीमें सम्मेलन हो यह ठीक ही है। यों तो दिल्लीमें फरवरीमें भी जाड़ा ही रहेगा और सदस्योंको बिछाने ओढ़नेके कपड़ोंसे लैस पहुँचना चाहिये।

आयुर्वेद महाविद्यालय—हमने पिछले अङ्कमें सम्मेलनके लिये कुछ सुझाव दिये थे, वे सुझाव अभी तक वैसे ही कायम हैं और हमें आशा है कि सम्मेलनमें उपस्थित सज्जन उन पर विचार कर उन्हें पूर्ण कराने पर अवश्य प्रयत्नशील होंगे। पहली बात यह है कि अब आयुर्वेदका शिक्षण और परीक्षण कार्य जनता और सरकार पर तभी महत्त्वपूर्ण असर डाल सकेगा, जब शिक्षणके लिये आदर्श शिक्षणालय हो, प्रत्यक्ष कर्माभ्यासके लिये प्रयोगशाला आदि हो, शारीर ज्ञान आदिके लिये शवच्छेदालय और प्रदर्शनकी सुविधा हो। द्रव्यसंग्रहालय हो, रोगी प्रदर्शनकी सुविधा हो और शल्यज्ञान तथा शालाक्यज्ञानके लिये अच्छा अस्पताल हो। प्रसूतिविज्ञानके लिये भी प्रसूतिकागारकी व्यवस्था हो। ऐसी दशामें यदि सम्मेलनको अपनी परीक्षाएँ चलानी हैं और यह बतलाना है कि समयकी आवश्यकताओंको पूर्ण करने वाले ज्ञानके साथ आयुर्वेदका शिक्षण कैसा हो तो सम्मेलनको अपना महाविद्यालय रखना ही होगा।

आयुर्वेद विश्वविद्यालय—उच्च शिक्षण, अनुसन्धान कार्य, योग्य अध्यापकोंकी तैयारी, विषय विशेषके सम्यक्ज्ञान, पूर्ण प्रशिक्षणकी सुविधा आदि कार्योंकी पूर्तिके लिये तथा देशके स्वास्थ्य और चिकित्सा कार्यके लिये अच्छे पदाधिकारी तैयार करनेके लिये भी व्यवस्था करनी हो तो सम्मेलनको अपना एक विश्वविद्यालयकी योग्यताका संस्थान भी स्थापन करना आवश्यक हो सकता है। यद्यपि "आयुर्वेद विद्यापीठ" ऐसा व्यापक और अर्थपूर्ण नाम है कि उसके अन्तर्गत विश्वविद्यालयका अन्तर्भाव हो सकता है; किन्तु शायद अब सरकारी कायदा ऐसा बन रहा है कि विश्वविद्यालयकी स्थापना सरकारी कायदेके अनुसार होने पर ही उसका सञ्चालन सम्भव हो सकता है। ऐसी दशामें सम्मेलनको आवश्यक होगा कि विधानके अनुसार कायदे द्वारा विश्वविद्यालयकी स्थापना करे। अथवा झांसी आयुर्वेद विश्वविद्यालयसे मिलकर संयुक्त शक्तिसे सञ्चालित एक संस्थाका आश्रय ले। अथवा सरकार पर इतना प्रभाव विस्तार करे कि सरकार ऐसा आयुर्वेद विश्वविद्यालय स्थापित करे जिसका सञ्चालय आयुर्वेद विद्यापीठके सहयोगसे हो सके और उसके शिक्षण आदिमें आयुर्वेद विद्यापीठका अच्छा प्रभाव रहे। इस विषय पर सम्मेलनको गम्भीरता पूर्वक विचार करना होगा। एक विश्वविद्यालयकी योजना और कायदेका मशविदा हमें ए० टा० शर्माके नामसे मिला है। सम्भवतः यह हमारे सभापति अनन्तशर्मा त्रिपाठीका हो। जब तक इसे हिन्दीमें न छापा जाय तब तक सुविधासे विचार नहीं हो सकता। इसमें विद्यापीठका नाम एर्वालिश्ड करनेके लिये कहा गया है; कहना चाहिये जिसे अभी तक आयुर्वेद विद्यापीठ कहा जाता था

वही अब विश्वविद्यालयमें परिवर्तित हो गयी है। उचित यह होगा कि युनिवर्सिटीकी जो प्रधान परिषद हो उसका नाम आयुर्वेद विद्यापीठ रहे। परिषदकी एक कार्य समिति रहे, चाहे उसीका नाम संसद या सिंडीकेट रहे। सम्मेलन सभापति जब चांसलर रहेगा तब सम्मेलनमें जो शिक्षापरिषद विद्यापरिषद या अध्यापक परिषदका सभापति हो वही उपकुलपति रहना चाहिये। बीचमें एक अनुचांसलरकी कल्पना अनावश्यक दिखती है।

संगठन दृढ़ कीजिये—संस्थाको दृढ़ बनाने के लिये उसका सङ्गठन दृढ़ होना आवश्यक है। एक व्यापक और अखिल भारतीय संस्थाको विराटस्वरूप वाली होना चाहिये। भारतमें जितनी भी संस्थाएँ आयुर्वेदकी उन्नतिके अभिप्रायसे स्थापित हैं वे सभी हमारे सम्मेलनसे सम्बन्धित होनी चाहिये। उनका सहयोग और मैत्रीभाव सम्मेलनको प्राप्त होना चाहिये। मिश्र पाठ्यक्रमके मानने वालोंका जो सम्मेलन स्थापित है, उसका उद्देश्य आयुर्वेदके व्यापक रूपका प्रकाशन चाहता है। उसके श्री पन्नालाल जैसे कुछ सदस्योंसे हमारी जो बातचीत हुई है, उससे यही निष्कर्ष निकलता है कि उसके सदस्य सम्मेलनसे मिलकर चलना चाहते हैं और मिश्र पाठ्यक्रमके अंशके साथ आयुर्वेदका जो विस्तार चाहते हैं वह सम्मेलनके उद्देश्योंमें बाधक नहीं हो सकता। हमारी समझमें यदि ये लोग "मिश्र" शब्दका आग्रह छोड़ दें और सम्मेलनके कुछ सदस्य "शुद्ध" शब्दके पीछे लाठी लेकर न दौड़ें तो यथार्थमें दोनोंमें कोई अन्तर नहीं है। आयुर्वेदका व्यापक स्वरूप सभी चाहते हैं और उसे करना पड़ेगा। अतएव हमारा आन्दोलन "आयुर्वेद" के नामसे होना चाहिये। आयुर्वेदका अर्थ ही यह है कि जिसमें सारे जीवनके विज्ञानका समावेश हो और जिसे पढ़कर स्नातक देशसे स्वास्थ्य और चिकित्साविभागके सभी पद सफलता पूर्वक सँभाल सकें। इसी तरह "वैद्य-हकीम" आन्दोलनसे भी भड़कनेकी आवश्यकता नहीं है। बिचकने वाले बैलकी तरह लाल-पीला कपड़ा देखकर भड़कना वैद्योंको शोभा नहीं देता। हमारे देशका सम्मिलित आन्दोलन आयुर्वेदके नाम पर होगा। और उसमें हकीमोंके स्वत्वोंका ख्याल रखते हुए उनके सहयोगसे हमें अपना आन्दोलन सफल करना होगा। अब तो शुद्ध आयुर्वेदके भी सम्मेलन होने लगे हैं। इसे भी सम्मेलनको समेटना पड़ेगा। सङ्गठन दृढ़ करनेके लिये हमें प्रान्तिक सम्मेलनोंका सङ्गठन नये सिरेसे करना होगा। हमारे प्रान्तीय सम्मेलन अपने प्रान्तके जिलोंका दृढ़ सङ्गठन करने वाले हों और सम्मेलनका जाल सारे प्रान्तोंके द्वारा सारे देशमें ऐसा फैला रहना चाहिये कि एक ही जालके ताने बानेमें स्थानीय संस्थाएँ, तहसील और नगरकी संस्थाएँ जिलेके द्वारा प्रान्तसे और प्रान्तके द्वारा अखिल भारतीय सङ्गठनसे गुथी रहनी चाहिये। यह सन्तोषकी बात है कि इस वर्षके सम्मेलनके कार्यक्रम में प्रान्तीय सम्मेलनके कार्यकर्ताओंसे परामर्श करने का समय सभापति महोदयने रखा है। हमें यह सुनकर प्रसन्नता हुई है कि इस वर्षके सभापति पं० अनन्तशर्मा त्रिपाठी जीने कार्य रूपसे इस पर ध्यान दिया है और बिहार और बङ्गालमें प्रान्तीय सम्मेलनको लेकर जो दलबन्दी चल रही थी उसे दूर करनेमें सफलता पायी है और अब वहां सम्मिलित चुनाव द्वारा सङ्गठन दृढ़ किया जायगा। उत्तरप्रदेशमें भी यद्यपि अभी ज्वालामुखीका स्फोट नहीं हुआ है। तथापि दलबन्दीको प्रश्रय देते रहनेसे अशान्ति भड़क सकती है। अतएव सम्मेलनके सभापति और मुख्य मन्त्री जीको और भी उदार और विशाल हृदयका परिचय देकर सब विचारके लोगोंको समेटनेका प्रयत्न करना चाहिये।

सरकार पर प्रभाव—शाब्दिक सहानुभूतिसे अतिरिक्त प्रान्तीय सरकारों और केन्द्रीय सरकारका कार्य आयुर्वेदके अधिक अनुकूल नहीं हो रहा है। आयुर्वेदको राष्ट्रीय स्वास्थ्य और चिकित्साविज्ञान बनानेके दृष्टिकोणसे उसकी उन्नति और पुष्टिकरणका कार्य नहीं हो रहा है। आयुर्वेदके कार्यक्रम

को विकास कार्योंकी लिष्टमें पंचवर्षीय योजनामें रखना आवश्यक है। जब तक आयुर्वेदके कार्योंको योजनामें प्राथमिकता न दी जाय तब तक हमारा आन्दोलन सफलता और पूर्तिकी दृष्टिसे नहीं बढ़ सकेगा। प्रत्येक प्रान्तमें कुछ प्रान्तीय वैद्य, विधान-सभा और विधान परिषदके कुछ प्रभावशाली सदस्य और जनताके आन्दोलनके कुछ उत्साही कार्य-कर्ताओंको मिलाकर एक समिति सभी प्रान्तोंमें बननी चाहिये जो विधान सभा और परिषद्के सदस्योंमें आयुर्वेदके प्रति अधिक उत्साह और आकर्षण उत्पन्न करे और सरकारी रुखको अधिक अनुकूल कर कार्यतः आयुर्वेदकी उन्नतिके कार्य बढ़ावे। इसके लिये आयुर्वेदका डाइरेक्टर होना आवश्यक है और यदि सम्भव और आवश्यक हो तो मिनिस्टर भी आयुर्वेदका स्वतन्त्र रखा जाय। जिससे वह स्वतन्त्र रूपसे आयुर्वेदकी उन्नतिकी योजनाएँ सोचकर उन्हें कार्यमें परिणत करनेमें तत्परता प्रकट कर सके। जब तक आयुर्वेद पर एलोपैथिक डाक्टरों और अधिकारियोंका बेजा प्रभाव बना रहेगा तब तक आयुर्वेदकी गाड़ी मेलट्रेनकी गतिसे बढ़ना कठिन है। यह आवश्यक है कि केन्द्रमें एक आयुर्वैदिक मेडिकल कौंसिल स्थापित हो और उसकी क्षमता एलोपैथिक मेडिकल कौंसिलके रोबदाबसे किसी भी प्रकार कम न हो। अब देशके हृदयसे, अधिकारियोंके मस्तिष्कसे और स्वास्थ्य तथा चिकित्साविभागसे एलोपैथीका मोह क्रमशः घटते रहना चाहिये और आयुर्वेदका बढ़ते रहना चाहिये। एलोपैथीके कालेज, अस्पताल आदि बढ़ानेकी प्रवृत्ति एकदम बन्द होनी चाहिये और आयुर्वेदके कालेज, अस्पताल, सेनीटोरियम, प्रयोग-शालाएँ, अनुसन्धानशालाएँ बढ़नी चाहिये, पूर्ण और पुष्ट होनी चाहिये। पाश्चात्यज्ञान और क्षमता का हमें आवाहन कर अपने ज्ञान और क्षमतामें उसे आत्मसात करते रहनेकी प्रवृत्ति जागृत करनी होगी। इस प्रकार हमें राष्ट्रीय स्वास्थ्य और चिकित्साका मार्ग प्रशस्त कर अन्तिम लक्ष्य और ध्येयकी प्राप्ति करनी होगी। इसके लिये यह भी आवश्यक है कि केन्द्रमें भी प्रभाव डालनेके लिये संसद और राष्ट्र-परिषदके कुछ सदस्यों, अखिल भारतीय सम्मेलनके प्रतिनिधियों और देशके प्रमुख नेताओंकी एक परिषद रहे जो समय समय पर सरकारी अधि-कारियोंके रुखमें अनुकूल परिवर्तन कराती रहे।

देश विदेशमें आन्दोलन—अखिल भार-तीय, प्रान्तीय, जिलों आदिकी संस्थाओंके द्वारा हमें अपने आन्दोलनकी गति देशमें तीव्रतर करनी होगी। जनतासे अधिकसे अधिक घनिष्टता बढ़ाकर हमें जनताकी सहानुभूति और सहयोग प्राप्त कर अपना आन्दोलन देशव्यापी बनाना होगा। देशके बच्चे बच्चेके मुख और दिमागमें आयुर्वेदका नाम और महिमा मुखरित करनी होगी। इसके बाद सबसे पहले एशियाके जिन देशोंमें पहले आयुर्वेदका प्रभाव पड़ चुका है उसे ताजा रूप देनेका प्रयत्न करना होगा। समस्त एशियाके स्वास्थ्य और चिकित्साविज्ञान पर आयु-र्वेदका प्रभाव विस्तार करना होगा। इसके बाद मिश्र, यूनान, टर्की, रूस, इटली, जर्मनी, इङ्गलेण्ड और अमेरिकामें भी अपने प्रयत्नोंका प्रभाव बढ़ाना होगा। इस कामको लेखों द्वारा, राजदूतालयोंके द्वारा और शिष्टमण्डल भेजकर सफल बनाना होगा। प्रत्येक राजदूतालयमें सांस्कृतिक विभागके अन्तर्गत एक आयुर्वेदप्रेमी सदस्य रखना होगा। जो उन देशोंमें आयुर्वेदका महत्व बढ़ाने पर प्रयत्नशील रहे। स्वास्थ्य, चिकित्सा, संक्रामकरोग निवारण आदि विषयोंके विचारके लिये जो सभाएँ, विचार परिषदें आदि देश या विदेशमें होती हैं उनमें देशकी ओरसे जो प्रतिनिधि जाते हैं उनमें डाक्टर ही होते हैं। भविष्यमें उनमें भी वैद्य और हकीमोंको भी लिया जाना चाहिये। ये सब ऐसे कार्य हैं जिनकी पूर्तिके लिये आयुर्वेद महासम्मेलनको अपने अलग विभाग बनाने चाहिये। इस महान कार्य सञ्चालनके लिये आर्थिक व्यवस्था भी करनी पड़ेगी। इसके लिये कुछ त्यागी महानुभावोंको सामने आना होगा और सम्मेलनके लिये अपना जीवन उत्सर्ग करना होगा। आशा है

इस वर्षका सम्मेलन धूमधाममें ही नहीं भविष्य व्यवस्थाके लिये भी असरकारक होगा।

ग्राहकोंसे—सुधानिधिका नया वर्ष आरम्भ हो रहा है अब कृपा कर सभी ग्राहक उदारता पूर्वक शीघ्र मूल्य भेजनेंकी कृपा करें। पत्रकी रक्षा करना सबका धर्म है। लापरवाही दिखाना अपराध है। क्योंकि हम इस समय इस स्थितिमें नहीं हैं कि अकेले पत्रका भार वहन कर सकें। पिछले वर्ष यदि कलकत्तेमें श्री आयुर्वेदभवनके उद्योगसे इक्कीस सौ रुपये न मिल जाते तो बड़ी फजीहत होती।

मैनेजर

सामयिक चर्चा

रीवांमें मेडिकल कालेज—समाचार पत्रोंकी खबर है कि रीवांमें एक मेडिकल कालेज खुलनेकी चर्चा जोरों पर है। जब पण्डित शम्भूनाथ शुक्ल विन्ध्यप्रदेशके प्रधानमन्त्री थे तब उन्होंने रीवांमें मेडिकल कालेज खोलनेका प्रस्ताव किया था अब विन्ध्यप्रदेश वृहत मध्यप्रदेशमें सम्मिलित है और उसके प्रधानमन्त्री माननीय डाक्टर काटजू महोदय हैं। वे भी इस प्रस्तावसे प्रभावित हुए हैं और आशा है कि इस विचार और प्रस्तावकी पूर्ति हो जायगी। स्वास्थ्य और चिकित्साविज्ञानकी सप्रयोगात्मक ऊँची शिक्षा बघेलखण्ड-बुन्देलखण्डको प्राप्त हो इसमें हमें प्रसन्नता है। किन्तु विन्ध्य प्रान्तकी जनता, वैद्यगण और अधिकारियोंके स्मरणार्थ हम एक चर्चाका यहां उल्लेख कर देना चाहते हैं। स्वर्गीय महाराज सर वेंकटरमण सिंह जू देव एक प्रजाहितैषी भारतीय भावनाओंके पोषक आदर्श नरेश थे। उनकी आयुर्वेदमें अच्छी निष्ठा थी। प्रयागका तृतीय वैद्यसम्मेलन जब हुआ तब आपने अपने राजवैद्य पण्डित बाल्मीकिप्रसाद शर्माको सम्मेलनमें प्रतिनिधि बनाकर भेजा था। उनके लौटने पर महाराज इतने प्रभावित हुए कि तत्कालीन आयुर्वेद महासम्मेलनके प्रधानमन्त्री पण्डित जगन्नाथप्रसाद शुक्लको अनेक बार मिलकर परामर्श करनेको बुलाया। एक योजना बनी और अखिल भारतीय प्रसिद्धिके वैद्योंके परामर्शसे दिल्लीमें यह तय हुआ कि एक आयुर्वेद महाविद्यालय रीवांके पास या प्रयागमें खोला जाय। इस कार्यकी सिद्धिके लिये सम्पूर्ण भारतके नरेशोंसे महाराजका परिचय पत्र लेकर श्री शुक्लजी और कविराज गणनाथसेन, पण्डित लक्ष्मीराम स्वामी, पण्डित डी० गोपालाचार्लु, पं० रामप्रसादशर्मा राजवैद्य, श्री कवड़े शास्त्री आदि सज्जन मिले। महाविद्यालयकी सब बातें तय हो ही रही थीं कि इसी बीच इनफ्लुएञ्जामें महाराजका स्वर्गवास हो गया। इस घटनाको स्मरण कराकर हम रीवांके वर्तमान महाराज श्रीमान् महाराज मार्तण्ड सिंह जू देवके क्षत्रिय रक्तको उत्तेजित करना चाहते हैं कि वे अपनी शक्तिका सदुपयोग अपने पितामहकी इच्छानुसार ऐसे आयुर्वेदकालेजके खोलनेमें करें कि जिससे आयुर्वेदका उत्कर्ष हो और वर्तमान मेडिकल कालेजों द्वारा जो सुविधा जनताको प्राप्त होना

सम्भव है वह इसीके द्वारा हों। राजवैद्य पण्डित बाल्मीकिप्रसादके वंशजों और रीवांके वर्तमान वैद्योंसे हमारा अनुरोध है कि वे जनता और सरकारमें ऐसा आन्दोलन करें कि रीवांमें जो मेडिकल कालेज खुलने वाला है वह "आयुर्वेद मेडिकल कालेज" हो। जिसमें आयुर्वेदके माध्यम द्वारा सभी स्वास्थ्य और चिकित्साकी बातें पढ़ायी जायँ और विश्वमें जितने द्रव्यगुण, रोगपरीक्षण और चिकित्सा सम्बन्धी साधन, शल्य शालाक्य, एवं प्रसूति सम्बन्धी सुविधाएँ प्राप्त हैं उन सबकी जानकारी करायी जाय। हम विन्ध्य प्रान्तकी जनतासे यह अनुरोध करना चाहते हैं कि उनका प्रान्त जड़ी बूटियों, खनिज द्रव्यों और रासायनिक सम्पत्तियोंसे पूर्ण है। यदि आयुर्वेदके माध्यमसे वहां कालेज खुले तो जनताकी सेवा यथासम्भव बहुत अधिक हो सकेगी। वर्तमान ढङ्गके पाश्चात्य शिक्षा वाले मेडिकल कालेजसे उनकी उतनी सेवा सम्भव नहीं होगी। हमारे सुझाये ढङ्गसे आयुर्वेदका वैज्ञानिक शिक्षाका प्रचार होगा आधुनिक ढङ्गके सम्मिश्रणसे आयुर्वेदकी पूर्ति होगी और जितनी सुविधा मेडिकल कालेज द्वारा सम्भव है, वह भी होगा ही। अतएव अधिकारियोंको भी इस पर विचार कर भारतीय परम्पराके अनुसार ही निश्चय करना चाहिये।

स्वास्थ्य बैंक—एलोपैथी वालोंने रक्तदानके लिये "ब्लड बैङ्क" खोला है। नेत्र चिकित्साके लिये भी सहायता प्राप्त करनेका ऐसा ही उपाय किया है। सरकारकी सहायतासे क्षय रोग निवारणके लिये एलोपैथी उपायोंके प्रचारके लिये भी टिकट चलाये गये हैं। हम समझते हैं कि हमारे वैद्यसम्मेलनको भी जनताके स्वास्थ्यकी रक्षाके आन्दोलनके लिये ऐसा ही कोई उपाय करना चाहिये। जनतामें आयुर्वेदके प्रचार और जनताकी सेवाके लिये सङ्गठित प्रयत्न आवश्यक है। अभी कुछ दिन पहले फैजाबाद जिला वैद्यसम्मेलनने एक प्रस्ताव पासकर 'आयुर्वेदोद्धारक' समिति कायम करनेका निश्चय किया है और अन्यत्रकी सभाओंसे भी अनुरोध किया है कि ऐसी आयुर्वेदोद्धारक समिति खोलें। हम इस प्रस्तावका अनुमोदन करते हैं और चाहते हैं कि अखिल भारतीय आयुर्वेदमहासम्मेलन इस सम्बन्धमें प्रस्ताव पासकर प्रान्तोंका मार्गप्रदर्शन करे। यदि वह ऐसा न करे या इस कार्यमें ढालढाल करे तो उत्तरप्रदेशका सम्मेलन इसे तुरन्त कार्यमें परिणत करदे। इस कार्यके सञ्चालनके लिये एक निधिकी आवश्यकता होगी। इसके लिये हम चाहते हैं कि एक स्वास्थ्य बैङ्क स्थापित किया जाय। एक रुपये और चार आनेके टिकट नोटके अनुकरण पर स्वतन्त्र डिजाइन बनाकर छापे जायँ और जनतासे इसके लिये चन्दा वसूल किया जावे। इस कार्यमें हमें विश्वास है कि ग्राम पञ्चायतोंका सहयोग मिलेगा और आवश्यक रकम एकत्र हो जायगी। इसके साथ ही एक योजना स्वास्थ्य संरक्षण सम्बन्धी तैयार की जाय। प्रत्येक जिला सभा अपने क्षेत्रके लिये उस योजनाको पूर्ण करनेका जिम्मा लेवे वैद्य लोग देहातोंमें जावें। प्रत्येक ग्राममें स्वास्थ्यरक्षा पर भाषण हों। बीमारोंको देखा जाय और उन्हें उचित परामर्श चिकित्सा और खानपानके सम्बन्धमें दिया जाय। गांवके नौनिहाल बालकोंका स्वास्थ्य देखा जाय और उनके संरक्षकोंको उनके सम्बन्धमें उचित सलाह दी जाय। यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक ऋतुमें जिन रोगोंकी सम्भावना होती है, उनके सम्बन्धमें उचित रहन सहन और रक्षाके उपायोंका जनताको परामर्श दिया जाय। यदि किसी रोग विशेषका किसी क्षेत्रमें अधिकतासे प्रकोप हो तो वहां भी वैद्य लोग पहुँचें और जनताकी सेवा करें, औषधि देवें। स्त्रियों और पुरुषोंको होने वाले रोगोंके सम्बन्धमें भी सूचना दी जाय। इस प्रकार यह कार्य जनताके हितमें होगा। अतएव जनता इसके लिये उदारता पूर्वक सहायता अवश्य देगी। कुछ टिकट बनवाये जायँ जो एक एक आनेमें उन लोगोंको दिये जावें जिनसे रुपया और चार आनेके स्वास्थ्य नोटकी रकम वसूल नहीं हुई। हमें आशा है कि यह स्वास्थ्य बैङ्ककी योजना अवश्य सफल होगी। इसके द्वारा

वैद्य लोग जनताकी सेवा कर आयुर्वेदके प्रति सहानुभूति आदरभाव और प्रेम सम्पादित कर सकेंगे। उचित प्रस्तावोंमें अनुमति प्रदान कर जनता आयुर्वेदकी मांगोंको पुष्ट करेगी। इस प्रकार आयुर्वैदिक स्वराज्यकी मांग भी बलवान होगी और सरकारको उसे माननेके लिये बाध्य करेगी।

विद्यार्थियोंका असन्तोष—आजकल आयुर्वेद क्षेत्रमें धमाचौकड़ी मच रही है। चारों ओर असन्तोष, अविश्वास, मतभेद और झगड़े चल रहे हैं। विद्यार्थी हड़ताल करते हैं, धूमधामसे आन्दोलन चलाते हैं। पढ़ना छोड़कर राजनीतिके अखाड़ियोंके फेरमें पड़ प्रदर्शन करते हैं, भूख हड़ताल करते हैं, तोड़ फोड़ और ऊधमके काम करते हैं। कहीं शुद्ध आयुर्वेदको लेकर असन्तोष और आन्दोलन है, कहीं मिश्र आयुर्वेदका प्रचार न होनेसे मतभेद है। आयुर्वेदके स्नातकोंमें भी सन्तोष नहीं है अभी तो सरकारमें उनकी नियुक्ति ही नाम मात्रको है; किन्तु जो है वह भी सम्मानपूर्ण और आर्थिक दृष्टिसे सन्तोषजनक नहीं है। हमारे आयुर्वेद महासम्मेलनको केवल दूरसे इस असन्तोषका तमाशा नहीं देखना चाहिये। इसका भी उसे विचार करना चाहिये। जहां तक पाठ्यक्रमका प्रश्न है, उसे बहुत गम्भीरताके साथ पाठ्यक्रम निर्माणका समाधान करना होगा। आयुर्वेदके आधारभूत सिद्धान्तों, पदार्थविज्ञान और दर्शनका पूर्ण शिक्षण रखते हुए व्यावहारिकता और आधुनिककालकी समस्याएँ और आवश्यकताओंकी पूर्तिका पूर्ण ध्यान रखना होगा। हमारा ध्येय देशमें आयुर्वैदिक सिद्धान्तोंके साथ देशके स्वास्थ्य और चिकित्सा विभाग तथा सैनिक चिकित्सा विभागकी आवश्यकताओंकी पूर्ति करने वाले कुशल चिकित्सक और विद्वान तैयार करना है। हमें उस समयके स्वागतकी तैयारी करना है जब देशमें आयुर्वेद राष्ट्रीय चिकित्साविज्ञानका गौरव प्राप्त करे। सब बातोंकी तहमें जाकर हमें उसके समाधानका उपाय करना होगा देशमें आज एलोपैथीका बहुमान है, डाक्टरोंका वेतन जबरदस्त है, उनकी जहां नियुक्ति होती हैं, पहले भव्य इमारत और साज सामानकी काफी तैयारी होती हैं। वैद्य अपनेको उसके मुकाबले कङ्गाल पाता है। इसीलिये उसे डाक्टर बनने या कहलानेकी प्रेरणा होती है। अभी यदि सरकार वैद्यका दर्जा सर्वोपरि करदे, उसकी मानमर्यादा बढ़ादे तो किसीको डाक्टर कहलानेकी प्रेरणा न हो। विद्यार्थियोंके असन्तोषकी जड़में भी हमें जाना होगा। एक ओर मेडिकल कालेजमें भरपूर शिक्षक, प्रोफेसर, डिमांस्ट्रेटर आदि हैं। प्रयोगशालाएँ और प्रत्यक्ष कर्माभ्यासके भरपूर साधन हैं. सैकड़ों रोगियों वाले अस्पताल हैं। दूसरी ओर आयुर्वेदकालेजोंमें प्रोफेसरों और शिक्षकोंकी मारामार है। सभी विषयोंके अलग शिक्षणकी व्यवस्था नहीं है। प्रयोगशालाएँ भरपूर नहीं हैं। अस्पताल टुटपुंजिहे हैं। विद्यार्थियोंको सन्तोष नहीं होता, सरकारका ध्यान आयुर्वेदकी ओर नहीं है। उसके अधिकारी मौखिक सहानुभूति भले ही प्रदर्शित करें किन्तु मेडिकल कालेजोंके मुकाबले आयुर्वेदकालेज किस गिनतीमें नहीं है। आखिर एकके बाद दूसरे नये मेडिकल कालेज खोलनेकी आवश्यकता क्या है? पूर्ण तैयारी वाले आयुर्वेदकालेज क्यों नहीं खोले जाते? जिनमें आधुनिककाल तककी सब समस्याओंकी पूर्तिका साधन हो। अभी आयुर्वेदकी स्थिति दृढ़ और गहरी नहीं है। हमारे आयुर्वेद महासम्मेलनको पूरा ध्यान देकर भरपूर आन्दोलन करना है। केन्द्रीय सरकारमें मेडिकल कौंसिलके मुकाबले बल्कि उससे भी दृढ़तर आयुर्वैदिक कौंसिलकी स्थापना करानी होगी। जिसकी सलाह और स्वीकृतिके बिना भारतकी स्वास्थ्य और चिकित्साकी व्यवस्था न हो। आयुर्वेदका डाइरेक्टर केन्द्र और प्रान्तोंमें नियुक्त करना होगा, जो बराबर आयुर्वेदका दृष्टिकोण सरकारके सामने रखता रहे। हम एलोपैथी या डाक्टरोंको अपना आदर्श नहीं मानते। यदि देशकी आर्थिक समस्या जटिल है तो हम नहीं चाहते कि आज ही वैद्योंका वेतन ऊँचेसे ऊँचा हो। चाहे कम वेतन रखा जाय; परन्तु

शर्त यह हो कि वैद्यसे अधिक वेतन किसी प्रकारके चिकित्सकका न हो। वैद्यसे अधिक मान मर्यादा किसी प्रकारके चिकित्सककी न हो। हमें विश्वास है कि यदि आयुर्वेद महासम्मेलन इस आन्दोलनमें सफलता प्राप्त करे तो वैद्य और विद्यार्थियोंका असन्तोष दूर हो जाय और आयुर्वेदकी क्रमोन्नति होती रहे। हमारा ध्येय पूर्ण हो, हम इसी दृष्टि-कोणसे अपना आन्दोलन चलाना चाहते हैं।

हमारी चिकित्सा प्रणाली—अभी हालमें बङ्गालके स्वास्थ्य मन्त्री डा० राय प्रयाग आये थे। यहां उन्होंने डाक्टर होते हुए भी वर्तमान एलोपैथीके ढङ्गकी आलोचना कर आयुर्वेद और यूनानीका समर्थन कर उनकी उन्नतिकी कामना की थी। स्वराज्य प्राप्तिके बाद अब अपनी चिकित्सापद्धतिको प्रश्रय देनेका उपयुक्त समय आ गया है। इस पर प्रयागके "भारत" पत्रने सम्पादकीय अग्रलेख लिखकर हमारी चिकित्सप्रणाली कैसी हो, इस पर प्रकाश डाला है। डा० रायके इस विचारका सम्पादक जीने समर्थन किया है कि सभी राष्ट्रीय सरकारोंका यह दायित्व है कि वे चिकित्साके अपने राष्ट्रीय साधनोंका विकास करें। सम्पादक जीका मत है कि अपने प्राचीन आयुर्वेद चिकित्साविज्ञानको राष्ट्रीय सरकारका पूर्ण प्रश्रय, प्रोत्साहन एवं संरक्षण प्राप्त होना चाहिये। सरकार आयुर्वेदके लिये जो कर रही है उतना ही पर्याप्त नहीं है। आयुर्वेदके उत्थान और उत्कर्षके लिये सरकारको अपने सब साधनोंका उपयोग करना चाहिये। उसे राष्ट्रीय चिकित्सा प्रणालीके रूपमें मान्यता प्रदान करनी चाहिये। उसके लिये अधिकसे अधिक धन व्यय करनेके लिये तैयार रहना चाहिये। आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली शताब्दियोंके पराधीनताकालमें राज्याश्रयसे वञ्चित और उपेक्षित होते हुए भी लाखों नर नारियोंकी सेवा करती रही और यदि अनुसन्धान एवं परीक्षण आदिको समुचित रूपसे प्रोत्साहित किया जाय तो हमें विश्वास है कि वह आधुनिक कालकी आवश्यकताकी बहुत कुछ पूर्ति कर सकती है। प्रत्येक स्वतन्त्र राष्ट्रकी अपनी ऐसी चिकित्सा प्रणाली होनी चाहिये जिस पर वह पूर्ण रूपसे निर्भर कर सके। एलोपैथिक चिकित्सा पद्धतिको अपनाकर हमारा देश आत्मनिर्भर नहीं बन सकता। उसे अनेक बातोंके लिये पश्चिमका मुँह ताकना पड़ेगा। सैकड़ों प्रकारकी औषधियों, पेटण्ट दवाओं, औजारों तथा यन्त्रों आदिके लिये उसे विदेशोंका मुँहताज बना रहना पड़ेगा। इसके विपरीत आयु-र्वेदको पूर्ण रूपसे अपनाकर भारत एक बड़ी सीमा तक स्वावलम्बी बन सकता है। चीनमें पश्चिमी विज्ञानवेत्ता सभी डाक्टरोंके लिये यह अनिवार्य किया जा रहा है कि पुरानी चीनी चिकित्सापद्धतिका सम्यक् ज्ञान प्राप्त करें और देखें कि वह आजके युगकी आवश्यकताकी कहां तक पूर्ति कर सकती है। चीनकी सरकार अपनी देशी चिकित्सा पद्धतिकी उन्नतिके लिये काफी प्रयत्नशील है। किन्तु हमारी राष्ट्रीय सरकार तथा राज्य सरकारोंमें राष्ट्रीय चिकित्सा प्रणालीके प्रति निष्ठा पैदा नहीं हुई है। आयुर्वेदके लिये जो कुछ किया जा रहा है उसके बावजूद उसका स्थान गौण ही बनाकर रखा गया है। उसकी पढ़ाई लिखाई, चिकित्सा औषधि आदि पर अपेक्षाकृत बहुत कम धन खर्च किया जा रहा है। प्रधानता विदेशी चिकित्सा प्रणालीको ही दी जा रही है। इससे राष्ट्रीय स्वाभिमान कैसे जागृत हो सकता है?

देशमें जड़ी बूटियोंकी बहुतायत है। ऐसी दशामें निर्धन भारत देश किसी खर्चीली चिकित्सापद्धतिका भार नहीं उठा सकता। एलोपैथी चिकित्सा तथा दवाओंके अधिक मँहगी होनेके कारण मध्यम तथा निम्न वर्गके लोग तभी उनकी सहायता लेते हैं जब और कोई मार्ग नहीं रह जाता। आयुर्वेदके नुसखे तो घर घर प्रचलित हैं। बहुत सी दवाएँ घरकी स्त्रियां और पुरुष जानते हैं और वे चिकित्साकी शरण लिये बिना काम चला लेते हैं। जब आयुर्वेदके उत्थानका युग था तब इस तरहके घरेलू नुसखों एवं दवाइयोंका और अधिक प्रचार एवं प्रचलन

था। आयुर्वेदका पुनः उत्कर्ष और विकास हुआ तो चिकित्सा बहुत सस्तेमें हो सकेगी। बहुत सी दवाइयां तो पेड़ पौधोंकी पत्तियों, छालों, जड़ों और फूलोंसे प्राप्त हो जायँगी। आजकल चिकित्साकी मदमें विदेशोंको जाने वाला बहुतसा धन सचमुच ही बचाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त आयुर्वेदकी औषधियां तथा उसके निदान भारतीयोंकी प्रकृति एवं जलवायुके अधिक अनुकूल पड़ेंगे। इन सब बातोंके कारण हम चाहेंगे कि स्वतन्त्र भारतमें आयुर्वेद पर ही सर्वाधिक ध्यान दिया जाय और उसका विकास तन-मन-धनके साथ किया जाय। जब हमारे अनेक मन्त्री और नेता ऐसा मत और अनुभव रखते हैं तो कोई कारण नहीं कि हम आँख मूंदकर पश्चिमी चिकित्सा प्रणालीसे चिपके रहें। आधुनिक विज्ञानकी सहायता और साधनासे आयुर्वेदको सब तरहसे पूर्ण बनाया जा सकता है।"

भारत सम्पादकको धन्यवाद है कि ऐसे आवश्यक कर्तव्यकी ओर उसने सरकार और जनताका ध्यान आकर्षित किया है। आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये सरकारकी ओरसे न पूरा तन, न पूरा मन और न पूरा धन लगाया जाता है। किसी तरह बेमन कुछ देता रहता है। यदि सरकार चाहे तो आयुर्वेदके कामको विकास योजनाके अन्तर्गत लेकर तेजीसे उन्नति कर सकती है। केन्द्रमें एक मेडिकल आयुर्वेदिक कौंसिलकी स्थापना हो, आयुर्वेदके मन्त्री स्वतन्त्र हों और आयुर्वेदके डाइरेक्टर आदि भी स्वतन्त्र हों, तब आयुर्वेदके विकासकी योजना अच्छी तरह चल सकती है।

चित्रकूटमें स्वास्थ्य केन्द्र—कर्वी और चित्रकूटके लोगोंमें इस समय इस बातकी चर्चा चल रही है कि चित्रकूटमें एक पर्यटक केन्द्र खोला जाय। अवश्य ही चित्रकूटकी उन्नतिके लिये और यात्रियोंकी सुख सुविधाके लिये ऐसा केन्द्र खुलना चाहिये। किन्तु हम चित्रकूटकी जनताका ध्यान एक ऐसी आवश्यकताकी ओर भी खींचना चाहते हैं जिससे चित्रकूट और विन्ध्य पर्वतमालाके स्वास्थ्यप्रद जलवायुका उपयोग किया जा सके और आरोग्य रक्षण चाहने वाले लोगोंका ध्यान चित्रकूटकी ओर आकर्षित हो। चित्रकूटके आस पास एक सेनीटोरियम खोलनेकी कल्पना २५ तीस वर्षोंसे कुछ लोगोंके मस्तिष्कमें चल रही है। स्वर्गीय सेठ जानकीप्रसादजीसे हमारी अनेक बार बातचीत हुई है। उनके साथ हमने और कर्वीके वैद्यराज पण्डित नारायणदत्त जी और राजापुरके वैद्यराज पण्डित मोहनलाल जीने अनेक स्थानोंका निरीक्षण किया था। अन्तमें कर्वीसे मन्दाकिनीके उस पार नदीसे लगी हुई भूमिको पसन्द किया गया था। सेठ जानकीप्रसाद जीके सुपुत्र सेठ मूलचन्द्र जीने भी इसके सम्बन्धमें अनेक बार उद्योग किया है। यहां तक कि कई वर्ष पहले इस सम्बन्धमें कई सभाएँ हुईं और एक समिति भी इसके लिये बन गयी थी। इस समितिका उद्देश था कि नदी किनारे एक जमीनके घेरेमें बगीचा रहे और उसके चारों ओर कुछ भवन बनाये जायँ जिनमें भारतके भिन्न भिन्न प्रान्तोंसे आकर लोग अपना स्वास्थ्य सुधारनेका प्रयत्न करें। साथमें एक औषधालय रहे और लोगोंको स्वास्थ्य सम्बन्धी परामर्श देनेके लिये वैद्योंकी नियुक्ति रहे। कर्वीमें इस कार्यके लिये उत्सुकता थी; किन्तु कुछ सरकार सम्पर्कीय व्यक्तियों ने लोगोंको यह कहकर भ्रममें डाल दिया कि यहां ऐसा केन्द्र रहनेसे लोगोंके स्वास्थ्यमें खतरा उत्पन्न होगा। यह तो तब हो सकता है जब उड़ने वाली और संक्रामक बीमारियोंके रोगी वहां रहें। आराम चाहने और अच्छे जलवायुमें रहकर स्वास्थ्य सुधारने वालोंके कारण बस्तीके लोगोंके स्वास्थ्य पर असर कदापि नहीं पड़ सकता। यदि सेठ मूलचन्दजी और पं० नारायणदत्त जी तथा अरविन्द फार्मसीके गुप्ता जी, बाबू बलदेवप्रसाद गुप्त जी एवं पण्डित मोहनलाल जी उद्योग करें तो अपना भी नाम अमर कर लेंगे और चित्रकूटकी महिमा बढ़ाने वाले एक

कार्यकी सिद्धि भी हो जायगी। धार्मिक जनताके अतिरिक्त स्वास्थ्य और मनोरञ्जन चाहने वालोंके लिये भी चित्रकूट एक आकर्षक केन्द्र बन जायगा।

आयुर्वैदिक औषधियोंका निर्माण--

स्वार्थ और हितकी बात सुननेमें भी सुखकर होती है। माननीय डाक्टर सम्पूर्णानन्द जीने लखनऊमें केन्द्रीय औषधि अनुसन्धान संस्थानमें भारतीय औषधि निर्माता कांग्रेसके ११ वें अधिवेशनका उद्घाटन करते हुए कुछ मधुर बातें कही हैं। आपने सुझाव दिया है कि शुद्ध कच्चे मालकी प्राप्तिके लिये औषधि फर्मोंमें कृषि की जाय। औषधि निर्माणमें लगी हुई कम्पनियोंको चाहिये कि वे निजी या सहकारी आधार पर अनुसन्धान विभागों की स्थापना करें। बात अच्छी है; किन्तु कितने फर्म ऐसे हैं जिनके पास खेतीके लायक पर्याप्त भूमि होगी? सहकारी आधार पर अनुसन्धान विभाग भी खोलना अच्छा काम है; किन्तु इस इतिहास पर प्रकाश पड़ने पर ऐसे कामके लिये विशेष प्रोत्साहन मिलेगा कि भारतमें एलोपैथी सम्बन्धी अनुसन्धानकी कितनी संस्थाएँ हैं; जिन्होंने सरकारी बल पर नहीं बल्कि सहयोग और सहकारी बल पर स्थापित होकर उन्नति की है?

डाक्टर सम्पूर्णानन्द जीने यह समयोपयोगी सुझाव दिया है कि व्योमयात्रामें उपयोगी होने वाली औषधियोंका निर्माण करें। हमारी समझमें भारतीय औषधि निर्माताओंको उचित है कि वे मिलकर एक समिति ऐसी बनावें जो इस प्रकारकी जानकारी संग्रह करे कि व्योम मण्डलकी कितनी ऊँचाईमें वायुकी कैसी स्थिति रहती है और उसका व्योम यात्रियोंके शरीर पर कैसा प्रभाव पड़ता है। उसके अनुसार कौन कौन सी दवा बनायी जा सकती हैं जो यात्रियोंके लिये शारीरिक और मानसिक दृष्टिसे अनुकूल पड़ें। डाक्टर सम्पूर्णानन्द जीका यह सुझाव भी उचित और समयोपयोगी है कि आयुर्वैदिक और एलोपैथिक औषधियोंके बीच जो खाईं है, उसे दूर किया जाय। हमारी समझमें इसके लिये सरकारको भी व्यापक दृष्टिकोण अपनाना पड़ेगा। जनता, सरकार, औषधि निर्माता सबका लक्ष्य आयुर्वेद पर केन्द्रित हो तभी इसमें सफलता हो सकती है। सरकारकी जितनी सहायता एलोपैथीके लिये होती है वह परिमित हो, सरकार एलोपैथीके मोहको भी सीमाबद्ध करे। एलोपैथीके जितने कालेज जिस हैसियतके हैं उतने और उसी हैसियतके आयुर्वैदिककालेज तुरन्त स्थापित किये जायँ। जितने अस्पताल, सेनीटोरियम, अनुसन्धानशाला एलोपैथीमें हैं उनमें अब रुकावट पड़े और तुरन्त आयुर्वैदिक संस्थानोंकी वृद्धि हो। डाक्टरीके लिये जैसे भवन, वेतन और अन्य सुविधाएँ दी जाती हैं उन पर पुनर्विचार हो और उनका मान निर्धारण आयुर्वैदिक वेतन, भवन और सुविधाओंके दृष्टिकोणसे हो। भारतीय औषधि निर्माताओंका यह आवश्यक कर्तव्य है कि वे अधिक और बड़े पैमाने पर आयुर्वैदिक औषधियोंका निर्माण करें। सरकारका यह भी कर्तव्य है कि औषधिविज्ञानके विकासको प्रोत्साहन दे, जिससे प्राचीन परम्पराका विकास और विस्तार हो और जो ज्ञान लुप्त और कुण्ठित हो चुका है उसका प्रवाह प्रबल वेगसे प्रवाहित हो। जो अंश आजके युगसे मेल नहीं खाता, उसकी जांच होनी चाहिये और उसके कारणों पर विचार युगकी मांग और युगके प्रवाहके अनुकूल ढङ्गसे अपनाया जाय। जिन औषधियों पर जनताका विश्वास है और जो उच्च श्रेणीका लाभ पहुँचाती हैं, उन्हें शुद्ध और यथार्थ रूपसे तैयार करने पर सचाईके साथ ध्यान रखा जाय। डाक्टर सम्पूर्णानन्द जीने इस सत्यको प्रकट कर देशका उपकार किया है कि 'हमारे राजनैतिक अतीतका यह एक कुप्रभाव शेष रह गया है कि भारतीय औषधोंके प्रति एक विरोधी भावनासे काम लिया जाता है तथा न केवल साधारण लोग बल्कि डाक्टर भी भारतमें बनी औषधोंके स्थान पर अधिक मँहगी विदेशी दवाओंको पसन्द करते हैं। इस स्थितिको बदलना चाहिये।" हमारी समझमें यदि

हमारे देशकी केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारें चीनके समान दोनों प्रकारके चिकित्सकोंके सहयोगके लिये तत्पर करें तो इस प्रवृत्तिमें तुरन्त सुधार हो सकता है। सुना है कि इसके साथ एक अन्य अधिवेशन भी होने वाला है जिसमें आयुर्वैदिक औषधियोंका मान निर्धारण करने पर विचार किया जायगा। आशा है वह कार्य भी आयुर्वैदिक उन्नतिके दृष्टिकोणके अनुसार होगा।

देशी राज्य चिकित्सा परिषद——सभी प्रान्तोंके मेडिसिन बोर्ड अध्यक्षोंका सम्मेलन कुछ दिन पहले कलकत्तेमें हुआ था। केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्री डा० परशुराम करमरकर जीने उद्घाटन भाषणमें कहा कि भारतीय आयुर्वेद जनसाधारणकी सेवा करता आ रहा है। राज्य सरकारोंका कर्तव्य है कि किसी भी चिकित्सा प्रणालीको अपनावें और विकसित करें। केन्द्रीय सरकार उनके द्वारा अपनायी हुई प्रणालीको ही सहायता पहुँचावेगी। जो अधिक सस्ती हो और जिसे जनता चाहती हो उसे ही प्रान्तीय सरकारोंको अपनाना चाहिये। ग्रामीण क्षेत्रोंमें प्रशिक्षित डाक्टरोंकी संख्या कम है, वहां आयुर्वैदिक प्रणाली अधिक लोकप्रिय है। चिकित्सकोंको संयम पर अधिक ध्यान देना चाहिये। पांच हजार वर्ष पहलेसे भी भारतमें आयुर्वेद रोगियोंको रोग मुक्त करने और स्वस्थोंको स्वस्थ और दीर्घजीवी बनानेका काम कर रहा है। आजकल भी लोग पेनसलीनकी पिचकारी लगानेकी अपेक्षा आयुर्वैदिक उपचार ही पसन्द करते हैं। भारतके जनसाधारणका कल्याण आयुर्वेद चिकित्साके द्वारा ही हो सकता है। इस सम्मेलन या कनवेंशनके सभापति आन्ध्र चिकित्सा बोर्डके अध्यक्ष भिषग्रत्न डाक्टर ए० लक्ष्मीपतिम होदय हुए थे। आपने आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणालीके प्रचार और प्रसारकी उपयोगिता बतलायी और कहा कि ऐसे अधिवेशनों के द्वारा आयुर्वेदको जनप्रिय बनाया जा सकता है। एलोपैथीके कालेजोंकी स्थापनाकी आपने आलोचना की। सभी प्रान्तोंके आयुर्वेदकालेज मेडिकलकालेजके मुकाबले नगण्य हैं। सरकारको आयुर्वेदके विकासके लिये अधिक प्रयत्नशील होना चाहिये। यदि हम अपनी सभ्यता और संस्कृतिकी उन्नति चाहते हैं, तो हमें आयुर्वेद और यूनानीको अधिक जनप्रिय बनाना होगा। परिषदके मन्त्री दिल्लीके कविराज आशुतोष मजूमदारने वार्षिक रिपोर्ट सुनायी और आयुर्वेदकी उपयोगिताका वर्णन कर उसके प्रचारकी आवश्यकता बतलायी। उत्तरप्रदेशीय मुख्य मन्त्री माननीय डाक्टर सम्पूर्णानन्दजीकी अध्यक्षतामें आयुर्वेदका जो पाठ्यक्रम बनाया गया है, उसे कुछ संशोधनके बाद इस कनवेनशमने स्वीकार किया और आयुर्वेदाचार्यकी उपाधि भी स्वीकार की। सम्भवतः इसका एक अधिवेशन आयुर्वेद महासम्मेलनके समय दिल्लीमें भी हो। यह अच्छी बात होगी; क्योंकि उस अवसर पर अखिल भारतीय वैद्योंके सम्पर्कसे बहुत सी उचित बातों पर विचार हो सकेगा।

पंजाब प्रान्तीय आयुर्वेदसम्मेलन—पञ्जाब प्रान्तीय वैद्यसम्मेलन भूतपूर्व उपस्वास्थ्य मन्त्री पण्डित देवकीनन्दन शर्मा एम० एल० ए० की अध्यक्षतामें हो गया। इसका उद्घाटन महाराज प्रफुल्लचन्द्र मुंजदेव एम० पी० ने संस्कृत और हिन्दी भाषण द्वारा किया। आपने आयुर्वेदमें श्रद्धा प्रकट करते हुए पूर्ण वैज्ञानिक कहा। वेदोंमें प्रतिपादित होनेके कारण आयुर्वेद श्रद्धाका भाजन है। सरकारका कर्तव्य है कि जनताके हितकी दृष्टिसे आयुर्वेदको प्रोत्साहित करे। आयुर्वेदमें अनुसन्धान कर "खेचरी गुटिका" जैसी चमत्कारिक औषधियोंका पुनरुद्धार होना चाहिये। आयुर्वेदकी विविध औषधियों और हस्तलिखित ग्रन्थोंकी प्रदर्शिनीमें देखकर मुझे प्रसन्नता हुई है। अध्यक्ष महोदयने आश्वासन दिया कि मैं सदाकी भांति आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये प्रयत्नशील रहूँगा। सरकारने वैद्योंको एलोपैथी द्रव्योंका प्रयोग न करनेका जो आदेश निकाला है वह निन्दनीय है। आधुनिक विज्ञानसे सभीको लाभ उठानेका हक है। गावोंमें एक ही चिकित्सकको सभी

पैथियोंके उपयोगकी आवश्यकता पड़ती है। वैद्योंको उचित है कि अपने शास्त्रमें भरी हुई अनेक औषधियोंकी खोज करें। आजका उत्साह देखकर आशा होती है कि पञ्जाबमें आयुर्वेदकी उन्नति तेजीके साथ होगी। जालन्धर आयुर्वेदकालेजके प्रिंसपल कविराज सतीशचन्द्र वसुकी अध्यक्षतामें आयुर्वेदशास्त्र चर्चा परिषद और लुधियानाके आयुर्वेदाचार्य पण्डित वेणीप्रसाद शास्त्री बी० ए० की अध्यक्षतामें अनुभूत प्रयोगोंकी भी चर्चा हुई। प्रस्तावों द्वारा सरकारसे आग्रह किया गया कि आयुर्वेदकी उन्नति, विकास और प्रसारका कार्य ठोस कदम उठाकर करे। यह भी आग्रह किया गया कि आयुर्वैदिक कालेजोंमें आयुर्वेदकी उच्च शिक्षा दी जावे। आयुर्वेदकी मदमें अच्छी रकम रखी जावे। अफीमका प्रतिबन्ध वैद्योंसे उठा दिया जावे और बीमाके काममें परीक्षण का काम वैद्योंसे भी लिया जावे।

वर्ष भरके लिये अध्यक्ष—पं० देवकीनन्दनशर्मा वैद्य एम० एल० ए० नारनौन
उपाध्यक्ष—श्री ज्ञानचन्द जी वैद्यवाचस्पति अमृतसर
तथा श्री रामस्वरूपशर्मा जिला फीरोजपुर
प्रधानमन्त्री—श्री मदनमोहन पाठक आयुर्वेदाचार्य अमृतसर

आचार्य नित्यानन्द सारस्वतका भाषण

पिछले अङ्कमें हमने राजस्थान प्रदेश वैद्यसम्मेलनके चतुर्दश अधिवेशनका वर्णन दिया है। उसके सभापति विद्वान आचार्य पण्डित नित्यानन्द सारस्वतके महत्वपूर्ण भाषणका सारांश आज दे रहे हैं। पूरा भाषण डिमाई अठपेजीके २२ पृष्ठोंमें है—

वैदिक आयुर्वेद--

आरम्भमें आपने रतनगढ़के विद्यार्थी रहने और अब वहीं सभापति होनेका जिक्र कर आवश्यक नम्रता प्रकट की है और रतनगढ़की विशेषताका वर्णन किया है। वैदिक आयुर्वेद प्रकरणको विद्वत्तापूर्ण विवेचनके साथ लिखते हुए आपने वेदोंमें अनेक प्रकारकी चिकित्साविधियोंका दिग्दर्शन कराया है। वेदकी विविध चिकित्सा पद्धतियों पर सूक्ष्म विचारसे ज्ञात होता है कि वेद इनके द्वारा मनुष्यको स्थूलसे सूक्ष्म तत्व तक ले जा रहा है। सच्चे धर्मको यही अभीष्ट है कि वह मनुष्योंको स्थूलकी अपेक्षा सूक्ष्म शक्तियोंके विषयमें अधिक प्रेम उत्पन्न करे। प्रसिद्ध पाश्चात्य विचारक गिव्सनका कथन है कि वेदके शौर्य-वीर्य युक्त ओजस्वी समयमें जो शरीरका वैद्य होता था वह मनका भी चिकित्सक हुआ करता था। सभी वेदोंमें आयुर्वेदका विषय विद्यमान है; किन्तु अथर्ववेदमें इतनी सामग्री है कि इस वेदका नाम ही प्राचीनकालमें "भेषजवेद" पड़ गया था। अथर्ववेदको अर्वाचीन मानना भूल होगी। वास्तवमें चारों वेदोंके मन्त्र समकालीन हैं। चारों वेदोंके मन्त्र स्वतन्त्र रूपसे पठन-पाठन और यज्ञादि कार्योंमें प्रयुक्त होते थे। संहिताओंके रूपमें विभाजनका कार्य मन्त्रार्थोंके विशेषज्ञ अथर्वा ऋषिने किया। वेदोंको नित्य और शाश्वत ज्ञानका भण्डार न मानने वाले व्यक्तियोंसे भी मेरा निवेदन है कि वे आयुर्वेदविकासके दृष्टिकोणसे ही अथर्ववेदका मनन करें तो उनके ज्ञानमें वृद्धि अवश्य होगी। औषधियोंके उपयोगकी अनेक कल्पनाओंका अस्तित्व वेदोंमें है। ऋग्वेदमें लिखा है कि औषधियां रातमें भी बढ़ती हैं और पूर्ण सारवाली होती हैं।

पूर्ण सारवत्ता होने पर ही उनको उपयोगमें लाना चाहिये (ऋग्वेद १०।१२७।३) अथर्ववेद (१।२४।१) में लिखा है औषधियां सृष्टिके पहले परमेश्वरकी नित्य शक्तिसे अपना पोषण ग्रहण करती हैं और प्रयत्नके बाद सृष्टिके आरम्भमें प्रकाशित होती हैं। आगे लिखा है (अथर्ववेद १।३८।१) कि इन औषधियोंको हिम वाले पर्वतोंसे निकली हुई नदियां पर्याप्त जलसे पुष्ट करती है। (अथर्ववेद २।८।३) में लिखा है कि रस आदिसे पुष्ट औषधियां असंख्य होती हैं और उनका विधिपूर्वक शास्त्रीय और प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त करने वाले सैकड़ों वैद्य हैं। (अथर्ववेद ८।७।१४) में लिखा है कि औषधियां पर्वतीय प्रदेशोंमें होती हैं और जल-वायु-अग्निके समयोग होने पर रोगशामक होती हैं। (अथर्ववेद ८।१०।२) में लिखा है कि औषधियां वर्ष भरकी विभिन्न ऋतुओंमें अपनी प्रकृतिके अनुसार उगती रहती हैं और उनके खण्डित अंश अगले वर्ष फिर बढ़ जाते हैं। (अथर्ववेद ६।१०६।३) में लिखा है जो औषधियां पर्वतों आदि पर प्रकृतिके द्वारा प्रचुर परिमाणमें नहीं होतीं उनको विधिपूर्वक बोना चाहिये। (अथर्ववेद ४।७।५) से मालूम पड़ता है कि औषधियोंकी वपन क्रिया बहुत बड़ी तादादमें होती थी और उन्हें कुदालसे खोदकर इकट्ठा किया जाता था। (अथर्ववेद ४।७।६) से यह भी मालूम पड़ता है कि एकत्रित औषधियोंको दूसरी दिशाओंमें जाकर बेचने और तत्प्रदेशीय औषधियोंको खरीदकर लानेकी व्यवस्था थी। निश्चय ही यातायात सूखी औषधियोंका होता होगा। बड़ी औषधियोंको नीचे तक खोदकर उनकी जड़ ली जाती थी (अथर्ववेद १।३८।३)। किन्तु औषधियोंका पत्र-पुष्प-फल-मूल-छाल आदि पञ्चांग लिया जाता था (अथर्ववेद ११।६।१५) पूर्ण पाक होने पर औषधियोंका स्वरस निकाला जाता था। यह बात सामवेदके उत्तरार्चिक प्रपाठक ३ अर्ध प्रपाठक १ ऋचा २२ से प्रकट है। सामान्यतया यह स्वरस हरी औषधियोंको पत्थरसे कूटकर निकाला जाता था। फिर स्वरसको सुवर्णके पात्रमें छानते थे। जिससे छाननेसे वह शुद्ध और स्वच्छ होता था। फिर स्वरसके भारी होनेसे वह बलवान व्यक्तिको पिलाया जाता था (ऋग्वेद ८।१।१२)। ऋग्वेदके ८।१७।४।६ मन्त्रसे सिद्ध है कि स्वरस पानसे शरीर नीरोग होकर पुष्ट होता है और हृदयकी शक्ति बढ़ती है गीली औषधियोंको पीसकर उनका "कल्क" बनाया जाता था (अथर्व ४।३।७) सूखी औषधिके सार पदार्थको ग्रहण करनेके लिये उसे ओखली जैसे पात्रमें भरकर कूटा करते थे (अथर्व २।२५।१) औषधियोंका पहला स्वरस अत्यन्त पोषक, वृष्य और भारी होनेसे केवल बलवान प्रकृतिके मनुष्य ही पी सकते थे। किन्तु उससे हीनवीर्य द्वितीय शृतक्वाथ अन्य लोग भी पीते थे (अथर्व ४।४।५)। औषधियोंको बटलोई जैसे पात्रमें पकाकर क्वाथ किया जाता था (अथर्व २०।१३५।३)। औषधिके रसको पात्रमें रख सुशीतल करनेके लिये उसे बहुत देर तक बढ़िया आसन पर रखा जाता था (सामवेद पू० २।७।५)।

ज्वरादि रोग और शल्य तन्त्र—

औषधियोंके अतिरिक्त अथर्ववेदमें कितने ही रोगों का भी उल्लेख है। ज्वरके लक्षण भी मिलते हैं। ज्वरके बाद शरीरमें पीलापन आ जानेका भी उल्लेख है। ऋतु परिवर्तनमें ज्वर आनेका जिक्र है। कैसे स्थानोंमें और कैसे लोगोंमें ज्वरोंका जोर होता है, यह भी बतलाया गया है ज्वरके रोगी शरीरमें एक प्रकारके विषके संञ्चित होनेका भी उल्लेख है। मांस भक्षियोंमें ज्वर अधिक होता है। शीत पूर्वक आने वाले मैलेरियाका नाम "तक्मन" लिखा है। हड़हड़ाकर जाड़ा देकर आने वाले ज्वरको "हुडु" कहा गया है। प्रतिदिन आने वाले ज्वरको "सदान्दि" या 'अन्येद्युष्क' नाम दिया गया है। दूसरे दिन आने वाले अन्तराको "उभयद्यु:" तीसरे दिन आने वाले ज्वरको तृतीयक, चौथे दिन आने वालेको वितृतीयक कहा गया है। "शोकज्वर" का भी वर्णन है और ग्रीष्मज, वर्षाजन्य और शरदऋतुके ज्वरोंका उल्लेख है। पित्तज्वरको "रूर" कहा गया है। फसली बुखारोंकी रुकावटके लिये घरके आसपासके पानीकी रुकावट, कीचड़, सील, घासफूस हटानेका उल्लेख है। कहा गया है कि ज्वरका ताप प्राणधारक तत्वको जला देता है; अतः ऐसे

ज्वरोंमें जलका उपयोग अधिक करना चाहिये। ज्वर वाले प्रदेशको यज्ञ हवन आदिसे शुद्ध रखे। विरेचन आदिसे शरीरको शुद्ध रखे, खानपानमें संयम रखे, हलकी वस्तुएँ, शाक और "सोम" का प्रयोग करे। हड्डी टूटने, मांस पेशी हटने, त्वचाके छिन्न भिन्न होने आदि पर शल्य तन्त्रके उपयोगका जिक्र भी कहा गया है कि समुचित आयुके आदमियोंकी स्थानभ्रष्ट हड्डियां बैठा देनेसे कुछ दिनोंमें आप ही जुड़ जाती हैं। पाषाण अथवा शस्त्राघातसे अस्थिभङ्ग होने पर दोनों टुकड़ोंको जोड़कर चलने योग्य बना दिया जाता था। हड्डी जोड़नेकी तरकीब भी लिखी हुई है। दवा लगाकर पट्टी बांधने और "रोहिणी" के अनुसन्धानका भी जिक्र है। यथावश्यक खानेकी औषधिके साथ छेदन-भेदनका भी प्रयोग बतलाया गया है (अथर्व ७।७४ ३)। उचित रक्तसञ्चार न होने पर और विकृत रक्त निकालने के लिये रक्त बाहर निकालनेकी व्यवस्था होती थी (१।१७।२)। सिरा और धमनियोंसे रक्त निकालने और उचित रक्त निकालनेके बाद रोकनेकी विधि भी थी। अन्य विधियोंसे रक्तमोक्षण विधिको अधिक महत्व दिया गया है। रुके हुए पेशाबको निकालने और तेजीसे वेगके साथ निकलनेका जिक्र (अथर्व १।३।८) में है। घाव अच्छा होने पर जो काले रङ्गका चमड़ा हो जाता था उसका भी उपाय होता था। वेदोंमें चिकित्सा सम्बन्धी जो साहित्य बिखरा पड़ा है उसका संग्रह संहिताकालके बीचकी कड़ी जोड़नेमें सहायक हो सकता है। वैदिक आयुर्वेदका अनुसन्धान कराना सरकारके लिये भी आवश्यक है।

आयुर्वेदका नवसन्देश—आयुर्वेदमें दीर्घ-जीवन और रोग निवृत्तिके अनेक दिव्य सूत्र भरे पड़े हैं। जो नवीन भाष्यकी अपेक्षा रखते हैं। जिससे आधुनिकविज्ञानकी कसौटी वाले भी दांतों तले अंगुली दबावें। यह नवसन्देश पञ्चशीलके समान अनुपम सन्देश होगा। कची दवाएँ भारतमें सुलभ हैं। महर्षि चरकके अनुसार चिकित्सा करना निरुपद्रव है। उग्रवीर्य औषधिसे उपद्रव सम्भव होते हैं। पारद-गन्धकके योग, कज्जली, पर्पटी, चन्द्रोदय आदिको एलोपैथीकी कसौटीसे नहीं बल्कि आयुर्वैदिक दृष्टिकोणसे देखना चाहिये। "आधुनिक" तथा "वैज्ञानिक" शब्दोंकी आड़में आयुर्वेदके साथ छल नहीं करना चाहिये। इस समय आयुर्वेद बड़ी कठिन परिस्थितिसे गुजर रहा है। भारतीय स्वास्थ्य मन्त्रालय एलोपैथीको मान्यता देता है। स्वास्थ्य कर्मचारियोंका अभाव बताया जाता है; किन्तु आयुर्वेदज्ञोंसे उसकी पूर्ति नहीं की जाती। ३० से ५० हजार व्यक्तियों पर एक डाक्टरका औसत आता है। आयुर्वेद और आयुर्वेदज्ञोंको अपनानेसे यह स्थिति बदल सकती है। द्वितीय पञ्चवर्षीय योजनामें २६७ करोड़ रुपये स्वास्थ्य साधनोंके लिये रखे गये हैं; किन्तु ७ करोड़ रुपयोंमें ही आयुर्वेद, यूनानी, होमियोपैथी और प्राकृतिक चिकित्साके आंसू पोंछे जायँगे और अकेली एलोपैथी पर २६० करोड़ रुपयोंका खर्च होगा। एलोपैथीके लिये तो और भी कितने ही देश सहायक हैं। यहांकी सरकार यदि आयुर्वेदकी ओर अधिक ध्यान दे तो समुचित कहा जायगा। आयुर्वेदके लिये कमेटियां और समितियां बनती हैं। उनमें पाश्चात्य चिकित्सक ही रखे जाते हैं और विचार होता है आयुर्वेद पर। तो भी कोई कमेटी जीती मक्खी नहीं निगल सकी। उन्हें न्यूनाधिक रूपमें आयुर्वेदका पक्ष पोषण करना पड़ा है चोपड़ा समितिको कहना पड़ा है कि भारतवर्षमें देशी चिकित्साका अभी तक बहुत प्रचार है। जनताके बहुत बड़े अङ्ग और विभिन्न श्रेणियोंकी ओरसे इसकी विशेष मांग है। आयुर्वेद केवल एक मौलिक चिकित्सा ही नहीं चिकित्सा सम्बन्धी सिद्धान्तों एवं क्रियाओंका एक सुसम्पन्न संग्रहालय भी है। जो साधारणतया आधुनिकविज्ञान और विशेषतया चिकित्साशास्त्रके लिये बहुमूल्य सिद्ध हो सकता है। परन्तु इन सम्मतियोंके अनुसार प्रत्यक्ष कार्यवाही तो होती नहीं, सन् १९२१ से १९५८ तक कमेटियोंका ही तांता लगाया जा रहा है। दवे कमेटीके खतम होते न होते हालमें उडूपा कमेटीकी स्थापना हुई है। कमेटियोंसे हम ऊब गये हैं, सरकार यह खिलवाड़ बन्द करदे। आयुर्वेदके लिये सहानुभूति और ठोस कार्य चाहिये। यह तब तक नहीं होगा जब तक **आयुर्वेदका**

स्वतन्त्र मन्त्रालय स्थापित न हो। एलोपैथ मन्त्रियों से आयुर्वेदका हित होना असम्भव प्राय है। केन्द्र ही नहीं प्रदेशोंमें भी स्वतन्त्र आयुर्वेदिक मन्त्रालय और डाइरेक्टरकी नियुक्ति होनी चाहिये। भिन्न भिन्न प्रान्तोंमें भिन्न भिन्न रूपोंमें आयुर्वेदके काम हो रहे हैं। राजस्थान सरकारने भी अष्टांग आयुर्वेद महाविद्यालय (अष्टाङ्गमें तो केवल चिकित्सा है, अन्य विषयोंके लिये तो षोड़शांग कहना पड़ेगा। सम्पादक) बनानेकी योजना स्वीकृत करली है। जयपुर एवं उदयपुरके आयुर्वेदकालेजोंको भिषगाचार्य परीक्षाके साधन और उपकर्मोंसे सम्पन्न बनाया जा रहा है। इसके अतिरिक्त धात्री, उपवैद्य, प्रशिक्षणार्थ एक वर्षीय कोर्स उदयपुरमें तथा एक वर्षीय रिफ्रेसर कोर्स सरदारशहरमें चालू है। उदयपुरमें स्नायुक और बाल पक्षाघात आदि पर अनुसन्धान चल रहा है। राजस्थानमें १४ ए० श्रेणीके चिकित्सालय, १०३ बी० श्रेणीके और ५०६ सी० श्रेणीके चिकित्सालय चल रहे हैं। दो वर्षोंमें २०० औषधालय और खुले। डूँगरपुर, प्रतापगढ़, सुवाना आदिमें चिकित्सा शिविर कमिश्नरी वैद्यसभाके सहयोगसे सम्पन्न हुए हैं। सम्मेलनको अगले दो वर्षोंमें स्वस्थवृत्त और सद्वृत्त प्रचारके लक्ष्यको पूरा करते हुए राज्य सरकार और मार्ड्रन बोर्डको परामर्श देते रहना चाहिये। जिससे सदियोंसे उपेक्षित आयुर्वेद न्यायोचित स्थान प्राप्त कर सकेगा।

समान पाठ्यक्रम—सम्पूर्ण देशके लिये आयुर्वेदका पाठ्यक्रम एक समान होना चाहिये। इस समय कहीं विशुद्ध आयुर्वेद रखकर आधुनिक विषयोंसे छात्रोंको अनभिज्ञ रखा जाकर कूप मण्डूक बनाया जाता है। कहीं एलोपैथीकी पुरानी बातें सिखाकर आयुर्वेदकी मुहर लगायी जाती है। कहीं साढ़े तीन वर्षमें ही "आयुर्वेद निष्णात" बना दिया जाता है। कहींका पाठ्यक्रम इतना भारी है कि छः वर्षमें भी पूरा नहीं होता। हमें मध्यम मार्ग अपनाकर ध्यान रखना होगा कि प्रारम्भिक वर्षोंमें छात्रोंमें आयुर्वेदीय संस्कार रूढ़मूल हों। उसके बाद दूसरी चिकित्सा शैलियोंकी विशेषताओंसे परिचित किया जाय। शल्य-शालाक्य और प्रसूतितन्त्रका सामान्य ज्ञान तो अनिवार्य हो; परन्तु विशेष ज्ञानके लिये कोई वैकल्पिक रूप लिया जाना चाहिये। नये छात्रोंके हाथमें सिद्धान्तोंमें परस्पर विरोधी प्राचीन और अर्वाचीन पुस्तकें देना खतरेसे खाली नहीं है। हमें यथासम्भव प्राचीन प्रकरणोंका नवीन विचारधारासे सामञ्जस्य बैठाना चाहिये प्राचीन पुस्तकोंके जिन अंशोंकी हम व्याख्या नहीं कर सकते उन्हें पाठ्यक्रमसे अलग कर देना चाहिये। प्रवेश योग्यताकी परीक्षा शिक्षाविभागको अलगसे लेनी चाहिये। आयुर्वेदप्रवेश पाठ्यक्रमकी परीक्षामें संस्कृतकी प्रथमा और विज्ञान सहित मेट्रिकके उपयुक्त विषयोंको स्थान देना चाहिये। सरकारका कर्तव्य है कि वह भारतव्यापी मनीषी वैद्योंकी परिषद बुलाकर आयुर्वेद शिक्षणको उचित दिशामें आगे बढ़ाने के लिये समस्त भारतके लिये एक पाठ्यक्रम और एक उपाधिकी व्यवस्था करे।

कुष्ठ चिकित्साश्रम—कुष्ठ रोगकी समस्या भारतीयोंके सामने प्रबल रूपमें है। संसारमें जितने कुष्ठ रोगी हैं उनके पंचमांश अकेले भारतमें ही हैं। हिन्दुस्थानके १० लाख कोढ़ियोंको अधिक दिनों तक उपेक्षित और दयनीय दशामें छोड़ना हमारी हृदयहीनता होगी। बिहार, पश्चिमी बङ्गाल, मद्रास और उड़ीसामें कोढ़का अधिक प्रचार है। इसे दूर करनेके लिये वैद्योंकी सहायता प्रमुख रूपसे लेनी चाहिये। क्योंकि आयुर्वेदमें इस रोगका विशद विवेचन है। किन्तु एलोपैथी वाले इस पर कोई निर्णय नहीं दे सके। कुष्ठ रोगियोंको अलग बसानेकी व्यवस्था होनी चाहिये। आरोग्य दृष्टिसे राजस्थान प्रसिद्ध है। बरालोकपुर इटावाके चिकित्सक चूड़ामणि पं० विश्वेश्वर दयालुजी वैद्यराजने कुष्ठ चिकित्साश्रमकी योजना बनायी है और आयुर्वेद विश्वभारती सरदारशहरके श्रीमान् बाबू भँवरलालजी दूगड़ एक कुष्ठाश्रम बनाने जा रहे हैं। भगवान इन्हें सफल करे।

धातुवाद और अनुसन्धान—रसग्रन्थोंमें सोना चांदी बनानेकी प्रक्रिया है। वह चण्डूखानेकी गप नहीं है। अनुभवी और शास्त्रज्ञान वाले मिलकर

गुप्त रखनेकी लालसा न रख इसका पुनरुज्जीवन करें तो अच्छा हो। यदि संस्कृत पारद द्वारा लौह सिद्धि हो जाय तो देह सिद्धि भी अवश्यम्भावी है। सभी लोग आयुर्वेदमें अनुसन्धानकी आवश्यकता बतलाते हैं। आयुर्वेदमें अनुसन्धान बराबर होते रहे हैं। उसका क्रमविकास इसी प्रकार हुआ है। द्रव्यगुणशास्त्रमें रस-गुण-वीर्य-विपाक और प्रभावका गम्भीर वर्णन, भिन्न भिन्न रोगों पर उसकी प्रतिक्रियाका वर्णन अनुसन्धानशालाके अस्तित्वको प्रमाणित करता है प्राचीनकालीन ऋषियोंकी अनुसन्धानशालाएँ थीं। उन्हींके द्वारा निश्चित सिद्धान्त पर विचार विमर्श होता था। चरक संहिता आदिमें ऐसे वादविवादोंका जिक्र है। आर्तत्राण और ज्ञान पिपासाकी शान्तिका प्रयत्न होता था। उनके मुकाबले आजकलके सम्मेलनों पर तरस आता है। आज भी कुछ सरकारी और कुछ गैर सरकारी संस्थाएँ अपनी शक्तिके अनुरूप प्रयत्नशील हैं। हम सबकी सफलता चाहते हैं व्यक्तिगत प्रयत्नसे भी रोगियोंका विवरण, अवस्थानुरूप औषधदान, पथ्य, मूलरोग और उपद्रव, उनके लिये शास्त्रीय या अनुभूत चिकित्सा आदि लिखा जाय तो इस कार्यसे भी अनुसन्धानमें सहायता मिल सकती है। अनुसन्धानका कार्य "करो या मरो" के सिद्धान्तके अनुसार सरकारी और आयुर्वेदिक संस्थाओंको करना चाहिये।

आत्म निरीक्षण—हमारे आन्दोलन उस नशेबाज नाविकके समान हैं जो नावको एक वृक्षसे बँधी रस्सी खोले बिना रात भर खेता रहा और दश बारह मील आगे जानेके बदले उसी जगह पर सबेरे तक रहा। हम वर्षमें एक बार मिलते हैं। प्रस्ताव स्वीकार करते हैं; किन्तु आपसी रागद्वेषके कारण जहांके तहां रहते हैं। हमें आयुर्वेदोन्नति और स्वास्थ्य प्रसारके कार्य सहकारिताके आधार पर प्रारम्भ कर देने चाहिये। जिन रोगियोंको डाक्टर असाध्य कहकर छोड़ दें, उन्हें वैद्योंको मिल जुलकर आराम करना चाहिये। ऐसे रोगियोंका रोगावस्थाका चित्र और आराम होने पर चित्र तथा विवरण रखना चाहिये। इसका फल निःसन्देह शुभ होगा। आयुर्वेदमें अभी तक अनेक जड़ी बूटी और रसद्रव्य सन्दिग्ध अवस्थामें हैं। व्यापारियों द्वारा वैद्योंका शोषण हो रहा है। देशी अशोकके बदले कचनारकी छाल दी जाती है। दशमूल में कुछ ही द्रव्य डालकर दशमूल बनाया जाता है। स्टार्चसे बनाकर गुर्चका सत्व बेचा जाता है। अम्बर नकली आता है। सेरोंकी चीज तोलोंमें मिलती है और उन्हें ही हम उत्तम द्रव्य समझकर काममें लाते हैं। वैद्योंका कर्तव्य है कि रासायनिक परीक्षण द्वारा संदिग्ध निर्णय करें। प्राचीन पीढ़ीके लोग आयुर्वेदसे परिचित हैं; किन्तु नवयुवकोंको हमें आयुर्वेदके प्रति आकृष्ट करना होगा। इसके लिये सम्मेलन द्वारा "स्वास्थ्य परिचय" और "आयुर्वेद सेवक" जैसी परीक्षाएँ प्रचलित होनी चाहिये आयुर्वेदीय विशेषताओंसे युक्त स्वास्थ्य प्रदर्शिनी और शिविर आदिकी आयोजना करनी चाहिये। स्वास्थ्य सम्बन्धी छोटी छोटी पुस्तकों द्वारा भी आयुर्वेदका प्रचार वांछनीय है। हमारे चिकित्सा क्षेत्रमें निस्स्वार्थ सेवाकी भूरि भूरि प्रशंसा है। आज इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है। सन्त विनोबाभावे जैसोंको भी दुःख है कि आजकल चिकित्सकोंने अपने पेशेको जीविकोपार्जनका साधन समझ लिया है। चिकित्सक लोग ऐसे रोगीका उपचार नहीं करते जिससे उन्हें फीस आदि रूपमें धन नहीं मिलता। वैद्योंको उचित है कि वे रोगीकी सेवा निस्स्वार्थ भावसे करें। जब तक हम वर्तमान जनतन्त्रीय ढांचेमें सङ्गठित न होंगे, तब तक हमारी आवाज कोई सुनने वाला नहीं है। अलग अलग संस्थाओं और पदलिप्साका मोह छोड़कर भगवान धन्वन्तरिके नाम पर एक हो जाना चाहिये। जनताके आह्वान द्वारा आयुर्वेदको उसका न्यायोचित स्थान दिलाना चाहिये। सङ्गठित समर्थन या सङ्गठित विरोध द्वारा ही सफलता मिलेगी। समग्र भारतमें आयुर्वेद प्रेमी लोगोंकी संख्या कम नहीं है, वे भगवान धन्वन्तरिकी वाणी विधानसभाओं और संसदकी मोटी दीवारोंको भेदकर राजनीतिज्ञों तक पहुँचा सकेंगे। जय आयुर्वेद।

आयुर्वेदके लिये क़ायदा नहीं सहायता और सहानुभूति चाहिये !

पण्डित जगन्नाथप्रसाद शुक्लके स्थानमें प्रयाग आयुर्वेद प्रचारिणी सभा और इलाहाबाद जिला वैद्यसम्मेलनकी कार्यकारिणीकी सम्मिलित बैठक २८ दिसम्बर ५८ को श्री महादेवप्रसाद पाठक वैद्यके सभापतित्वमें हुई। उसमें इण्डियन मेडिसिन बोर्डके द्वारा प्रकाशित पत्रक पढ़ा गया। जिसके द्वारा मालूम पड़ता है कि सरकार आयुर्वेद और वैद्यों पर कुछ नियन्त्रण रखनेका कायदा बनाना चाहती है। सभाने गम्भीरता पूर्वक इस पर विचार किया। सभाकी सम्मति है कि इस समय आयुर्वेद उत्थानकी प्रथमावस्थामें है। इस समय आयुर्वेदको नियन्त्रणकी अपेक्षा सरकारकी सहायता और सहानुभूतिकी आवश्यकता है। कोई ऐसा कार्य नहीं होना चाहिये, जिससे आयुर्वेदकी उन्नतिमें बाधा उपस्थित हो सके। सभा सरकारको यह भी सूचित कर देना चाहती है कि आयुर्वेदिक वैद्य जनताकी सेवा सहानुभूति और सहायताकी दृष्टिसे कर्तव्य समझ कर करते हैं। वे जो कुछ दवाइयां तैयार करते हैं वह रोगियोंको मुफ्त या बहुत कम दाममें दिया करते हैं। इसलिये उनके इस काममें भी बाधा पड़े ऐसा कोई कायदा नहीं बनना चाहिये।

यह सभा सरकारकी सदिच्छाका स्वागत करते हुए निम्नलिखित प्रार्थना करती है :—

(१) व्यक्तिगत वैद्योंके द्वारा जो निर्माण होता है, वह इतना अल्प है कि उनके कार्यके निरीक्षणके लिये ग्रेजुएट निरीक्षक या इंसपेक्टर रखना सम्भव नहीं है। इसलिये व्यक्तिगत वैद्योंके औषधालयोंके लिये कोई कायदा बनाना इस समय उचित नहीं है।

(२) सरकार इस बातका प्रबन्ध करे तो बहुत उत्तम होगा कि जो जड़ी बूटियां देहातों, जङ्गलों या पर्वतों पर होती हैं, उनका संग्रह कराकर स्टोर खोले, जिससे वैद्योंको ताजी और असली दवा उचित मूल्य पर मिल सके।

३

(३) जो जड़ी, बूटी और खनिज द्रव्य कठिनाईसे मिलते हैं या असलीके अभावमें जो नकली प्राप्त होते हैं; सरकार उनकी खोजकर उनकी उत्पज बढ़ावे, जनता और चिकित्सकोंके लाभके लिये उसे सुलभ करे।

(४) सरकार यह भी कर सकती है कि औषधियोंका निर्माण शास्त्रोक्त पाठके अनुसार हो; परन्तु इसके लिये एक विस्तृत और पूर्ण फर्माकोपिया तैयार करनेकी आवश्यकता है। यह कार्य जरा कठिन भी है। क्योंकि कुछ ऐसी औषधियां भी हैं जिनके अनेक पाठ हैं और हर एक पाठमें कुछ द्रव्योंकी न्यूनता या अधिकता देखी जाती है। इस पाठ भेदके अनुसार उनके गुणोंमें भी कुछ अन्तर देखा जाता है। कोई पाठ किसी रोगमें कोई किसी रोगमें कार्य करता है। ऐसी दशामें एक पाठका निर्धारित होना भी कठिन है।

(५) सरकार समय समय पर औषधि भण्डार, पंसारियोंकी दूकानें और औषधि निर्माणशालाओंमें इस बातका निरीक्षण करा सकती है कि औषधि द्रव्य असली, ताजे और गुणपूर्ण दशामें हैं कि नहीं।

(६) सभाका यह विनीत मत है कि ड्रगसएक्टके नाम पर जो कायदा बना है उसके कारण वैद्योंको औषधि निर्माणके लिये वे द्रव्य भी मिलना कठिन हो रहा है जिनका उपयोग वे वंश परम्परासे करते चले आ रहे हैं। यही नहीं समयकी आवश्यकताके अनुसार वैद्योंको कुछ यूनानी और अन्य कुछ विदेशी औषधि द्रव्य (Rew materials) लेना आवश्यक हो सकता है। परन्तु उसकी प्राप्तिमें बाधा उचित नहीं है।

(७) वैद्य लोग मादक द्रव्य निषेधके समर्थक हैं। किन्तु स्मरण रखना चाहिये कि भांग, अफीम, गांजा, कोचिला आदि द्रव्योंमें ऐसे विशेष गुण

भी पाये जाते हैं जिनका शोधन करनेके पश्चात औषधि निर्माणमें शीघ्र गुणकारी प्रभाव देखनेमें आता है। अतएव ऐसे द्रव्योंकी प्राप्तिमें भी चिकित्सकोंको बाधा नहीं पड़नी चाहिये।

(८) इस सभाका मत है कि जल्दबाजी या भावुकताके वश कोई ऐसा नियन्त्रण या कायदा नहीं होना चाहिये जो आयुर्वैदिक व्यवसायमें बाधक हो।

(९) सभा चाहती है कि सरकार यदि आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये उत्सुक है तो कायदा न बनाकर कुछ निर्देश, कुछ मार्गदर्शक सुझाव और कुछ प्रोत्साहन सम्बन्धी सूत्र प्रकाशित करदे। जिसमें सरकारी सहायताका भी आश्वासन रहे। इसके पश्चात कुछ वर्षोंमें ऐसा समय आ सकता है कि जब कुछ कायदेकी बात सोची जावे।

(१०) यह सभा सरकारसे यह भी निवेदन करती है कि आसव और अरिष्ट आयुर्वेदके प्राचीन निर्माण हैं। इनमें कुछ आसुत-फरमेंटेशन होने पर भी नशा नहीं होता; किन्तु वे अपने टिकाऊपन एवं शीघ्र गुणकारी होनेके कारण बहुत उपयोगी होते हैं। अतः इनके निर्माणके सम्बन्धमें जो नियम बने हैं वह अनुपयोगी हैं। सरकारको उन्हें तुरन्त हटा देना चाहिये।

सभा इण्डियन मेडिसिन बोर्ड और सरकारसे अनुरोध करती है कि इस विषयमें कोई भी कदम उठानेके पूर्व उपरोक्त बातों पर ध्यान पूर्वक विचार करले। सभामें श्री शुक्लजी, श्री रुद्रमणिजी, श्री पं० नरोत्तम मालवीयजी और पाठक जीने अपने विचार प्रकट किये।

बुभुक्षित पारद

मेरे पास कई तोले बुभुक्षित पारद है। जो चन्द्रोदयके निर्माणमें स्वर्णको ऊपर उठा देता है। यदि कोई सज्जन इसे खरीद लें तो मुझे पारदके अनुसन्धान कार्यमें सहायता मिलेगी।

वैद्य गरीबराम अग्रवाल
१०७ ए० रिपनस्ट्रीट
कलकत्ता १६

महाराष्ट्र वैद्यसम्मेलन

स्वागत आदि—महाराष्ट्र प्रान्तका वैद्य-सम्मेलन २५ और २६ दिसम्बरको कोंकण उपप्रान्तके चिपलूण स्थानमें सम्पन्न हुआ। २५ को सवेरे ध्वजवन्दन हुआ। श्री जोशी जीने ध्वज संकेत पर भाषण किया। ८॥ बजे वनस्पति प्रदर्शनका उद्घाटन पण्डित बाबूराव जोशीके अभ्यास पूर्ण भाषणके साथ हुआ। वैद्यराज वेणीमाधव शास्त्री जोशीने सुझाव दिया कि प्रदर्शनमें किसी वनस्पतिका कोई उपयुक्त अङ्ग ही न रखकर पञ्चांग द्वारा सर्वाङ्ग दर्शनकी सुविधा रखनी चाहिये। रुग्णचिकित्सा और दंतचिकित्सा यज्ञ भी हुआ। जिसमें प्रस्ताविक भाषण डा० भा० म० गोखलेका और अध्यक्ष भाषण पण्डित शिवशर्मा जीका हुआ। सोलापुरके वैद्य वागवाडीकरका "आयुर्वेदीय शोध व बोध" विषय पर जानकारीसे पूर्ण भाषण हुआ।

वैद्यक पदवीधर व्यक्तियोंको सरकारी यन्त्रणा द्वारा क्या क्या अड़चनें भोगनी पड़ रही हैं, इसकी चर्चा दोपहरके समय हुई। वेतनकी श्रेणी और मान्यता सम्बन्धी चर्चा भी हुई। वैद्यराज गोगटेने यह दिखलाया कि आयुर्वैदिक चिकित्साकी दृष्टिसे आयुर्वैदिक निदानपद्धतिकी आवश्यकता है। स्वागताध्यक्षा सौ० कुसुमावती वडे डी० ए० एस० एफ० खेड महोदयाने स्वागत भाषणमें कहा कि चिपलून पहले एक बन्दरगाह था। यह भार्गवक्षेत्र है। बड़े बाजीरावपेशवा और उनके भाई चिमणाजी अप्पाके गुरु परमहंस ब्रह्मेन्द्र स्वामी यहीं विराजते थे। अन्न, पानी और वायुके समान ही मनुष्यको आरोग्यकी आवश्यकता है। उस स्वास्थ्य संरक्षणका काम चिकित्सक करते हैं; अतएव वे समाजके आवश्यक प्रमुख अङ्ग हैं। बम्बई राज्यके मेडिकल कौंसिल सेक्रेटरीका आग्रह है कि एम० बी० बी० एस० डाक्टरको ही सरकारको मान्य समझना चाहिये। शेष होमियोपैथ और वैद्योंकी प्रैक्टिस बन्द कर देनी चाहिये। किन्तु डाक्टरीकी बहुमूल्य पेटण्ट दवाइयों द्वारा कितना आर्थिक शोषण जनताका होगा, इसका विचार इन्होंने नहीं किया। ऐसी दशामें वैद्योंको ज्ञानसूर्यके प्रकाश द्वारा जनताके लिये उपयोगी बननेकी आवश्यकता है। आयुर्वेदका ध्येय पैसा नहीं सेवा है।

महामान्य राज्यपालका आगमन--

सम्मेलनमें महामान्य राज्यपाल डा० श्रीप्रकाश जीने पधारकर उसका उद्घाटन किया। आपने अपने स्वर्गीय पिताजी डाक्टर भगवानदास जीकी बीमारीके समयका अनुभव बताते हुए कहा कि अन्य पद्धतिके चिकित्सकोंने दो घण्टेमें उनकी मृत्यु बतायी थी; किन्तु आयुर्वेदीय उपचारसे उसे ८ घण्टे आगे बढ़ाया जा सका। आयुर्वेदमें जो पथ्य पर जोर दिया गया है वह समुचित और सुयोग्य है। परन्तु वैद्योंमें दोष यह है कि अपने अनुभवकी औषधि वे अपने पुत्रको भी बतानेके लिये तैयार नहीं होते; फिर शिष्यकी कौन बात! इस प्रवृत्तिको बदलनेसे आयुर्वेदका अवश्य उत्कर्ष होगा। वैद्योंका सङ्गठन होना आवश्यक है। ज्ञान और अनुभवकी दृष्टिसे वैद्योंकी आवश्यकता है। आयुर्वेद स्वतन्त्र वैद्यक शास्त्र है। अपनी आयुर्वेदीय चिकित्सा स्वतन्त्र प्रकार की है। वह दूसरेकी नकल नहीं है। आयुर्वेद केवल रोगोंका नाश ही नहीं वह रोगियोंका भी उपकार करता है। आयुर्वेदिक वैद्य विशिष्ट रोगका निदान और चिकित्सा स्वतन्त्र रूपसे करते हैं। अन्य वैद्यक पद्धतियोंमें त्रिदोष पद्धतिका भेद नहीं है। आयुर्वैदिक वैद्य सभी प्रकारके रोगियोंको एक ही प्रकारकी औषधि नहीं देते। नवीन वैद्यक पद्धतिमें साधन सामग्री अधिक लगती है। यहांकी देहाती जनताको वह कैसे सुलभ होगी? आधुनिक पद्धतिमें खर्च अधिक पड़ता है। अपने देशकी गरीब जनताको जिसका लाभ सुलभतासे हो वही अभीष्ट है। चरक, सुश्रुत, नागार्जुनकी परम्पराएँ आगे बढ़नी चाहिये। वैद्यसमाजको विशाल हृदय रख नवीन औषधियों

और ज्ञानका लाभ लेते हुए नये पुरानेका समन्वय करना चाहिये। जिससे जनताको आरोग्यताका लाभ अधिकसे अधिक होता रहे।

अध्यक्षका भाषण—सभाकी अध्यक्षा श्रीमती वैद्या लक्ष्मीबाई वोरवणकर चुनी गयी थीं। उन्हें ३० संस्थाओंकी ओरसे हार समर्पित किये गये। अध्यक्षा जीके पिता श्रीमान् नानासाहब कुलकर्णीका भी सम्मान किया गया। अध्यक्षा महोदयाने रत्नागिरीको नररत्नोंका आगर बतलाते हुए एक स्त्री वैद्याको अध्यक्ष पद देना स्त्रीत्वको गौरव प्रदान करना बतलाया। विद्वत्परिषद, शारीर संज्ञा परिषद, अध्यापक परिषद, पारद संशोधन, संशोधन चिकित्सा केन्द्र, स्नातकोंको उचित सम्मान दिलानेके उद्योग और शुद्ध आयुर्वेदके कार्योंका आपने उल्लेख किया। जनतासे सम्पर्क बढ़ानेकी आवश्यकता बतलायी। पाश्चात्य वैज्ञानिकों द्वारा दही, अङ्कुरित धान्य, राब आदि असंशोधित द्रव्योंकी नित्य आहारके रूपमें जो प्रशंसा की गयी है उससे जनताका अनिष्ट हो रहा है। वैद्योंको अपने विचारोंका प्रसार करना चाहिये। अन्य बहुतसे आवश्यक विषयों पर आपने प्रकाश डाला।

अन्य बातें—सम्मेलनमें गन्धक द्रुति पर अनुभव और उपयोगकी बातें कही गयीं। इसके अध्यक्ष नागपुरके आयुर्वेदाचार्य पं० गुलराज शर्मा थे। सम्मेलनमें वैद्यराज नानासाहब पुराणिकका भी महत्वपूर्ण भाषण हुआ। आपने कहा कि आयुर्वेद प्राचीन शास्त्र है और उसमें भविष्यकालीन आवश्यकताओंकी पूर्ति करनेकी शक्ति है। आयुर्वेदका भविष्य उज्वल है। प्राकृतिक चिकित्साकी ओर आजकल लोगोंकी रुचि बढ़ रही है; किन्तु आयुर्वेदका जोर भी निसर्गोपचारकी ओर विशेष है। उसमें जो कमी है, आयुर्वेदसे उसकी पूर्ति हो सकती है। पण्डित शिवशर्मा जीका भी भाषण हुआ। श्री जोशी जीका संग्रहणी विषयक विवेचन महत्वका रहा। सम्मेलन सफल रहा। अगला सम्मेलन पैठणनगरमें होगा।

पुच्छरत पदक

पञ्जाबके प्राचीन हिन्दी सेवी एवं हिन्दी परीक्षाओंके प्रचारक अमृतसरके प्रमुख साहित्यिक अनेक संस्थाओंके संस्थापक वयोवृद्ध ख्यातनामा श्री जगन्नाथ पुच्छरत जी सारस्वत साहित्य भूषणकी चिरकालीन अनुपम (ठोस) निःस्वार्थ साहित्य सेवाओंके उपलक्ष्यमें श्री पुच्छरत जीके सम्मानार्थ काशी नागरी प्रचारिणी सभाके तत्त्वावधानमें पञ्जाब विश्वविद्यालय (यूनीवर्सिटी) की हिन्दी रत्न और हिन्दी प्रभाकर, परीक्षाओंमें इस वर्ष सर्व प्रथम (फर्स्ट) उत्तीर्ण छात्र छात्रा अपना अपना रोल नम्बर प्राप्तांक और स्थानीय किसी प्रामाणिक संस्था के सभापति व मन्त्री अथवा अन्य किसी प्रतिष्ठित उत्तरदायित्व पूर्ण भद्र व्यक्तिके समर्थन (अनुरोधपत्र) सहित श्री मन्त्री नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी (काशी) बनारसको निवेदन पत्र भेज पूर्व घोषित "पुच्छरत रजत पदक" प्राप्त करें।

भवदीय कृपापात्र :—

विनीतः—श्री सोमनाथ पुच्छरत,
साहित्य सदन, चावल मण्डी,
अमृतसर, (पूर्वी पञ्जाब)

आयुर्वेद महासम्मेलन

४३ वां अधिवेशन-दिल्ली

अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलनके ४३ वें वार्षिक अधिवेशनका उद्घाटन भारत गणराज्य के राष्ट्रपति परम आदरणीय महामहिम श्री डाक्टर राजेंद्रप्रसाद जीने २२ फरवरी १९५९ को अपने कर-कमलों से करना स्वीकार किया है। अतः अधिवेशनकी तिथियां २२ से २५ फरवरी १९५९ की निश्चित की गयी हैं।

इस अधिवेशनको अधिकाधिक उपयोगी एवं आकर्षक बनानेके लिये स्वागत समितिने विद्यापीठ स्नातक सम्मेलन, आयुर्वेदीय पत्रकार सम्मेलन, छात्र प्रतियोगिता, चिकित्सा सम्भाषा परिषद तथा शल्य शालाक्य सम्भाषा परिषद आदि विभिन्न परिषदोंके साथ साथ एक विशाल आयुर्वेदीय प्रदर्शिनीका आयोजन भी किया है जिसमें आयुर्वेदके आठों अङ्गोंके सम्यक् और समीचीन प्रदर्शनका प्रयत्न किया जा रहा है।

इससे नौ वर्ष पूर्व महासम्मेलनका ३७ वां वार्षिक अधिवेशन भी इस महान नगरीमें ही सम्पन्न हुआ था। हमारा प्रयत्न है कि यह ४३ वां अधिवेशन उससे भी कई गुणा अधिक सफलताके साथ सम्पन्न हो। इस कार्यमें हमें आपके अमूल्य सहयोग की आवश्यकता है। इस ऐतिहासिक सम्मेलनमें सम्मिलित हो सङ्गठनको दृढ़ बनाइये।

देशमें अपनी राष्ट्रीय सरकार होते हुए भी आज आयुर्वेदीय विज्ञानकी जो दुर्दशा है उससे वैद्यसमाज अपरिचित नहीं है। अनेक प्रकारके बाधक विधि-विधानों द्वारा आयुर्वेदके विनाशके प्रयत्न किये जा रहे हैं। इस समय आयुर्वेदके पुनरुज्जीवन तथा आयुर्वेदोपजीवियोंके जीवन-मरणका विकट प्रश्न उपस्थित है। इस स्थितिका परिहार वैद्यसमाजके अपने हाथ ही में है। हम अपनी महानाशी निद्राका त्याग करें, जिस विज्ञानके आश्रयमें हमारा पालन हो रहा है उसके प्रति अपने उत्तरदायित्व और कर्तव्यको पहिचानें, सचेष्ट, और क्रियाशील होकर अपनी इस प्राचीन महान संस्था अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलनकी ध्वजाके नीचे एकत्रित होकर आयुर्वेद विधायक कार्योंमें जुट जायें। अधिवेशनमें सम्मिलित होकर हमें ऐसी क्रान्तिकारी योजनाओंका निर्माण करना है और उनकी पूर्तिमें संलग्न होना है। तदर्थ स्वागत समिति आपका सानुरोध, सादर और सप्रेम आवाहन करती है।

इस महासम्मेलनके अध्यक्ष उड़ीसाके सुख्यात कविराज श्री पण्डित अनन्त त्रिपाठी जी शर्मा, एम० ए० पी० ओ० एल०, आयुर्वेदाचार्य होंगे तथा विद्यापीठके अध्यक्ष दिल्लीके सुविख्यात विद्वान कविराज श्री उपेन्द्रनाथ जी दास, काव्य-सांख्य-स्मृतितीर्थ, भिषगाचार्य, प्रिंसिपल, आयुर्वैदिक यूनानी तिब्बिया कालेज, होंगे। इन दोनों विद्वानोंकी आयुर्वेद सेवाओं के लिये वैद्यसमाज परम आभारी है। हमें आशा और पूर्ण विश्वास है कि इनके तत्वावधानमें यह अधिवेशन बड़े-बड़े निश्चयों तथा महत्वपूर्ण परिणामों पर पहुँचेगा।

प्रतिनिधियों तथा दर्शकोंके लिये आवश्यक सूचनाएँ

दिल्लीमें निवास स्थानकी समस्या कुछ विकट होते हुए भी प्रतिनिधियोंके ठहरनेकी व्यवस्था स्वागत समितिकी ओरसे की जावेगी।

दर्शक रूपमें उपस्थित होने वाले महानुभावोंसे प्रार्थना है कि वे अपना ठहरनेका प्रबन्ध स्वयं करें। स्थानके संकोचके कारण हम इतने बड़े जनसमूहको ठहरानेमें असमर्थ हैं।

स्वयंपाकी सज्जन अपने साथ अपने बर्तन अवश्य लावें।

दर्शकों तथा प्रतिनिधियोंको भोजन के लिये २ रु० प्रतिदिन देना होगा। सरकारी प्रतिबन्धके कारण

स्वागत समिति निःशुल्क भोजन देनेमें असमर्थ है।

अधिवेशनमें उपस्थित होने वाले महानुभाव अपने साथ अपने बिस्तर अवश्य लावें। दिल्लीमें उन दिनों ठण्ढक अधिक रहेगी अतः गरम वस्त्र भी साथ लावें।

दिल्ली तथा नयी दिल्ली स्टेशनों पर स्वागत समितिकी ओरसे स्वयंसेवकों तथा अस्थायी कार्यालयका प्रबन्ध रहेगा, जो कि समागत अतिथियोंको सर्वप्रकारको सूचनाएँ एवं सहयोग देनेमें सहायक होगा।

इस अधिवेशनमें वे ही महानुभाव प्रतिनिधि हो सकते हैं जो कि महासम्मेलनके सदस्य हों। अतएव जो महानुभाव अधिवेशनमें प्रतिनिधिस्वरूप एवं साधिकार उपस्थित होना चाहें उन्हें शीघ्र ही ५ रु० सदस्यता शुल्क महासम्मेलन कार्यालयको भेजकर तथा सदस्यता आवेदन पत्र भरकर सदस्य बन जाना चाहिये। सदस्येतर महानुभाव अधिवेशनमें केवल दर्शक रूपमें ही सम्मिलित हो सकते हैं

महासम्मेलन कार्यालयसे आधे किरायेके रेलवे कन्सेशनके प्रमाणपत्र केवल महासम्मेलनके सदस्यों को ही भेजे जायँगे।

प्रतिनिधि शुल्क ३ रु० प्रति सदस्य है जो सम्मेलनावसर पर देना होगा।

प्रतिनिधि कमसे कम एक सप्ताह पूर्व अपने आनेकी तिथि तथा समयकी सूचना स्वागत समिति के कार्यालयको देनेकी कृपा करें।

वैद्य महानुभावोंसे निवेदन है कि अपने आस पास तथा अपने प्रदेशकी आयुर्वेद सम्बन्धी जो भी वस्तुएँ प्रदर्शन योग्य प्राप्त हो सकें जैसे यंत्र, शस्त्र, धातु, उपधातु, प्राणिज, खनिज द्रव्य तथा हस्तलिखित प्राचीन पुस्तकों एवं आयुर्वेद सम्बन्धी ज्ञानवर्द्धनके लिये अन्य वस्तुओंको कार्यालयके पते पर भेज दें। उपयुक्त समझे जाने पर प्रदर्शित वस्तुओंका मार्गव्यय व मूल्य भी प्रदर्शिनीकी ओरसे दिया जा सकेगा। उत्तम प्रमाणित होने पर पारितोषिक भी दिया जावेगा।

आशुतोष मजूमदार
कार्यालय मन्त्री, स्वागत समिति
मजूमदार आयुर्वेदिक फार्मेसी, हौज काजी, दिल्ली

कार्यक्रम

२२-२-५६ रविवार—८-३० से १०-३० तक सबेरे धन्वन्तरि यज्ञ, स्वागताध्यक्ष—श्री पं० मनोहरलाल जी आयुर्वेदाचार्य, यजमान वैद्य श्री बनवारीलाल दुआ, पुरोहित—गोसांई गिरधारीलाल जी, द्रष्टा—पं० प्रभुदत्त जी शास्त्री, यज्ञकी महिमा—भाषण श्री जागेराम जी गुप्त, ध्वजोत्तोलन–आयुर्वेद पञ्चानन श्री पण्डित जगन्नाथप्रसाद जी शुक्ल, प्रयाग, द्वारा, १०-३० से प्रदर्शनीका उद्घाटन–वैद्य पं० रामनारायण जी शर्मा, अध्यक्ष, श्री वैद्यनाथ आयुर्वेदभवन द्वारा, धन्यवाद प्रदर्शन वैद्य श्री गोविन्द सहाय जी दत्त, मन्त्री प्रदर्शनी समिति, ११-३० से १-३० तक भोजनादि, २ से ४ बजे तक मध्यान्ह विद्यापीठ स्नातक सम्मेलन, स्वागताध्यक्ष—श्री पं० शिवनाथ जी शर्मा, आयुर्वेदाचार्य, उद्घाटन श्री प्रेमशङ्कर जी शर्मा भिषगाचार्य, डायरेक्टर आफ आयुर्वेद, राजस्थान अजमेर, द्वारा, अध्यक्ष—श्री कविराज एस० के० भेड़ा, एम० बी० बी० एस०, आयुर्वेदाचार्य, बम्बई। ४-३० से ६ बजे तक अपरान्ह आयुर्वेदीय पत्रकार सम्मेलन, स्वागताध्यक्ष - वैद्य श्री पं० गुरुदत्त जी, एम० एस० सी०, आयुर्वेद भास्कर। उद्घाटक—श्री मङ्गलदास जी भिषगाचार्य, अध्यक्ष, बोर्ड आफ इण्डियन मेडिसिन, राजस्थान, जयपुर। अध्यक्ष—वैद्य श्री बापालाल गड़बड़दास जी प्रिंसपल, नाभर आयुर्वेद महाविद्यालय, सूरत। ६ से ८ बजे तक सायंकाल—भोजनादि, ८ बजेसे महासम्मेलन स्थायी समिति तथा विद्यापीठ केन्द्रीय प्रबन्धक समितिका अधिवेशन एवं विषय निर्धारिणी समितिका निर्वाचन सोमवार २३-२-५६—६ से ११ बजे तक प्रातःकाल छात्र प्रतियोगिता, स्वागताध्यक्ष—श्री शङ्करदेवजी शर्मा, आ० आ०। उद्घाटक—श्रीमती अरुणा आसफअली, महापौर, नगर निगम, दिल्ली। अध्यक्ष—श्री कान्तिनारायण जी मिश्र आयुर्वेदा-

चार्य, आ० बृहस्पति, डायरेक्टर आफ आयुर्वेद, पञ्जाब पटियाला। ११ से ३ बजे तक भोजनादि। ४ बजे मध्यान्होत्तर—सम्माननीय श्री राष्ट्रपति जीका स्वागत। ४-०५ मङ्गलाचरण। ४-१० से ४-२५ तक स्वागताध्यक्ष कविराज श्री वैद्यनाथ जी सरकार महोदयका स्वागत भाषण। ४-२५ से ४-४५ तक सम्माननीय राष्ट्रपति महोदयका उद्घाटन भाषण। ४-४५ से ५ बजे तक महासम्मेलनाध्यक्ष कविराज श्री अनन्त त्रिपाठी शर्मा महोदयका अध्यक्षीय भाषण। ५-०५ धन्यवाद प्रदर्शन—कविराज श्री उपेन्द्रनाथदास जी द्वारा। ५-१० राष्ट्रगान। ५-३० से ६-३० तक सायंकाल—प्रादेशिक सम्मेलनाध्यक्षोंका महासम्मेलनाध्यक्षके साथ सङ्गठन सम्बन्धी वार्तालाप ८ बजेसे विषय निर्धारिणी समितिका अधिवेशन। मङ्गलवार २४-२-५६—६ से ११ बजे तक प्रातःकाल—चिकित्सा सम्भाषा परिषद्का अधिवेशन। स्वागताध्यक्ष—श्री पण्डित दुर्गादत्त जी, दिल्ली। उद्घाटक—कविराज श्री रामचन्द्रजी मल्लिक, कलकत्ता। अध्यक्ष—श्री एम० विश्वेश्वर शास्त्री, स्पेशल आफिसर इण्डियन मेडिसिन, आन्ध्र, हैदराबाद। २ बजे मध्यान्ह—विद्यापीठ उद्घाटक महोदयका स्वागत। २-०५ मङ्गलाचरण। २-१० से २-२५ विद्यापीठ स्वागताध्यक्ष श्री पं० मनोहरलाल जी शर्मा आयुर्वेदाचार्यका स्वागत भाषण। २-२५ से २-५० तक उद्घाटन भाषण। २-५० से ३-५० तक विद्यापीठाध्यक्ष कविराज श्री उपेन्द्रनाथ जी दासका अध्यक्षीय भाषण। ३-५० से ३-५५ तक धन्यवाद प्रदर्शन—वैद्यरत्न कविराज श्री प्रताप सिंह जी द्वारा। ४ बजे राष्ट्रगान। ४ बजे सायंकाल—महासम्मेलन विद्यापीठका खुला अधिवेशन। रात्रि भोजनादि। बुधवार २५-२-५६—प्रातः काल ८-३० से १०-३० तक शल्य शालाक्य सम्भाषा परिषद्। स्वागताध्यक्ष—श्री दुर्गादत्त जी शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य, दिल्ली। उद्घाटन—श्री पी० एन० अवस्थी, डी० ए० एस० एफ०, एम० ए० पोद्दार हास्पिटल बम्बई द्वारा। अध्यक्ष—श्री पी० जे० देशपांडे, आयुर्वेदाचार्य, ए० एम० एस०, जैड०, ए० टी० एच० एस० सी० एस० आर० । सर्जन, सर सुन्दरलाल चिकित्सालय तथा लेक्चरर सर्जरी, आयुर्वेदिक कालेज, काशी विश्वविद्यालय, वाराणसी। १०-३० से ११-३० तक नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ का दीक्षान्त समारोह। दीक्षान्त भाषण—श्री वी० के० आर० वी० राव, वाइस चांसलर, दिल्ली यूनीवर्सिटी ११-३० से २ बजे तक भोजनादि। मध्यान्होत्तर २ से ४ बजे तक विद्यापीठ महाविद्यालयका उद्घाटन। ५ से ८ बजे तक भोजनादि। ८ बजे से महासम्मेलन विद्यापीठका खुला अधिवेशन।

स्वागत समितिको इस कार्यक्रममें आवश्यकतानुसार परिवर्तनका अधिकार है।

ओंकारप्रसाद शर्मा
स्वागत मन्त्री

समाचार

अमेरिकामें भारतीय विधिका आदर—

भारतीय चिकित्साशास्त्रमें कितनी ही ऐसी विधियां हैं जिनका ज्ञान आधुनिक डाक्टरोंको नहीं है। कटी नाक जोड़नेकी विधि यूरोपको भारतसे ही मालूम हुई है। अमेरिकाके चिकित्सकोंको जो गर्भावस्थामें ही बच्चे मर जाते हैं, उनके बचानेकी विधि मालूम नहीं थी। परन्तु बम्बईके डाक्टर बी एन० शिरोडकरने सुश्रुतके आधार पर इसकी विधिका पुनरुद्धार किया है और अब भारतीय चिकित्सकोंको यह विधि परिचित हो गयी है तीन वर्ष पहलेकी बात है कि बाल्टिमोरके जौंस हाफकिंस अस्पतालमें वाशिंगटनके एक डाक्टर एक स्लाइड दिखलाकर कह रहे थे कि गर्भावस्थाके ऐसे सङ्कटका हमारे पास कोई उपाय नहीं है। वहां पर एक भारतीय शल्य चिकित्सक उच्च शिक्षार्थी भी मौजूद था। उसने कहा कि भारतमें इसका उपाय प्रसिद्ध है। प्रसूतितन्त्र विशेषज्ञ डाक्टर वार्टरने बम्बईसे पत्र व्यवहार कर इसकी विस्तृत जानकारी प्राप्त की। डा० शिरोडकरकी विधिमें गर्भ प्रणालीकी ग्रीवाको डैकरोनके फीतेसे बांध दिया जाता है जिससे विकासशील बच्चेकी रक्षा करने वाली तरल पदार्थसे भरी थैली समयसे पहले बाहर न निकल सके। अमेरिकन डाक्टर बार्टनने जानकारी प्राप्त कर कुछ मामूली परिवर्तनके साथ सन् १९५५ में पहला अपरेशन किया जो पूर्ण सफल रहा। अब अमेरिकाके बहुतसे अस्पतालोंमें इस विधिको अपना लिया गया है और इस जानकारीसे अमेरिकन डाक्टर सफलता प्राप्त कर रहे हैं।

मुद्रक :—पण्डित राजेन्द्रचन्द्र शुक्ल वैद्य, सुधानिधि प्रेस सम्मेलन मार्ग, प्रयाग
प्रका० :—वैद्य पण्डित सिद्धिनाथ दीक्षित कवीश्वर, प्रयाग।

वर्ष ५० सं० २ } { फरवरी १९५९ ई०, माघ २०१५ वै०

सुधानिधि

समाचार

आयुर्वेदिक अनुसन्धान केन्द्र—प्रसन्नता की बात है कि हैदराबादमें जो आन्ध्रप्रदेश आयुर्वैदिक बोर्ड स्थापित है वह सिकन्दराबादमें दश बिस्तरोंका एक अस्पताल अनुसन्धान केन्द्रके लिये स्थापित कर रहा है। इसमें कैंसरके रोगी रखे जायँगे और उनकी चिकित्सा आदि अनुसन्धानके दृष्टिकोणसे होगी। ऐसा ही एक केन्द्र आन्ध्रके फ्लूस स्थानमें भी स्थापित होने वाला है। एक केन्द्र गोदावरी जिलेके मुथीपाल स्थानमें पहलेसे काम कर रहा है। धन्य आन्ध्र प्रदेश !!

फैजाबाद ज़िला वैद्यसम्मेलन—फैज़ाबाद जिलेका ११ वां वैद्यसम्मेलन २८ दिसम्बरको सम्पन्न हुआ। फैजाबाद स्वास्थ्यविभागके चेयरमैन कविराज विद्याधर शर्मा वैद्यने पताका फहरायी। सभापति पण्डित बाबूराम शर्मा हापुड़ हुए थे और आयुर्वेद सन्देशके सम्पादक पण्डित सुरेन्द्रनाथ दीक्षितकी उपस्थिति उल्लेखनीय थी। आगामी वर्षके लिये सभापति आयुर्वेदाचार्य पण्डित रामभद्र उपाध्याय बी० ए०, सारी निवासी हुए। अयोध्याके पण्डित जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, सहिजादपुरके पं० रामहौसिला पांडे, मिल्कीपुरके पण्डित जगन्नाथप्रसाद त्रिपाठी और टांडाके पण्डित रामसहाय शास्त्री अपनी अपनी तहसीलोंसे चुने गये। प्रधानमन्त्री फैजाबादके आयुर्वेदाचार्य पण्डित देवीप्रसाद मिश्र डी० आई० एम० एस० चुने गये। तय हुआ कि जिलेके वैद्य हकीमोंके माध्यमसे आयुर्वेदको राष्ट्रीय चिकित्सा घोषित करानेके लिये जन आन्दोलन आरम्भ किया जाय। केन्द्रमें आयुर्वेदका विभाग और आयुर्वेद डायरेक्टरकी नियुक्ति हो। 'आयुर्वेदोद्धारक समिति' की स्थापना हुई और अन्य सब जिलोंसे ऐसी समिति स्थापित करनेका अनुरोध हुआ। प्रान्तीय मुख्य मन्त्रीके विचारोंका समर्थन कर नया पाठ्यक्रम और "आयुर्वेदाचार्य" उपाधि स्वीकृत हुई। वैद्य हकीम और कम्पौंडरोंका वेतन एलोपैथी वालोंके समान रखनेका अनुरोध हुआ। वैद्योंके अधिकार डाक्टरोंके समान हों और प्रान्तमें आयुर्वेदके डाइरेक्टरकी नियुक्ति हो। ड्रग्सऐक्ट, अश्लीलविज्ञापन ऐक्ट, मैजिकरेमिडीज़ ऐक्ट, एक्साइज ऐक्टमें सुधार करनेका अनुरोध किया गया। डाक्टर रञ्जन और डाक्टर पटेलके आयुर्वेद विरोधी भाषणका विरोध किया गया। स्वागताध्यक्ष वैद्य महावीरप्रसाद गुप्तको धार्मिक औषधालय सञ्चालनके निश्चय पर धन्यवाद दिया गया। अधिवेशनका उद्घाटन आयुर्वेदाचार्य पण्डित देवीप्रसाद मिश्रने किया।

जड़ी बूटी अनुसन्धान—संस्कृतके विद्वान श्री हेनरिचने अमेरिकामें भाषण देते हुए भारतीय

जड़ी बूटियोंके अनुसन्धानसे उनकी उपयोगिता और रहस्योंके उद्घाटनकी बात कही। अमेरिका इस कार्यके लिये अनुसन्धानकी व्यवस्था कर रहा है। इसका केन्द्र अहमदाबादमें रहेगा। इसका विवरण डाक्टर बी० ए० साराभाई और स्क्रूयब रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा तैयार होगा। इस साराभाई औषधि अनुसन्धान केन्द्रमें जड़ी बूटियोंके साथ ही आयुर्वैदिक औषधियों पर भी अनुसन्धान होगा। सर्पगन्धाके गुणोंने कान्तिकारी परिवर्तन कर दिया है और भारतीय डाक्टरोंमें भी देशी औषधियों पर आस्था उत्पन्न हुई है। इस कार्यमें चरक-सुश्रुत और वाग्भटके ग्रन्थोंका भी आधार लिया जायगा। यह संस्था कलकत्ते स्कूल आफ ट्रापिकल मेडिसिंस, दिल्लीकी चिकित्सा अनुसन्धान परिषद, लखनऊके केन्द्रीय अनुसन्धान केन्द्र और बम्बईके हाफकिंस इंस्टीट्यूटसे भी सम्पर्क स्थापित करेगी।

सफेद कोढ़ पर महान अद्भुत खोज

सम्मेलन नहीं होगा !!!

आयुर्वेद प्रेमी जनता दुःख, क्षोभ, सन्ताप और क्रोधके साथ सुनेगी कि २२ से २५ फरवरी तक जो अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन होनेवाला था, वह नहीं होगा। सम्मेलनके प्रधानमन्त्री कहते हैं कि कुछ वैधानिक आपत्तियोंके कारण मुकदमे छिड़ जानेसे उक्त तिथियोंमें सम्पन्न नहीं हो रहा है। स्वागताध्यक्ष, स्वागत मन्त्री और कार्यालय मन्त्री कहते हैं कि बम्बईके मोहनलाल पुरुषोत्तमदास गुप्ताके द्वारा बम्बईके न्यायालयमें और नागपुरके वैद्य गुलराजशर्मा तथा ज्वालाप्रसादके द्वारा दिल्लीके न्यायालयमें मुकदमा चलानेसे अधिवेशन रुक गया है। नौ वर्ष बाद दिल्लीमें सम्मेलन हो रहा था, इस बार वैद्योंमें अभूत पूर्व उत्साह और जोश था। स्वागतकारिणी सफलताके लिये उद्योग कर रही थी। अकस्मात यह वज्र आकर घहराया। मुकदमोंके सम्बन्धमें हमें कुछ मालूम नहीं अतएव उस सम्बन्धमें कुछ न कहकर हम यही कहना चाहते हैं कि जो लोग पर्देकी आड़से आयुर्वेदके साथ मजाक कर रहे हैं, सम्मेलनको खेलवाड़ बना रहे हैं; उन्हें जनता क्षमा नहीं करेगी। दो बार राष्ट्रपतिको चकमा दिया गया, उनका अपमान किया गया अब कौन मुंह लेकर उनसे भविष्यमें कहा जायगा। कितने ही अधिकारी, राजदूत, प्रतिष्ठित पुरुष सम्मेलनमें पधारनेवाले थे उन सबकी सहानुभूतिसे हम वञ्चित हुए, यह महान क्षोभकी बात है।

सम्पादक—

आयुर्वेदवृहस्पति श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल आयुर्वेदपंचानन, साहित्यवाचस्पति, प्रयाग

वर्ष ५० सं० २ —— सुधानिधि —— फरवरी १६५६ ई०

माघ २०१५ वै०

विज्ञापन १) प्रतिपंक्ति प्रतिकालम

सुधा स्वादीयसी ह्येतद्वचो नहि परीक्षितम्।
प्रददाति सुधामेष सुधास्रावी "सुधानिधिः"॥

वार्षिक मूल्य ३)
प्रति अङ्क ।-)

आयुर्वेदज्ञों द्वारा आयुर्वेदका सर्वनाश !!

इस शीर्षकका एक लेख इस अङ्कके साथ दिया जा रहा है। इसके लेखक इन्दौरके ख्यातनामा राजवैद्य आयुर्वेदवृहस्पति पण्डित ख्यालीराम द्विवेदी D. Sc. A. आयुर्वेदाचार्य, आयुर्वेदमार्तण्ड एक वृद्ध और भारत प्रसिद्ध वैद्य हैं। आपने युवाकालसे ही आयुर्वेदकी उन्नतिका जो प्रयत्न जारी रखा है वह बहुमूल्य है। आयुर्वेदके गौरव और उन्नति मार्गमें जहां बाधा पहुँचती हो, अथवा उसका अपमान होता हो वह आपके लिये असह्य हो यह स्वाभाविक है। एक घटनासे इसी प्रकार आपके हृदयको जो ठेस लगी उससे आपका हृदय आन्दोलित हो उठा और वह लेख उनके द्वारा लिखा गया। लेख बहुत बड़ा हो गया है, विचार प्रवाहमें पुनरुक्तियां और कटुता भी आ गयी हैं। परन्तु जब हृदय भीतरसे रो उठता है तब कथनमें सामञ्जस्य और मधुरभावका ध्यान नहीं रहता। इसी प्रवाहमें यदि आप सरकारके साथ ही अपने सङ्गठन पर भी, अपने सम्प्रदायके वन्धुओं पर भी भली बुरी सुनानेमें अपनेको रोक न सके हों तो ऐसी दशामें यह प्रश्न नहीं उठता कि हम भी सभी बातों, सभी विचारों और सभी उद्गारोंके समर्थक हैं या नहीं। परिस्थिति यह है कि ऐसे विचारोंके लिये जो दुःखद प्रसङ्ग और वातावरण बन रहा है उस पर गम्भीरता, सहानुभूति और साहसके साथ विचार करनेका समय उपस्थित है। अतएव खण्डत मण्डन, पक्षापक्षी, आदिकी दृष्टिसे नहीं वास्तविकता, कर्तव्य, उद्देश्य सिद्धि आदिकी दृष्टिसे इस पर विचार होना चाहिये और आयुर्वेदकी रक्षा, गौरव वृद्धि तथा उन्नतिके उपायों पर एकमतसे तत्परता पूर्वक लग जाना चाहिये। सभी वैद्य विदेशी दवाका व्यवहार करते हैं या सभी कारखाने वाले केवल द्रव्यके लिये अशुद्ध औषधि बनाते हैं, यह बहुत जबरदस्त आक्षेप हो जाता है। कुछ ऐसे भी फार्मसी वाले हैं जिन्हें यह चिन्ता रहती है कि हमारी औषधियां यथासम्भव समाजमें अच्छी समझी जावें और उनका अच्छा प्रचार हो! अवश्य ही उनकी संख्या ५ फीसदीसे अधिक होनी चाहिये। असलमें आपके हृदयमें जो अचानक धक्का लगा उससे आप इतने आतङ्कित और प्रभावित हुए कि अधिक विचार करनेका आपको अवकाश ही न मिला। इस लेखके प्रकाशनका यही उद्देश्य है कि आयुर्वेदकी परिस्थितिकी ओर लोगोंका ध्यानाकर्षण हो।

दृष्टिकोणका अन्तर

गड़बड़भोला—आयुर्वेदकी उन्नति सभी चाहते हैं। राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद भी चाहते हैं, केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्री डाक्टर करमरकर भी चाहते हैं और प्रधानमन्त्री नेहरू भी चाहते हैं; इधर ठाकुर हुकुमसिंह भी चाहते हैं, डा० सम्पूर्णानन्द भी चाहते हैं। हम चाहते ही हैं, शुद्ध आयुर्वेद वाले भी चाहते हैं और मिश्र आयुर्वेदवाले भी चाहते हैं; किन्तु फिर भी आयुर्वेदकी असली उन्नति हो नहीं रही है, यह आश्चर्यकी बात है। इसकी तह पर जानेसे मालूम पड़ेगा कि इसका कारण आपसमें सभीके दृष्टिकोणमें अन्तर है। जब तक यह अन्तर मिट न जाय तब तक आयुर्वेदकी उन्नतिका काम क्रमशः अग्रसर होता हुआ उद्देश्यकी सिद्धि तक नहीं पहुँच सकता। यदि गवर्नमेंटमें तत्परता हो तो एक गोलमेज कानफरेंस करके इसका निपटारा किया जा सकता है। किन्तु उधर कोई आग्रह या कोई उत्सुकता नहीं है। कुछ करना है इसलिये कुछ कर देते हैं! परिणाम "यद्वातद्वा भविष्यति" कुछ होता रहेगा। इस तरह राष्ट्रीय चिकित्साका मसला कभी हल नहीं होगा। इस विषयमें सबसे अधिक तत्परता, सबसे अधिक मार्मिक पीड़ा-हार्दिक लगन चिकित्सक वर्गमें आयुर्वैदिक समाजमें होनी चाहिये और है भी। ऐसी दशामें हमें अपने दृष्टिकोणमें सामञ्जस्य स्थापित करनेका प्रयत्न करना चाहिये। अपनी अपनी ढोलकी अपना अपना राग अलापनेसे कभी शामिल बाजाका बेसुरापन मिट नहीं सकता और एक अर्थबोधक आवाज निकल नहीं सकती है। अतएव सबसे पहले हमें अपने विचारोंमें एकता लानी होगी। इस गड़बड़झालाको मिटानेका प्रयत्न पहले हमारी ओरसे होना चाहिये।

हमारी एकता—हमारे आयुर्वैदिक क्षेत्रमें सामान्यतः तीन दृष्टिकोणोंके तीन दल दिखाई पड़ते हैं। पहला तो आयुर्वेददल है, जो चाहता है कि हमारे आयुर्वेदकी यत्परोनास्ति उन्नति हो। स्वास्थ्यनीति आयुर्वेदकी हो, चिकित्सानीति आयुर्वेदकी हो, स्वास्थ्यविभागके हेल्थ अफसर आदि अधिकारी आयुर्वेदके हों, सिविलसर्जन और फौजी चिकित्सक एवं सर्जन आयुर्वेदके हों। भारतमें स्वास्थ्य और चिकित्साविभागका सञ्चालन आयुर्वेदके नामसे हो। मेडिकल कौंसिल आयुर्वेदकी हो; डाइरेक्टर और मिनिस्टर आदि नीति सञ्चालक कार्यनिर्वाहक सब आयुर्वेदके हों। देशमें एकमात्र आयुर्वेदकी पताका फहरावे, एशियामें आयुर्वेदका प्रभाव विस्तार हो और विश्वमें आयुर्वेदकी प्रतिष्ठा हुए बिना स्वास्थ्य और चिकित्साका सर्वोत्तम हल सिद्ध न समझा जाय। त्रिगुण, त्रिधातु और त्रिदोषका सिद्धान्त विश्वव्यापी हो और आयुर्वेदके "हेतुव्याधि विपर्यस्त विपर्यस्तार्थ कारिणाम्। औषधान्न विहाराणामुपयोगम् सुखावहम्॥" की छहों धाराएँ इस विस्तार और निर्मलताके साथ अबाधित बहती हुई एक पवित्र सङ्गमका निर्माण करें। फिर उनमें विश्वकी सारी चिकित्सा पद्धतियां अवगाहन कर अपनेको पवित्र करें। सभी उसे अपना त्राणकारक और उद्धारक समझें। यह तभी होगा जब आयुर्वेदमें भिन्न भिन्न देशोंकी आवश्यकताकी पूर्तिकी सामग्री हो, भिन्न भिन्न विचारोंके समाधानका खजाना हो। मानवजीवनकी रक्षा और उन्नतिका सारा ज्ञान-विज्ञान-प्रयोग और साधन सामग्रीका स्वागत और प्रचार हो। आयुर्वेद परमात्माके विराट स्वरूपके समान व्यापक हो। "एकमेवाद्वितीयम्" के रूपमें वह सभी विचारोंकी इच्छा पूर्ति करे। ऐसी दशामें शुद्ध और मिश्रका झमेला व्यर्थ है! शुद्ध आयुर्वेद वाले यही तो चाहते हैं कि आयुर्वेदका ज्ञान विज्ञान हमारा मूलाधार हो, इसके बाद हम अन्य प्रचलित ज्ञान विज्ञानकी धाराओंको समझकर विश्वके लिये प्रभावशाली चिकित्सा वैज्ञानिक बनें। इसी तरह मिश्र चिकित्सा वाले सम्भवतः यही चाहते हैं कि आयुर्वैदिक

ग्रन्थोंमें समयका गतिके कारण जो संक्षिप्त विवरण हैं उसे नये प्रकाशमें हम अच्छी तरह विवादित रूपमें देख समझकर अपना लें और अपनेको इस योग्य बनालें कि अन्य किसी वर्गके चिकित्सक यह मिथ्याभिमान न प्रकट कर सकें कि हम श्रेष्ठ हैं, या एकमात्र देशमें हमारा ही मान हो। मिश्र ज्ञानके बल हम देशके मेडिकल विभागकी लगाम अपने हाथमें रख सकें। परमात्मा, अल्लाह, गाड किसी भी नामसे पुकारिये, उससे सर्वव्यापक, सर्वशक्ति सम्पन्न एक ईश्वरका ही बोध होता है। इसी तरह एक आयुर्वेद नाम पर सारी समस्याओंका हल मौजूद है। इस प्रकार आयुर्वैदिक समाज विचार समन्वयके द्वारा एक होकर आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये एक आवाज उठावे तो उसमें बल होगा, प्रभाव होगा, सौन्दर्य होगा और आकर्षण होगा।

अन्य धाराओंका समन्वय—देशमें प्रचलित यूनानी, होमियोपैथी, नेचरोपैथी, क्रोमोपैथीकी कुछ चिकित्सा और स्वास्थ्यरक्षक धाराएँ प्रचलित हैं। उनके माननेवाले भी अपना अस्तित्व बनाये रखकर उन्नति करते हुए जनसेवाकी तृप्ति करना चाहते हैं। सबोंके अलग अलग प्रयत्न हैं; अलग अलग मांगे हैं, अलग अलग विभाग स्थापन द्वारा प्रयत्नोंकी पूर्तिका उद्योग है। सबकी अलग अलग आवाज है। जिससे सरकार निश्चय नहीं कर पाती कि क्या करे। अतएव हल्ला गुल्ला बन्द करनेके लिये कभी इसे कभी उसे कुछ टुकड़े फेंककर सरकार उलझाये रखना चाहती है। किन्तु इससे हमारी चिकित्साकी मांगमें बल नहीं आने पाता। आवश्यकता है कि हम इन्हें समझाकर समाधानका वातावरण तैयार करें। उन्हें यह समझावें कि इस तरह तो हम बहके हुए चलते ही रहेंगे, कभी सिद्धि और सफलताकी ओर बढ़कर देशकी राष्ट्रीय चिकित्साकी घोषणा न करा सकेंगे। हमारा सबका सम्मिलित प्रयत्न होना चाहिये। हमारे साथ आपके स्वार्थ सुरक्षित रहेंगे। यूनानी और आयुर्वेदमें आधारभूत सिद्धांतों और पद्धति प्रकरणमें एक समानता है। कहीं कहीं कुछ अन्तर दिखता है, उसका समाधान होना कठिन नहीं है। आयुर्वेदवाले यूनानीको समझनेकी प्रवृत्ति बढ़ावें और यूनानीवाले आयुर्वेदको समझने की अभिरुचि बढ़ावें। ज्ञानके आदान-प्रदानसे सहज समन्वय होगा और मतभेद नामकी बाधक वस्तु नहीं रह पावेगी। एक आयुर्वेदकी आवाजमें एक मांग हो और आयुर्वेदके अन्तर्गत उनकी भावनाओं का आदर हो, हक और अधिकारकी रक्षा हो। होमियोपैथीका विज्ञान अभी व्यापक न हो, तथापि लक्षणों द्वारा व्याधिका स्वरूप समझ विपर्ययस्तार्थकारी सिद्धान्तसे समान सिद्धान्तके द्वारा उसका रोग प्रशमनका ढङ्ग पूर्ण आयुर्वेदीय है। कोचिला खानेसे यों जो लक्षण और विकार स्वरूप होते हैं, वैसे लक्षणोंकी उपस्थितिमें कोचिला देनेसे लाभ होगा। यह सिद्धान्त भी आयुर्वेद सम्मत है। अतएव वे भी यदि हमारे साथ मिलकर आयुर्वेदको राष्ट्रीय चिकित्साविज्ञान बनानेका समर्थन करें तो आयुर्वेदके स्वार्थके साथ उनके स्वार्थकी भी रक्षा होगी। आयुर्वेदकी गोदमें उनका भी यथेष्ट लाड चाव हो सकेगा। नेचरोपैथी अर्थात प्राकृत चिकित्सा पूर्णरूपसे आयुर्वेदके सूत्रस्थानान्तर्गत स्वास्थ्य संरक्षण सिद्धान्तके अन्तर्गत है। अतएव उन्हें आयुर्वेदके साथ चलनेमें कोई बाधा नहीं है। क्रोमोपैथीका सिद्धान्त वेदनिहित है अतएव आयुर्वेदके साथ मिलकर उसका विकास सर्वथा सम्भव हो और उसका भारतीय ढङ्ग पर अधिक विकास हो। इस प्रकार देशमें जितने स्वास्थ्य और चिकित्साके विधान प्रचलित हैं सब एकमें मिलकर आयुर्वेदके नाम पर राष्ट्रीय चिकित्साकी मांग करें तो हमारी ठोस मांगकी अवहेलना करना किसीके लिये सम्भव नहीं होगा। इसके बाद हम व्यक्तिगत दृष्टिकोणका समाधान करनेमें समर्थ होंगे।

अधिकारी दृष्टिकोण—ऊपर वर्णनके अनुसार जब समस्त भारतके चिकित्सकोंकी एक आवाज आयुर्वेदको राष्ट्रीय चिकित्साविज्ञान स्वीकार करानेकी होगी तब अधिकारी वर्ग पर

उसका असर हुए बिना नहीं रहेगा। ऐसे समयमें हमारा प्रयत्न और कर्तव्य होगा कि हम अधिकारियोंके दृष्टिकोणमें समानता लानेका प्रयत्न करें। महामान्य राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद जीके विचार आयुर्वेदके सम्बन्धमें सुलझे हुए हैं, वे अन्तःकरण पूर्वक आयुर्वेदकी सर्वथा अभिवृद्धि चाहते हैं। राज्यपालोंमें महामान्य डाक्टर श्रीप्रकाशके विचार भी स्पष्ट हैं। वे देशमें आयुर्वेदका सर्वोपरि अभ्युदय चाहते हैं और साथ ही चाहते हैं कि हमारा दृष्टिकोण व्यापक और सारग्राही हो। केन्द्रमें माननीय मोरार जी भाई, मान्यवर लालबहादुरशास्त्री, मा० अजितप्रसादजैन, पं० गोविन्दवल्लभ पन्त आयुर्वेदके पूर्ण समर्थक हैं। नवीन विचारोंका ग्रहण ये चाहते हैं तो हम भी चाहते हैं; किन्तु कार्यके लिये जैसे विश्वके सब देशोंमें उदारताके हाथ उठते हैं, उसी तरह यहां भी हमें सुविधाएं मिलती जायँ और उनका सदुपयोग करते हुए हम सिद्धिकी ओर बढ़ते जा सकते हैं। प्रान्तीय मन्त्रियोंमें बङ्गालके 'मुख्य मन्त्रीको छोड़ शायद ही कोई हो जो आयुर्वेदके विरुद्ध जा सके। मध्यप्रदेशके मुख्य मंत्री मान्यवर काटजू साहब सम्भवतः अभी तक इस विषयमें निश्चयात्मक दृढ़तामें नहीं हैं तथापि उनका विशाल भारतीय हृदय, भारतीय संस्कृति और ज्ञानविज्ञानके समर्थनमें ही हो सकता है। बम्बई, आन्ध्र, राजस्थान, मध्यप्रदेश और विहारकी परिस्थिति अनुकूल ही होगी। पञ्जाबमें अन्य राजकीय विषयोंमें मतभेद हो सकता है; किन्तु आयुर्वेदके सम्बन्धमें एकमत होना कठिन नहीं है। हिमालय प्रान्त तो स्वदेशीका समर्थक है ही। हमारे उत्तरप्रदेशमें कुछ समझका फेर नहीं; किन्तु समझनेमें फेर हो रहा है, उसे सँभालना होगा। उत्तरप्रदेशके स्वास्थ्यमन्त्री माननीय ठाकुर हुकुमसिंह साफ हृदयके उदार क्षत्रिय हैं। सीधा निशाना लगाना उन्हें पसन्द है, दांवपेंच उन्हें पसन्द नहीं। वे आयुर्वेदके पूर्ण पक्षपाती हैं। मन्त्रियोंमें माननीय कमलापति त्रिपाठी शास्त्रीय विचारके सुलझे हुए व्यक्ति हैं। आयुर्वेदके लिये कोई अवसर आने पर उनका प्रथम समर्थन रहेगा। माननीय पण्डित मोहनलाल गौतमके विचार इस सम्बन्धमें सुलझे हुए हैं। माननीय चौधरी चरण सिंहका किसानी हृदय आयुर्वेदका ही समर्थक है। माननीय अन्य मन्त्रियोंका हृदय तो स्वदेशी भावोंसे भरा हुआ है ही। श्री चतुर्भुज शर्मा जी माने हुए स्वदेशी हृदयके हैं। मुख्यमन्त्री सम्पूर्णानन्द जीको जहां तक हमें समझनेका अवसर मिला है, वे विद्वान हैं, वैज्ञानिक हैं, आयुर्वेदका स्वयं प्रयोग करते हैं और आयुर्वेदके पूर्ण समर्थक हैं। परन्तु मालूम पड़ता है कि वे उलझनमें उस समय पड़ जाते हैं जब आयुर्वेदकालेजका पढ़ा हुआ कोई स्नातक अपने नामके आगे आयुर्वेदाचार्यसे घृणा कर डाक्टर बनना चाहता है, अपने प्रयोगमें ८० फीसदी दवा एलोपैथीकी बरतना चाहता है। तब उनका दिल भड़क उठता है; क्योंकि आपको लागलपेट पसन्द नहीं। यदि आयुर्वेदके साथ एलोपैथीकी भी शिक्षा देनेसे वैद्य विद्यार्थीकी आंखोंमें आयुर्वेदके नाम पर पर्दा पड़ जाता है और एलोपैथीके चश्मेसे ही दिखता है तब इन्हें पाश्चात्य विषय पढ़ाना कहां तक और किस समय समुचित होगा? वे वैद्योंको पूर्ण समर्थ, सभी ज्ञान विज्ञानके जानकार किन्तु वैद्यके रूपमें ही देखना चाहते हैं। अतएव जब हमारे मिश्र प्रेमी बन्धुओंका दृष्टिकोण आयुर्वेदमय किन्तु सभी व्यापक ज्ञानसे पूर्ण हो जायगा तब भ्रमकी गुञ्जाइश न रहेगी और डाक्टर सम्पूर्णानन्द जीको अपना विचार बदलनेमें विलम्ब नहीं लगेगा।

केन्द्रीय दृष्टिकोण—प्रान्तीय समस्याएँ सुलझाना उतना कठिन नहीं होगा। किन्तु असली उलझन केन्द्रीय दृष्टिकोणको लेकर है। क्योंकि केन्द्रीय ही नहीं सभी प्रान्तोंका भी सूत्रसञ्चालन केन्द्रके द्वारा होता है। केन्द्रकी नीतिके अनुसार प्रान्तोंको अपनी नीति सँभालनी और चलानी पड़ती है। केन्द्रके इशारेके विरुद्ध प्रान्तवाले अधिक करनेमें समर्थ नहीं हो सकते। तथापि केन्द्रवालोंका यह बहाना रहता ही है कि प्रान्तवाले जिस कार्यके

लिये सिफारिश करेंगे, उनके आग्रह पर उसके लिये केन्द्रसे सहायता दी जायगी; किन्तु जब केरलने आयुर्वेदके व्यापक अधिकार बढ़ाने चाहे तब केन्द्रकी आंखें पथरा गयीं और केरलकी योजना ठप हो गयी! इसलिये हमें दोनों ओरकी नाड़ी टटोलते रहनेका प्रयत्न करना पड़ेगा। केन्द्रके स्वास्थ्यमन्त्री माननीय दत्तात्रेय परशुराम करमरकर राजकुमारीके समान दुराग्रही न हों तो भी अपने प्रधानमन्त्रीका रुख देखते हुए एक आंकी हुई सीधी सड़क पर चलते रहना ही उन्हें अभीष्ट है। वे समय समय पर जामनगरके कार्योंका उल्लेख कर अपने सन्तोषके साथ संसद्के सदस्योंको भी सन्तुष्ट रखनेका प्रयत्न करते हैं। जामनगरमें एक निष्णात १२०० वनस्पतियोंको एकत्र कर नकली जड़ी बूटी छांट रहे हैं। एक दूसरे संस्कृतज्ञ शास्त्रीय ग्रन्थ एकत्र कर शारीरिक भागोंके नाम, औषधि द्रव्योंके नाम ऋग्वेद और अथर्ववेदसे लेकर इस समय तककी जानकारीके साथ एकत्र कर रहे हैं। इससे ऐतिहासिक दृष्टिसे प्राचीन वैद्यकका इतिहास तैयार हो सकता है। पाण्डु सम्बन्धी अनुसन्धानकी आप चर्चा करते ही हैं। साथ ही आप न्यूमोनियामें एण्टी बायोटिक्स आधुनिक दवाइयोंकी प्रशंसा करनेमें भी नहीं चूकते। आयुर्वेदिक औषधालयमें एण्टी बायोटिक्स औषधियां रखनेकी आप सिफारिश कर रहे हैं; किन्तु आधुनिक अस्पतालोंमें कुछ अच्छी आयुर्वेदिक औषधियां वैद्यके सहित रखनेके लिये तैयार नहीं हैं। आयुर्वेद और अन्य शास्त्र ज्ञानके उद्भव स्थान हों तो भी अर्वाचीन संशोधनोंको आप भूल नहीं सकते। वैद्यक क्षेत्रमें जो श्रेष्ठ हो वह चाहे विलायती हो चाहे अमेरिकन हो आप उसे ग्रहण करेंगे। आपको आयुर्वेदके लिये कोई खास आग्रह नहीं है। इस ढुलमुल नीतिका मूल टटोलनेके लिये हमें प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूका दृष्टिकोण देखना पड़ेगा। क्योंकि मन्त्रिमण्डलके आप ही अगुवा और प्रधान मार्गदर्शक हैं।

प्रधानमन्त्रीका रुख—हमारे भाई पण्डित जवाहरलाल नेहरूको आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये कोई आग्रह नहीं है। उनकी धारणाके अनुसार वैद्यक एकमेव विषय है। विभिन्न आगम होने पर भी वैज्ञानिक कसौटीसे परीक्षा करने पर आयुर्वेदकी भी जो बात जँचेगी उसे आप ग्रहण करेंगे। सम्भवतः इस प्रकार ग्रहण किये हुए रत्न एलोपैथीके मुकुटमें ही जड़े जावेंगे। भारतका कोहनूर ब्रिटिश ताजमें जड़ दिया गया उससे ब्रिटेनका तेज तो बढ़ा; परन्तु उससे भारतका क्या गौरव हुआ? वात-पित्त-कफ टेस्टट्यूबकी शीशीमें आकर परीक्षित नहीं हो सकते तो उनके लिये अस्पतालमें रोगियों द्वारा परीक्षण करने करानेकी परवाह नहीं भी हो सकती और सम्भवतः इस प्रकार वे त्याज्य भी हो सकते हैं। चिकित्सकको एनाटमी, फिजियालोजी, बायोलोजी जानना आवश्यक है। वह शरीरशास्त्र, शरीर क्रियाविज्ञान और शरीर विकृतिविज्ञानके नामसे अपने यहां इन विषयोंको पढ़ता हो तो भी आधुनिक नामसे ही उनका महत्त्व माना जायगा। प्राचीन विज्ञानके साथ आधुनिक विकसित अंशोंको भी ग्रहण करनेमें कभी वैद्योंने आनाकानी नहीं की। परन्तु उन्हें सिखानेका प्रबन्ध न करके यही माना जायगा कि ये प्रमाणित चिकित्सक नहीं हैं। आयुर्वेदसे नोच खसोटकर एलोपैथीके भण्डारमें जमा करना इसे हम न तो आयुर्वेदकी उन्नति मानते हैं और न ऐसे काममें खर्च की हुई रकमको आयुर्वेदके विकासमें लगी हुई मानते हैं। हम स्पष्ट चाहते हैं कि आयुर्वेदकी उन्नति स्वतन्त्र रूपसे इस दृष्टिकोणसे हो कि जो नयी आवश्यक बातें हों वे आयुर्वेदमें बढ़ायी जायँ। आयुर्वेद पूर्ण होकर देशकी आवश्यकताकी पूर्ति करे। अनुसन्धानका फल आयुर्वेदकी उन्नतिका कारण बनना चाहिये। यदि एलोपैथी एकमेव पद्धति बन सकती है तो आयुर्वेद सबसे पहले बन सकता है। आयुर्वेदके व्यावहारिक सिद्धान्त देशवासियोंकी प्रकृति और रहन सहनके अनुकूल हैं। हमारा उद्योग होना चाहिये कि इस मार्गके दृष्टिकोणोंमें साम्य लानेका प्रयत्न हो। रगड़ चलती रहनेसे

उसका निशान बनेगा ही। जब औरोंके दृष्टिकोण सम हो जायँगे तब पण्डित जवाहरलालको समझने या सलझानेमें विलम्ब नहीं लगेगा। प्रयत्न और उद्योगसे सफलता निश्चित है। दृष्टिकोणका अन्तर मिटकर साम्य आना ही चाहिये। तभी आयुर्वैदिक स्वराज्य या राष्ट्रीय चिकित्साविज्ञानकी समस्या हल होगी। अतएव दृष्टिकोणके अन्तरकी बाधा हल होनी ही चाहिये।

मेरी बीमारी

सुधानिधिके पिछले अङ्कमें मैंने अपने लिये कठिन बीमारीमें फँसे रहनेका जिक्र किया था। उसे पढ़कर बहुतसे मित्रोंको चिन्ता हुई है और लोगोंने विशेष हाल जाननेकी इच्छा प्रकट की है। यों भी कई सूत्रोंसे जिन्हें बीमारीका हाल मिला उन्होंने चिन्ता और व्यग्रताके साथ समाचार जानना चाहा। बहुतोंको पत्र द्वारा समय समय पर समाचार दिया गया। विहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बम्बई प्रान्त, राजस्थान, दिल्ली और पञ्जाबके कुछ मित्र तो मिलनेके लिये भी आये। इसलिये यह उचित प्रतीत होता है कि अपनी बीमारीका कुछ संक्षिप्त ब्योरा इस अङ्कमें दे दिया जाय।

पूर्वरूप—ईश्वर कृपासे मेरा स्वास्थ्य अच्छा रहा आया है। कुछ सामयिक हलकी बीमारी कभी कभी हुई हैं, वह भी ईश्वर कृपासे बहुत तङ्ग न करके अच्छी होती रही हैं। इसलिये मैं स्वास्थ्यके प्रति बराबर लापरवाह रहता आया हूँ। मैं समझता था कि जैसी कटती आयी है, उसी प्रकार चैनसे कटती जायगी और मैं जिस प्रकार निरन्तर काम करता आया हूँ वैसा ही आजीवन करता रहूँगा। अवस्थाके ७६ वर्ष ऐसे बीते भी। तीन वर्ष पहले हरिद्वारसे मेरठ होते हुए प्रयाग आते समय मेरठके मित्रोंको इस बात पर कौतूहल हुआ कि ७६ वर्षके होने पर भी न तो इनके नेत्रोंकी शक्तिमें अन्तर आया है और न कोई इन्द्रियां बेकाबू हुई हैं। पण्डित गणेशदत्तजी शास्त्रीको इस बात पर आश्चर्य हुआ कि अरे इस उम्रमें इनकी गांठोंमें भी दर्द नहीं होता! मुझे उनके आश्चर्य पर आश्चर्य हुआ और एक विचार हृदय और मस्तिष्क पर चक्कर काटने लगा कि क्या गांठके दर्दका बुढ़ापेसे कोई घनिष्ट सम्बन्ध है? वहांसे आनेके कुछ दिन बाद ही बायें पैरकी गांठमें दर्द आरम्भ हुआ, उससे कष्ट भी होने लगा। आधा पैर कुछ मुड़ा रहता; किन्तु डण्डेके सहारे और किसी मित्रके सहारे चलनेमें बाधा न पड़ती। ऐसी दशामें राजापुर, कर्वी, बांदा, अतर्रा, दिल्ली, लखनऊ, पटना, गया आदि कई स्थानोंकी सभाओंमें जाता भी रहा। दिनमें काम करता और रातमें कुछ मालिश और सेंक हो जाती इस प्रकार दो तीन महीनेमें वह ठीक हो गया। कुर्सीमें पैर लटकाकर अधिक देर तक बैठनेसे कभी कभी पिण्डलीके नीचे शोथ हो जाता, कभी पैर दबाकर बैठने पर पिण्डली की ऊपरी हड्डीके पास दबकर गड्ढासा पड़ जाता। किन्तु इसकी परवाह नहीं की। इधर कुछ महीनोंसे कुछ कब्ज रहने लगा और मल निकालनेके लिये प्रायः गणेशक्रिया करनी पड़ती। पेशाब भी कुछ रुकावट दिखाकर पीछे होता। निरुद्ध प्रकश (क्षुद्ररोगाधिकारकी) कुछ शिकायत होने लगी और कभी कभी यह भी अनुमान होने लगा कि सम्भवतः पौरुष ग्रन्थि बढ़ रही हो। हां, एक सालसे कानोंमें भी कुछ विकार और जरा ऊँचा सुननेकी बाधा उपस्थित हुई; किन्तु निकट भविष्यमें किसी बाधक उपद्रवकी सम्भावना नहीं थी। तथापि ८० वर्षके उत्सवके समय न जाने मुझमें उत्साह क्यों नहीं था।

बीमारीकी उत्पत्ति—७ नवम्बरको झांसीमें आयुर्वेद विश्वविद्यालयकी कार्यकारिणीकी मीटिङ्ग थी। मैं ६ नवम्बरको शामकी गाड़ीसे रात भरका सफर कर ७ को सबेरे झांसी पहुँचा। रातमें दर-

बाजेके पास बैठनेके कारण मुसाफिरोंके आने जानेके समय दरवाजा खुलने पर कुछ सर्दी लगती थी, आलस्यवश बिस्तरमें बँधे कपड़े न खोलकर साधारण चादरसे ही काम चलाता रहा। झांसीमें दिन भर कोई बाधा नहीं मालूम पड़ी। शामको ४ बजेसे मीटिंग थी उसी बीच न जाने कब मुझे ज्वर आ गया और शायद कुछ बेहोशीकी दशा रही। मीटिंग खतम होने पर उठाने पर मुझे मालूम हुआ कि मैं एक तख्त पर लिटा दिया गया था। खैर, मुझे ठहरनेकी जगह पर भेज दिया गया। रातमें भी ज्वर था और शायद बायां पैर फैलाकर लेटनेमें कुछ संकोचसा होने लगा। ८ नवम्बरको मेरे आग्रह करने पर एक सहायकके साथ मैं प्रयाग भेज दिया गया। सहायक पाठक जीके कन्धेका आसरा लेकर मुझे प्लाटफार्म पर जाने, गाड़ीमें चढ़ने मानिकपुरमें उतरकर गाड़ी बदलने और प्रयागमें भी उतरकर घर तक पहुँचनेमें कोई विशेष बाधा नहीं हुई। किन्तु घरके दरवाजेके सामने सवारीसे उतरने और सामान उठानेमें कठिनाई मालूम पड़ी। एक तरहसे यह दिन रात अर्ध बेहोशीमें बीता; क्योंकि मुझे स्मरण नहीं कि उस दिन दिनरातमें कुछ पानी या दूध भी मैंने ग्रहण किया या नहीं। ६ के सबेरे मैंने अपनेको चारपाई पर पड़ा हुआ बीमार पाया। धन्वन्तरि उत्सवमें कानपुर जानेका निश्चय था; परन्तु न तो प्रयागके उत्सवमें और न कानपुरमें ही पहुँच सका।

भयङ्कर कष्ट—ज्वरकी बेचैनी थी ही, बायें पैरमें शोथ, घुटनेमें दर्दके साथ बेकाबूपन था। न तो पैर उठता था और न जितना आधा मुड़ा था उससे अधिक फैलता था और न सिकुड़ता था। सीधे लेटना भी नहीं बन पड़ता था। दाहने बायें करवट लेना तो असम्भव था। कष्टके कारण नींद भी कभी कुछ आती कभी न आती। पेशाब पाखाने की भयङ्कर समस्या उपस्थित थी। मूत्रयन्त्रकी सहायतासे पेशाब तो बिस्तर पर ही करना पड़ता और इस समय भी करना पड़ रहा है। कभी असावधानी होनेसे बिस्तर भी खराब हो जाता है, भयानक घृणा और कष्टकी उपस्थिति होती है। चारपाई पर ही पाखाना फिरना प्रकृतिके अनुकूल न होनेसे पास हो उसके लिये व्यवस्था करनी पड़ी। उसके लिये भी तीन चार आदमियोंकी आवश्यकता पड़ती है। चारके कन्धेका सहारा मरने पर लेना पड़ता है परन्तु यहां अभीसे चारकी आवश्यकता पड़ने लगी! जीवन भाररूप मालूम पड़ने लगा। ज्योतिषी लोग कुण्डली देखकर मुँह लटकाकर बैठ जाते। आग्रह करने पर कहते कार्तिक भर तो महान कष्ट है, यों यह पूरा साल कष्टमय रहेगा। जीवनका यह तीसरा साढ़े साती शनि अन्तिम ढाई वर्ष अपने पूरे प्रकोपके साथ जोर आजमाई कर रहा है। शनिकी युतिके साथ शुक्र मारकेश हैं और वही व्ययस्थानमें बैठे हुए हैं। मङ्गल भी ठीक नहीं। बैशाखकी अमावस्या तक महान कष्टकी सम्भावना है ही। मैंने भी सोचा कि यदि ऐसा ही है तो मृत्युका स्वागत करनेके लिये तैयार हो जाना चाहिये, मैंने अन्न त्याग दिया। कुछ दूधका सहारा रखा। पूरे कार्तिक और उसके पर्व त्योहार कैसे होते हैं मुझे पता नहीं। आखिर कार्तिक बीता, ज्वर घटने लगा आधे मार्गशीर्ष तक ज्वर समाप्त हुआ। शरीर और मन पर कुछ काबू हुआ। दो बार चिकित्सकोंकी सभा बैठी उरुस्तम्भ (पैराप्लेजिया) तो है नहीं, आमवात (ह्यूमेटिक्स) से विकारकी भयङ्करता अधिक है। तो फिर आमवातजन्य जानुशोथ (ह्यूमेटाइड अर्थराइटिज) हो सकता है। किन्तु जानुकी अपेक्षा रोगकी भयङ्करता गांठमें विशेष रूपसे है। शोथ भी है, पीड़ा भी है और पैरमें हरकत होनेसे गांठमें तनाव भी पड़ता है; अतएव क्रोष्टुशीर्ष (सीनोवाइटिस) की ओर ही अधिक ध्यान जाता है। आयुर्वेदमें इसका वर्णन तो है; किन्तु विस्तृत विवरण नहीं है। दो बार योगराज गुग्गुल + सिंहनाद + कैशोर गुग्गुल महारास्नादि क्वाथ और कभी रासना सप्तकके साथ चलने लगा। एक बार वातचिन्तामणि और एक बार योगेन्द्ररस चला। महुवाके लेपसे हानि मालूम

पड़ी और सूजनका लेप भी नहीं सहा। हां, वातनाशक औषधियोंका बफारा कुछ दिन चला और गोमूत्रकी सेंक तथा पोटलीकी सेंक भी चलती रही। किससे क्या लाभ हुआ यह कहना कठिन है; किन्तु ज्वर जा ही चुका, पैरका शोथ भी बहुत घट चुका था। शरीर और मन पर कुछ काबू हो ही चला है। पढ़ने और कुछ लिखनेका काम सबके मना करते रहने पर भी कुछ चलने ही लगा है। अन्नके नाम गेहूँकी दलिया और रोटी भी ले ली जाती है। दाल बन्द, नमक बन्द (कुछ थोड़ा सैंधव लेकर) खटाई बन्द, दही बन्द, वायु और कफकारक पदार्थ बन्द, मिठाई बन्द; किन्तु गृहिणीके प्रेमपूर्वक बनाये विशेष लड्डू तो छोड़नेकी चीज नहीं! दूध निषिद्ध होने पर भी छोड़ना कठिन होनेके कारण कभी मुनक्का और कभी अदरख या शुण्ठी डालकर दिन रातमें तीन पाव ले लिया जाता है। पाखानेकी असुविधाके कारण क्वाथ या दूधके साथ एरण्डतैल या त्रिफला क्वाथ लेनेमें घबड़ाहट होती है तथापि वर्तमान व्यवस्थासे एक पाखाना साफ हो जाता है। हां, कुछ दिन होमियोपैथी चिकित्सा भी चली; किन्तु पाँवकी बेवशी अभी कायम ही है। पंजेके बल कुछ खिसकने तो लगा है; परन्तु न तो पैर सीधा होता, न अपने बल पर भूमि पर स्थिर हो सकता, न उठता और न गति कर सकता है। इधर सर्दी, बादल बूंदी, वृष्टि और धूपका अभाव भी कष्टको कम नहीं होने देता। रोगी तो परेशान है ही। पौने तीन महीनेकी जहमतसे घर भरके लोग विशेषकर सेवामें लगे रहने वाले लोग परेशान और उद्विग्न हैं। चिकित्सक, सहायक मित्र और सलाहकार भी देरसे आराम होने वाली समझ चिन्तित हैं।

अब क्या करें?—परेशानीमें दिमाग स्थिर नहीं रहता। मनुष्य सब ओर सहारा ढूंढ़ता है। ब्रह्मचारी प्रभुदत्त जी महाराज गहरी सहानुभूति और स्नेह भरे हृदयसे अपने आश्रममें ले जाना चाहते हैं; परन्तु उनके समष्टि कार्योंमें एक व्यक्तिगत चिन्ता बढ़ाकर उन्हें कहां तक झंझटमें डाला जाय यह प्रश्न है। डिपुटी डाइरेक्टर और सरकारी आयुर्वेदकालेजके प्रिंसपल आयुर्वेदाचार्य पण्डित दत्तात्रेय अनन्त कुलकर्णी जीने तीन चार बार उपस्थित होकर इच्छा प्रकट की कि आयुर्वेदकालेजके अस्पतालमें आपकी सेवा की जाय। किन्तु पारिवारिकजन प्रयागमें और अस्पताल लखनऊमें श्री कुलकर्णी जी तथा वहांके परिचित मित्रोंको असुविधामें डालनेका खतरा न लेना पड़े तो अच्छा। सबसे अधिक आग्रह मित्रोंका इलाहाबादके अस्पतालमें चलनेके लिये ही होने लगा। किन्तु प्राइवेट वार्डका खर्च सँभालना कठिन और जनरल वार्डमें अपनी धार्मिक प्रवृत्ति और सुविधाकी पूर्ति होना कठिन ऐसी दशामें हिचकिचाहट! साथ ही जन्म भर आयुर्वेदका नारा लगाने वाला अस्पतालमें जाकर मरे इस विचारसे होने वाली ग्लानि रुलाई उत्पन्न करती थी। इच्छा यही प्रबल थी कि आयुर्वैदिक उपाय ही अजमाये जायँ, इसलिये जहां तक बना डाक्टर मित्रोंके अनुरोध टालता रहा। हां, स्ट्रेपटो पेनसलीनके १६ इञ्जेकशन फिर भी लगे। यह कहना आवश्यक है कि जबसे राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन जीको बीमारीका पता लगा तबसे वे बीच बीचमें आते रहे, परामर्श देते और धैर्य बँधाते रहे। मुझसे और मेरी चिकित्सासे सम्पर्क रखने वालोंसे सम्पर्क रखते रहे। भोजन पानमें परामर्श देते रहे और बिजलीकी सेंकका भी प्रबन्ध किया। किन्तु जब किसी उपायसे अभीष्ट सिद्धिकी पूर्ति सन्तोषजनक होती न दिखी तब उन्होंने यहांके सिविलसर्जन मनस्वी चटर्जी महोदयसे सम्पर्क स्थापित कर उन्हें मुझे देखनेके लिये भेजा। चटर्जी महोदयने बहुत ध्यानपूर्वक देखकर पेशाबकी रिपोर्ट, खूनकी रिपोर्ट और पैरके एक्सरेकी रिपोर्ट गम्भीरता पूर्वक देखी। ब्लडप्रेशर देखा वह १२० से अधिक नहीं, पेशावमें कुछ अलव्यूमनके अतिरिक्त और विकार नहीं, रक्तमें रक्तकणोंकी कमीके सिवाय कोई गम्भीरवात नहीं, एक्सरेमें केलशियम जम

जानेके कारण कण्डराओंका कड़ापन विचारणीय है। अस्थियोंकी परिस्थितमें कोई परिवर्तन नहीं। ऐसी दशामें बहुत गम्भीरता पूर्वक सोचकर आपने स्काट आइण्टकी पट्टी लगाकर कड़ाबन्धन करनेकी व्यवस्था दी और खानेके लिये टेबलेट आफ प्रेडनी सोलोन होस्टाकारटिन हाई दिनमें तीन बार बतलाया। स्काट पट्टी बांधनेके लिये पहले भी मित्रवर डाक्टर पांडेय और सद्भावनाशील डा० कृष्णाराम झाजीने सलाह दी थी; परन्तु एक हकीम मित्रकी सलाह हुई कि इससे लाभ हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता; कभी कभी हानि भी हो सकती है। एक प्रवीण डाक्टरका कहना हुआ कि यह एक पुरानी विधि है अब इसका प्रचार घट रहा है और इसमें पारद होनेसे छाले पड़कर घाव भी हो सकता है। उस समय ऐसा महँगा जुआ खेलना उचित नहीं समझा गया। सिविलसर्जन महोदयने पुल्टिस हलकी और कम लगानेका आदेश दिया। गोलियोंके सम्बन्धमें भी पहले सुहृदवर डाक्टर विश्वनाथ जीने सलाह दी थी। इस बार उससे अधिक शक्तिवाली हाई पावरकी व्यवस्था हुई। यद्यपि यह ठीक है कि ज्यों ज्यों सर्दी घटती जानेके लक्षण दिखते हैं त्यों त्यों स्वास्थ्य सम्पादनके लिये सुविधाएँ बढ़नेकी आशा उत्पन्न होती जाती है। यह भी ठीक है कि आरम्भमें रोग बलवान रहता है, उसे हटानेमें कठिनाई पड़ती है। औषधिसे ज्यों ज्यों उसकी जड़ कमजोर पड़ती है त्यों त्यों क्रमशः स्वास्थ्यके लिये सहायता मिलती जाती है। इसलिये अधिक दिन चलने वाले रोगोंमें प्रायः अन्तिम चिकित्साविधानको अधिक यश मिल जाता है। तथापि यह मानना ही पड़ेगा कि इस उपायसे भी लाभ हुआ है। स्वास्थ्यसम्पादनका रास्ता प्रशस्त हुआ है और उपस्थित कष्टोंमें शीघ्रतासे कमी हुई है। पैर कुछ उठने लगा है, शोथ घट गया है, वेदना कम हो गयी है; तथापि अभी पैर सीधा नहीं हुआ उसमें गतिशीलता अभी तक नहीं आयी। आधुनिक पद्धतिको उचित श्रेय देने पर भी यह विचारणीय है कि "अब क्या करें?" इस व्याधिसे छुटकारा पानेके लिये कोई स्थायी उपाय अपना होना चाहिये। इस बीमारीका प्रधान आघात मेरे मस्तिष्क पर स्मरण शक्ति पर पड़ा है। उसका उपाय बिना जीवन व्यर्थसा रहेगा। दो बार पट्टी बांधने पर भी शोथ और पीड़ा घट जाने पर भी अभी पैर अच्छी तरह फैलता नहीं है। दाहने पैरके साथ बायां पैर भूमि पर पड़ता नहीं है, अतः चलना अभी भी समस्या है। गति खोकर तो जीवन भार रूप हो जायगा।

आयुर्वेदजगत सोचे—यद्यपि यह बीमारी व्यक्तिगत है और इसे तूल देकर पत्रमें छापना अनावश्यक समझा जा सकता है। किन्तु इससे आयुर्वेदको जो एक चुनौती मिलती है, वह गम्भीरता पूर्वक सोचनेकी बात है और उससे मामला व्यक्तिसे बढ़कर समष्टिका हो जाता है। किसी रोगीका आग्रह है कि मैं आयुर्वेदके द्वारा ही आरोग्य होऊँ और दूसरी प्रणालीका आश्रय लेना उसके लिये प्राणान्तक वेदनाका सूचक होता है तो उसके विचारानुसार उसकी इच्छा पूर्तिका साधन आयुर्वेदमें होना ही चाहिये। वैद्योंके लिये यह सन्तोष घातक है कि जो हमारे यहां है वह पर्याप्त है। जो नहीं है, उसकी पूर्तिके लिये सदा प्रयत्नशील रहना चाहिये। हर एक रोगका पुनर्निरीक्षण आयुर्वेद, यूनानी और आधुनिक प्रणालीकी दृष्टिसे किया जाय। अपने यहां जो कमी निदान और चिकित्सामें मालूम पड़े उसकी पूर्ति की जाय। अपने यहांके क्वाथ लाभदायक होने पर भी उनकी सामग्री जुटाना और तैयार करना सबके लिये सुविधाजनक नहीं होता। उनकी पुड़िया तैयार वैद्योंके यहां रहनी चाहिये। यदि प्रवाही क्वाथ हों तो और अच्छा। कुछ फार्मेसियोंने इन्हें तैयार करना आरम्भ भी किया है। एण्टी फ्लोजिस्टिन हमने कई बार उपयोगी पाया है। अलसीके द्वारा उपयुक्त औषधियोंके योगसे उसे तैयार करना चाहिये। स्काट्स आइण्टके

२

ढङ्ग पर वेदनाशामक और शोथनिवारक वस्तु भी बननी चाहिये। प्लास्टर बांधनेका क्रम भी यथावश्यक अपनाना होगा। अच्छा हो कि सम्मेलन एक समिति बनाकर ऐसी वस्तुओं, विधियों और साधन- सामग्रियोंकी लिस्ट तैयार करावे और चिकित्सक तथा फार्मसी वाले उनकी पूर्तिका प्रयत्न करें। आयुर्वेदको सर्वथा पूर्ण और समर्थ तथा समयानुकूल बनानेके लिये यह आवश्यक है।

हार्दिक कृतज्ञता—इस बीमारीमें मुझे मधुर और कटु दोनों तरहके अनुभव हुए जिससे संसार की द्विविधताका यथार्थ ज्ञान हुआ। क्यों पुराने आर्य लोग चतुर्थावस्थामें निराश्रित आश्रमस्थ हो बनको चले जाते थे, उसका रहस्य ज्ञान प्राप्त हुआ। गोस्वामी तुलसीदासके इस मर्मान्तिक वेदना को भी समझनेका अवसर मिला। "स्वारथके साथिन तज्यो तिजरा कैसो टोटकु औचटि उलटि न हेरो!" जिन्होंने बीमार भेजकर भी कभी तबियतका हाल जाननेकी चिन्ता न की या जिन्होंने बीमार जानकर भी परवाह न की, उनके प्रति भी मेरा हृदय कृतज्ञतासे भरा हुआ है; क्योंकि उन्होंने मुझे निवृत्ति वृत्तिकी आवश्यकताका पाठ पढ़ाया। उनके विषयमें क्या कहूँ जिन्होंने यह सन्तोष और धैर्य दिलानेका साहस किया कि इस द्विविध संसारमें हालाहल विष या वडवानलके सिवाय स्नेह, पवित्र मैत्री, आत्मीयता, सज्जनता, सहानुभूति, समवेदना, उदारता, परोपकार प्रियता, दुःखीके दुःख बटानेकी क्षमता, भ्रातृभावकी भावनाका जीवनी सञ्चारक, धैर्यधारक, अवलम्बनदाता सुखद अमृत समुद्र भी लहरा रहा है। उनका स्मरण होते ही हृदय कृतज्ञता से पिघलकर आंसुओंके रूपमें बहने लगता है और हिचकी बँधानेवाली जोरकी रुलाई छूटती है। जैसा कि यह लेख लिखते समय भी हो रहा है। राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन स्वयं बीमार होते हुए भी कितनी ही बार आये और उचित व्यवस्थाके लिये चिन्ता और प्रयत्न करते रहे। ब्रह्मचारी प्रभुदत्तजी महाराज अपने सौहार्द्रपूर्ण हृदयसे उदारता और दयाकी लहरें लहराते हुए कितनी ही बार आये, मेरी सुविधा और स्वास्थ्यकी व्यवस्थाके लिये चिन्ता व्यक्त करते रहे। महन्त स्वामी गोविन्दाचार्यजी महाराज और बाघम्बरी स्वामी शान्तानन्दजी महाराज द्रवित हृदयसे कितनी ही बार पधारे और भगवत भागवत कृपाका वरदहस्त फेरते रहे। बड़े भैया पं० श्रीरामशर्मा अस्वस्थ और असमर्थ होते हुए भी करुणाविगलित हृदयसे बराबर जब तब आते रहते हैं और धीरज बँधाते हैं। झूंसीके पण्डित रामकृष्ण शास्त्री और बड़ास्थान तुलसीदासके महन्त जी और विशेषकर स्वामी सन्तदासजी तथा पण्डित मूलचन्द मालवीयको मेरी चिन्ता रही। श्री रामदेशिक संस्कृत विद्यालयके प्रिंसपल पण्डित सीतारामाचार्य, प्रधानाध्यक्ष स्वामी रामवदनजी शुक्ल, विद्वान जी, पं० लक्ष्मीदत्त जी, पण्डित देवनारायण शोकहा शास्त्री जी, पं० शेषनारायण शोकहा जी, महन्त हरिवंशाचार्य जी आदिने जो बराबर कृपापूर्वक शुभचिन्तना दिखाई है वह भूलने की वस्तु नहीं। वरदहाके वैद्य जयनारायण जी बराबर आते रहे। महामना निरालाजी बीमार सुनते ही दौड़े हुए आये और चाहा कि उनके अनुयायी शिष्य शुक्ल जीको लाकर सेवा करें। श्रीमान निर्मलजी कई बार आये और स्वास्थ्यकी चिन्तना की। पण्डित शेषनारायण शोकहा, पण्डित सिद्धिनाथ दीक्षित, पण्डित वासुदेवराव गोखलेजी, श्री लल्लूजी, पण्डित गिरीशजी, पं० मनबोधनलालजी, पं० प्रभात शास्त्री, बाबू बलदेवप्रसाद गुप्त, पण्डित प्रतापनारायण चतुर्वेदी, पण्डित जयगोपाल मिश्र, पं० शिवगोपाल मिश्र, पण्डित जयविशाल अवस्थी, पं० श्रीधर शास्त्री, पण्डित बाबूराम शास्त्री, बाबू उमाशङ्करजी पत्रकार, पण्डित उमाशङ्कर मिश्र, पण्डित सत्यनारायण शुक्ल, पण्डित रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री, पं० रामकीर्तिजी, पण्डित जयनारायण पांडेय, पं० द्वारकाप्रसाद दीक्षित, पण्डित सीताराम गुंठे आदि मित्रोंको मेरे स्वास्थ्यकी बराबर चिन्ता रही। मकरन्दनगरके वैद्य पण्डित शिवकुमार अग्निहोत्री जीने कई दिन यहां ठहरकर

सेवा की। हकीमोंमें श्रीमान हकीम अहमद उसमानी जीकी सहानुभूति भूलने योग्य नहीं। डाक्टरोंमें डा० ब्रजबिहारीजी, डाक्टर गोरेसाहब, डा० विश्वनाथ मिश्र, डाक्टर पांडेयजी, डाक्टर झा महोदय तथा डाक्टर घोष और अन्तमें सिविलसर्जन चटर्जी महोदयके उपकारको मैं भूल नहीं सकता। होमियोपैथीके चिकित्सकोंमें चि० फूलचन्द शुक्लकी चिन्ता अगाध रही और डाक्टर उमाशङ्कर, डाक्टर महाबीरप्रसाद श्रीवास्तव, डाक्टर दीनानाथ जी, डाक्टर सेवाशङ्करजी और डाक्टर बाबूलाल जीका मैं कृतज्ञ हूँ। आयुर्वेद प्रचारिणी सभाके सदस्य कृपाकर दो बार मेरे घर एकत्र हुए और मुझे विश्वास दिलाया कि आपके रहते हुए आपके सहयोगसे और आपके न रहने पर भी आपके दिखाये मार्गसे प्रयागमें आयुर्वेदका आन्दोलन चलता रहेगा। यही नहीं ब्रह्मचारी जी द्वारा प्रदर्शित आपकी जयन्तीके दिन प्रस्तावित 'श्री भरद्वाज आयुर्वेद विज्ञानपीठ" का काम भी आगे बढ़ानेका प्रयत्न होता रहेगा। पण्डित रुद्रमणि त्रिपाठीजी, पं० ताराशंकर मिश्रजी, पं० प्रतापनारायण चतुर्वेदी, पं० प्रतापनारायण पाठकजी, पण्डित माताशरणजी वैद्य, पं० श्रीपतिजी त्रिपाठी, कटराके पण्डित नरोत्तम मालवीय, पण्डित देवनारायण मिश्रजी, पण्डित विश्वनाथजी, पण्डित महेन्द्रनाथजी, कविराज ताराचरणजी, पण्डित रामावतारजी, पण्डित ब्रजनाथ तिवारी जी, पण्डित राधेश्यामजी, वैद्यनाथ आयुर्वेदभवनके वैद्य पण्डित मुरलीधरजी, गुरुकुलके वैद्य पं० नवरत्न आयुर्वेदालङ्कार जी, श्रीकृष्ण जायसवालजी, पण्डित सुरेन्द्रदत्त तिवारीजी, पं० शिवप्रसाद त्रिपाठी, पं० रामचन्द्र त्रिपाठीने रोगनिर्णयके परामर्शमें जो सहयोग दिया, उसके लिये मैं उनका कृतज्ञ हूँ। पं० ब्रह्मानन्द पांडेय और पं० शंकरदत्त सारस्वतके प्रति मैं कहां तक कृतज्ञता प्रकट करूँ। इन्हें तो निरन्तर मेरी चिन्ता रहती थी। औषधिके सम्बन्धमें, इञ्जेकशनके सम्बन्धमें प्रत्येक अन्य बातोंमें भी इनकी सजगता मेरे जीवनके संरक्षण रूपमें थी। क्वाथ, स्वेदन और लेपकी वस्तुएँ जङ्गलसे लाकर उन्हें तैयार करनेमें पं० कान्ताप्रसाद पांडेयने परिश्रमके साथ जो तत्परता दिखायी वह मेरे गहरे हृदयके अन्तर्पट तक समायी हुई है। पं० वेणीमाधव द्विवेदी, वैद्य डाक्टर श्रीकृष्णशर्मा, पं० महादेवप्रसाद पाठक, पण्डित बलदेवझा, कविराज हरेन्द्रनाथ गांगुली, इंसपेक्टर वैद्य पटवर्धनजी, प्रिंसपल श्री केदारनाथ गुप्तजी समय समय पर उपस्थित होकर जो परामर्श देते रहे हैं उससे मुझे जीवन रक्षामें सहायता मिलती रही है। राजापुरके वैद्य पं० सरयूप्रसाद पांडेय कई बार आये और दवा भेजते रहे। पं० मोहनलाल जीने भी कृपा की। बिलासपुरके पं० लक्ष्मीनारायण ओझा, कलकत्तेके कविराज शक्तिचरणजी, काशीके श्री अत्रिदेव विद्यालङ्कारजी, सुलतानपुरके पं० बलराम त्रिपाठी और पण्डित गङ्गाप्रसाद पाण्डेय, प्रतापगढ़के पं० तुलसीराम शुक्ल, जबलपुरके पण्डित मोहनलाल पांडेय, खागाके पण्डित रामनिधि मिश्र, विजयीपुरके पण्डित रामगोपालजी कई बार आये। सुधानिधि द्वारा हाल पढ़कर नागपुरके पण्डित प्रयागदत्त शुक्ल दौड़े हुए आये और कई दिनों तक सेवामें रत रहे। रायगढ़के वैद्य पाठकजी, बैकुण्ठपुरके पं० शिवमङ्गलजी, बरगढ़के वैद्य पं० शिवदत्तजी, मुगलसरायके वैद्य श्री छेदीप्रसादजी, कानपुरके वैद्य पं० बालकृष्णजी, पं० शम्भूनाथ पांडेय और पण्डित कालीशंकर मिश्रजी, मझिलगांवके पं० शिवसागरजी, बेरवांके पण्डित देवराज दीक्षित जीने कृपा की। एकडलाके पं० चन्द्रभानु शास्त्री, पं० बालकराम त्रिपाठी, ठाकुर ओमप्रकाशसिंह, ठाकुर राजेन्द्रपाल सिंह, पं० अम्बादत्त त्रिपाठी शास्त्री, किशुनपुरके पण्डित रामनारायण एवं पं० ज्वालाप्रसाद अग्निहोत्री, पण्डित विद्याधर अग्निहोत्री, पण्डित नरेशचन्द्र मुन्नू अग्निहोत्री, पं० केदारनाथ मिश्र, पं० भानुप्रकाश पांडेय, सेठ लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, फतेहपुर कांधीके पं० राधाकृष्ण सेठ जी, फतेहपुरके पं० ताराचन्द्र शुक्ल, पं० शरच्चन्द्र शुक्ल, प्रतापगढ़के पं० दुर्गाशङ्कर शुक्ल, पं० तुलसीराम शुक्ल, मानिकपुरके प्रिंसपल

मूलचन्द्जी जसराके प्रिंसपल सत्यनारायण सिंह तथा ठाकुर जयनारायण सिंह, असनीके पं० अमरनाथ पांडेय, दारागञ्जके मास्टर रामनाथ गुप्त, पण्डित जल्लीप्रसाद पांडेय, श्रीमती शकुन्तलाजी सिरोठिया, श्री पण्डित बद्रीप्रसाद आचार्य, फतेहपुर पं० महाबलीप्रसाद मिश्र काथू, पण्डित काशीप्रसाद तिवारी, पं० शिवराम तिवारी सिलमी, लखनऊके पं० रामदेव त्रिपाठी, सुलतानपुरके पं० गङ्गाप्रसाद पांडेय आदिने पधारकर जो कृपा की वह भी स्मरणीय है। पत्र द्वारा कई मित्रोंने चिन्ता प्रकट कर हाल पूछा और बहुमूल्य सलाह दी। उनमें झांसीके पं० रामानारायण शर्मा जीके आश्वासनपूर्ण पत्रने हिम्मत बँधाई है। कानपुरके पं० रामेश्वर मिश्र वैद्य शास्त्री, दिल्लीके कविराज आशुतोष मजूमदार, पं० ॐकारप्रसाद वैद्य, लखनऊके पण्डित सुरेन्द्रनाथ दीक्षित दमोहके पं० पांडुरङ्ग शेंड्ये, बम्बईके पं० प्रतापकुमारजी, राजस्थानके पं० योगीन्द्रदत्त जी, बांदाके पं० वंशगोपाल मिश्र, पञ्जाबके पण्डित जगन्नाथ पुच्छरत, कनखलके पं० गङ्गाधर शास्त्री बरेलीके पं० मदनमोहन द्विवेदी जी, गुरुकुलके श्री रामेशवेदीजी, बक्सरके पं० गिरिजादत्तजी पाठक, कानपुरके पं० सत्यनारायणजी, आजमगढ़के पण्डित यमुनादत्त शर्मा जी, बम्बईके पं० कन्हैयालाल भेडा और पं० अमोलकराम मिश्र, जामनगरके पण्डित गणेशदत्त सारस्वत और पं० विनोदशङ्कर अवस्थी, मुंगेरके पं० कृपाशङ्कर अवस्थी, मुजफ्फरपुरके पण्डित राजीवलोचन पांडेय वैद्य हाजीपुरके पं० देवकीनन्दन अवस्थी, शिवरीनारायणके पण्डित कौशलप्रसादजी, रायगढ़के पं० लोचनप्रसाद पांडेय, झालू बिजनौरके आचार्य धन्वन्तरिजी और उज्जैनके पद्म श्री पण्डित सूर्यनारायण व्यास जीके पत्र विशेष आत्मीयतापूर्ण और सहानुभूतिवर्धक हैं। इन सबोंका मैं कृतज्ञ हूँ और सोच रहा हूँ कि जहाँ अधिकांश वैद्यबन्धु और साहित्यिक मित्र अपनी समस्यामें मस्त उलझे हुए रहते हैं; तहां हमारे ऐसे दुःखी और सहानुभूतिके भूखे सन्तप्त दुःखियोंको आश्वासन देनेवाले भी कम नहीं हैं। यह मेरा व्यक्तिगत चर्खा बहुत अधिक चला इसे एक दुःखी-जनकी हार्दिक व्यथाका निवेदन समझ क्षमा करेंगे। मुझे इस बातका साभिमान सन्तोष है कि इलाहाबाद और फतेहपुर जिलेके विशेषकर मेरे जन्मभूमि और आदि भूमिके सभी वैद्य, साहित्यिक और देशहितैषियोंने मेरे सम्बन्धमें विशेष आत्मीयताके साथ चिन्ता व्यक्त की है।

अखिल भारतीय शास्त्रचर्चा परिषद्

पिछली बातें—विगत मासमें अखिल भारतीय शास्त्रचर्चा परिषदका तृतीय अधिवेशन राजस्थानके रतनगढ़ स्थानमें हुआ था। इसका सूत्रपात तो पहले काशीमें स्वर्गीय पण्डित यादवजी त्रीकमजी आचार्यके प्रयत्न और स्वर्गीय पण्डित वामनशास्त्रीदातारके उद्योग से महामना पण्डित मदनमोहन मालवीयके संरक्षणमें सन् १९३५ में हुआ था, जिसमें यह निश्चय हुआ था कि वात-पित्त-कफ वैज्ञानिक हैं। इसके पश्चात श्री यादवजी भाईकी प्रेरणासे श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद-भवनके पं० रामनारायणशर्मा और पं० रामदयालु जोशी जीकी उदार सहायतासे पटनामें पहला अधिवेशन सन् १९५० में हुआ जिसमें त्रिदोषके स्वरूप आदिका और पञ्चमहाभूतका वैज्ञानिक विवेचन और आधुनिक शास्त्र समन्वयके साथ हुआ था। इसके पश्चात दूसरा अधिवेशन सन् १९५३ के मई मासमें पं० यादवजी त्रीकमजी आचार्यके ही सभापतित्वमें हरिद्वारमें हुआ। जिसमें आयुर्वेदके रस-गुण-वीर्य-विपाक और प्रभावके सम्बन्धमें विचार हुआ। इसके पश्चात श्री यादवजी भाईके स्वर्गवासके कारण बाधा उपस्थित हुई। उचित तो यह था कि अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलनने

जैसे सन् १६५० में शास्त्रचर्चा परिषदका प्रस्ताव स्वीकार किया था उसी प्रकार इस कार्यको अपने द्वारा आरम्भ करता और नहीं तो श्री वैद्यनाथ आयुर्वेदभवनवालोंको प्रोत्साहित कर इस कार्यको बढ़ानेका अग्रेसरत्व करता; किन्तु वह बाकायदा इस कार्यमें सम्मिलित भी नहीं हुआ ! आखिर पं० रामनारायणशर्मा और पं० रामदयालुजी जोशीमें ही श्री यादवजी भाईके आत्माकी मानो प्रेरणा हुई और उन्होंने अपने शिर पर फिर इस भारको लेकर हरिद्वारके निश्चयके अनुसार आयुर्वेदिक शारीर संज्ञा शब्दार्थ विनिश्चयका कार्यक्रम अपना लिया। उनकी ओरसे पं० चन्द्रभानुजी शास्त्रीने पांच वर्ष परिश्रम कर शब्दोंका संग्रह आयुर्वेदिक संहिताओंका मन्थन कर तैयार किया। यह आवश्यक था कि इस सूची पर अन्य विद्वानोंकी भी सम्मति ली जाय। इस विचारसे पिछले जुलाई मासमें १० दिनों तक दिल्लीमें कुछ विशेषज्ञों द्वारा विचार हुआ। यह भी निश्चय हुआ कि शास्त्रचर्चा परिषदका तृतीय अधिवेशन कर अधिक विद्वानों द्वारा इस पर विचार हो।

तृतीय अधिवेशन—राजस्थान रतनगढ़के पं० मणिराम शर्मा द्वारा संस्थापित श्री धन्वन्तरि संस्थानमें तृतीय अधिवेशन नवम्बर महीनेमें सम्पन्न हुआ। उन्हीं दिनों वहां राजस्थान प्रान्तीय वैद्यसम्मेलनका भी अधिवेशन था। अतः राजस्थानीय विद्वानोंका भी सहयोग सहज प्राप्त हुआ। श्री धन्वन्तरि पूजन और वैदिक वन्दनाके पश्चात् श्री वैद्यनाथ आयुर्वेदभवनके सञ्चालक पण्डित रामनारायण शर्मा जीने उपस्थित विद्वानों और जनताका स्वागत किया। आचार्य श्री यादव जीका उल्लेख करते हुए आपका गला भर आया। आगे आपने कहा कि आयुर्वेदिक चिकित्सा क्षेत्रमें शारीर ज्ञानका विषय सर्वोपरि माना गया है। हमारे देशके प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू भी कह रहे हैं कि जिस चिकित्सकको शरीररचना और शारीर क्रियाविज्ञानका भरपूर ज्ञान न हो, वह चिकित्सा करनेका अधिकारी नहीं। कुछ आधुनिक शिक्षितोंकी धारणा है कि वैद्योंको शारीरज्ञान नहीं होता। हम इस प्रयत्न द्वारा वह भ्रमपूर्ण धारणा मिटा देना चाहते हैं। अपनी संहिताओंकी खोजकर संज्ञा संग्रह करें फिर यथावश्यक आयुर्वेद शैली पर नवीन संज्ञा निर्धारण कर अपने शारीर विषयको आधुनिकता पूर्ण करलें। पांच वर्षोंके चिन्तन-मनन और विद्वानोंके परामर्श सहित वह प्रयत्न आप लोगोंके समक्ष पुनर्विचारके लिये प्रस्तुत है। इससे यह अनुभव होगा कि आयुर्वेद ग्रन्थोंमें शारीर विषयका कितना विशुद्ध ज्ञान विद्यमान है। शारीर संज्ञा विनिश्चयमें मुख्य दृष्टिकोण यह रखना है कि प्राचीन ग्रन्थोंमें प्रसङ्गानुसार किस अर्थमें कौनसा शब्द प्रयुक्त हुआ है। आगे उसके प्रयोगमें कहां तक अर्थ भिन्नता प्राप्त होती है। कौनसा शब्द प्राचीन अर्थ और प्रयोगमें ध्यानमें रखते हुए आधुनिक विज्ञानके किस शब्दके समकक्ष रखा जा सकता है। यह भी निश्चय करना आवश्यक होगा कि भविष्यमें नवीन साहित्यमें अमुक शब्दका यथार्थ प्रयोग अमुक अर्थमें किया जाना चाहिये। इससे हमारे साहित्यमें एक समता लायी जा सकेगी और विद्यार्थी भिन्नताके भारसे बच सकेंगे। हम पहले शरीर रचना सम्बन्धी संज्ञा निर्णय कर सकेंगे।

उद्घाटन और अध्यक्षका भाषण—

इस अधिवेशनके संयोजक पण्डित चन्द्रभानुशास्त्री जीके प्रस्ताव पर राजस्थान सरकारके आयुर्वेदविभागके सञ्चालक भिषगाचार्य पण्डित प्रेमशङ्कर शर्मा जीने संस्कृतमें उद्घाटन भाषण करते हुए लोगोंको अनुभव कराया कि राजस्थानके वैद्य समुदायकी स्थिति और आयुर्वेदका भविष्य निश्चित रूपसे उज्ज्वल है। इनके नेतृत्वमें राजस्थानका आयुर्वेदविभाग अन्य प्रदेशोंके लिये अनुकरणीय आदर्श उत्पन्न करेगा। इस अधिवेशनके समय आप हर समय सक्रिय देखे गये। पं० मणिराम जीके प्रस्ताव और पण्डित जगदीशप्रसाद शर्माके समर्थन पर वाराणसी विश्वविद्यालयके शारीराध्यापक आचार्य श्री दामोदरशर्मा गौड़ने सभापतिका आसन ग्रहण किया। सभापतिका परिचय और उनके गहरे अध्यापनका परिज्ञान आयुर्वेद महाविद्यालय जामनगरके प्राध्यापक पण्डित रघुवीरप्रसाद त्रिवेदीने कराया। सभापति जीने अधिवेशनकी विचार प्रणाली

पर प्रकाश डालकर कहा कि प्रकाशित शब्द सूची शीघ्रतामें सम्पादित की गयी, अतः अनवधानतावश उसमें अनेक अशुद्धियां हो गयी हैं सूचीके हिन्दी विवरण पर ध्यान दें आप प्रस्तुत शब्द सूची पर नये सिरेसे ही विचार करें। अनावश्यक विवाद न कर पुनरावृत्तियोंको बचाते हुए कार्य किया जाय।

कार्यारम्भ—शब्द सूची पर विचार आरम्भ हुआ। समितिमें मुख्य २५ विद्वानोंने तथा राजस्थान सम्मेलनमें पधारे हुए अनेक विद्वानोंने बड़ी रुचि और उत्सुकता पूर्वक सहयोग किया। स्थानीय वैद्य और डाक्टर भी सम्मिलित होते रहे। दिनमें तो काम होता ही था, रातमें अतिरिक्त बैठकोंका आयोजन किया जाता था। ८ नवम्बरको राजस्थानके उपस्वास्थ्यमन्त्री आयुर्वेदप्रेमी माननीय श्री भीकाभाई जी भी पधारे और पर्याप्त समय तक शास्त्रचर्चा परिषदकी कार्यवाहीका अवलोकन करते रहे। आपने कहा कि आप लोगोंका कार्य देखकर मैं निश्चित रूपसे बहुत उत्साहित हुआ हूं। आप लोग प्राचीन ऋषियोंकी परिषदोंके समान कार्यवाहीमें संलग्न हैं। श्री वैद्यनाथ प्रतिष्ठानके सञ्चालकोंने यह महत्वपूर्ण आयोजन कर प्राचीन परम्पराको पुनर्जीवित करनेका उद्योग किया है। यह वैद्योंके लिये ही नहीं भारतीय संस्कृतिके हर उपासकके लिये गर्वका विषय है। प्राचीन ऋषिगण आयुर्वेदका अनुसन्धान करनेमें अपना सब कुछ भूलकर तन्मय होकर शास्त्र मन्थन किया करते थे। उसीके फलस्वरूप आयुर्वेद बहुमूल्य रत्नोंसे भरे पूरे सागरके सदृश विद्यमान है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि आप लोग सागरमें गहरी डुबकी लगाकर ऐसे रत्न खोज लावें जिससे आयुर्वेदका प्राचीन गौरव प्रकाशित हो इस शास्त्रानुसन्धानका आयोजन करनेके लिये मैं श्री वैद्यनाथ आयुर्वेदभवनके सञ्चालकोंको फिर धन्यवाद देता हूं। आप लोगोंका कार्य देखकर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूं कि आयुर्वेदानुसन्धानके लिये यही दृष्टिकोण सत्य और अनुकूल है। इसका विशिष्ट ऐतिहासिक महत्व है। वैद्यनाथ आयुर्वेदभवनके इस प्रयाससे आयुर्वेदका बहुत गौरव बढ़ेगा। यह अकाट्य तथ्य है कि भारत जैसे देशके लिये आयुर्वेद ही स्वास्थ्यरक्षाका सर्वोपरि माध्यम है। एलोपैथी अन्य देशोंके लिये भले ही कदाचित उपयुक्त रही हो; परन्तु भारतकी स्वास्थ्यरक्षाका समाधान करनेमें वह समर्थ नहीं हो सकी। तथा आयुर्वेद निश्चित रूपसे वह शक्ति रखता है और वह भारतकी बहुसंख्यक जनताकी आज भी सेवा कर रहा है। वैद्यगण भी इस बातसे इनकार नहीं कर सकते कि वर्तमान समयकी बदली हुई परिस्थितियों और मनुष्य जीवनकी परिवर्तित गति और रुचियां देख आयुर्वेदमें नवीनता लानेकी परम आवश्यकता है। इसके लिये आयुर्वेद साहित्यका मनन करके सुयोग्य वैद्योंको आधुनिक आयुर्वेदका निर्माण करना चाहिये। आयुर्वेदके लिये सरकार अपने साधनोंसे जो कुछ कर रही है, वह कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं है। यह काम निश्चित रूपसे वैद्योंका है कि वे स्वयं आयुर्वेदके लिये त्याग भावनाके साथ सचेष्ट होकर कुछ ऐसा सक्रिय कार्य करें जिसको देखकर सरकार आयुर्वेदोत्थानके लिये अधिक प्रेरित हो। आप विश्वास करें कि आयुर्वेदकी प्रतिष्ठाका समय निरन्तर निकट आ रहा है। इस अनुकूलताका परिश्रम पूर्वक लाभ उठाना आपका काम है। इस परिषदके द्वारा आप लोग जैसा उद्योग कर रहे हैं, वैसा ही आयुर्वेदके हर एक अङ्गके लिये किया जाना चाहिये। इस दिशामें वैद्यनाथके प्रयत्न केवल प्रशंसनीय ही नहीं अनुकरणीय भी हैं। अधिक अच्छा हो कि वैद्यसमाज सामूहिक रूपसे शास्त्रानुसन्धानके इस प्रयत्नमें सहयोग दे।

परिषदके निश्चय—परिषदके निश्चयके पहले पण्डित मणिराम जीके आग्रहसे एक दिन सब लोग सरदारशहरकी विश्वभारती संस्थाको देखने गये। संस्थाका आयोजन और व्यवस्था देखकर सभी विद्वानोंने सन्तोष प्रकट किया। सरकारी संस्था गांधी विद्यामन्दिर देखकर भी लोग कृतकृत्य हो गये। कविराज उपेन्द्रनाथदास जीने कामना की कि विश्वभारतीको आयुर्वेद विश्वविद्यालयके रूपमें परिणत किया जाय तो उसके लिये अधिक अनुकूल स्थिति है। पण्डित प्रेमशङ्कर जी राजस्थानमें विश्वविद्यालय स्थापित

करावें। पण्डित प्रेमशङ्कर जीने राजस्थानकी आयुर्वेद सम्बन्धी राजकीय गतिविधियोंका विवेचन किया। यदि वैद्यजन कोई ठोस योजना प्रस्तुत कर सकें तो राजस्थान में राजर्षि एवं विश्वभारत के संस्थापकोंके सम्मिलित प्रयत्नोंसे आयुर्वेदका एक आदर्श विश्वविद्यालय स्थापित हो सकेगा। शास्त्रचर्चा परिषदके विद्वानोंने १२ बैठकें कर १०० शरीरावयववाचक संहिता शब्दोंके अर्थ एवं प्रयोग प्रसङ्गानुसार निश्चित अर्थसूचक आधुनिक विज्ञानके समानार्थक निश्चित किये। यह भी निश्चय किया गया कि भविष्यमें हमारे किस शब्दको किस निश्चितार्थमें सर्वत्र एकसा प्रयुक्त किया जाय। चुनारके सुप्रसिद्ध वैद्य हकीम दलजीत सिंह जीने आयुर्वेदीय संहिता शब्दोंके समानार्थक यूनानी शारीर शब्दोंको प्रस्तुत किया। लगभग डेढ़ सौ नवीन शब्द उपस्थित हुए; उनके लिये निश्चित हुआ कि निश्चितार्थ शब्दोंकी सूचीके साथ और शब्द अष्टांगसंग्रहसे भी खोजकर सन्दर्भ, निश्चितार्थ, यूनानी और आंग्लपर्यायके साथ पुनः प्रकाशित किया जाय। इस कार्यका भार आचार्य श्री दामोदरशर्मा गौड़, प्राणाचार्य श्री गोडवोले शास्त्री और श्री चन्द्रभानु शास्त्रीको सौंपा गया।

समावर्तन-सन्मान—इस समारोहका समावर्तन संस्कार राजस्थानके स्वास्थ्यमन्त्री माननीय श्री बद्रीप्रसादजी गुप्तकी प्रधानतामें सम्पन्न हुआ। आपने आध घण्टे तक मनोयोग पूर्वक कार्यानुशीलन किया। पण्डित रामनारायण शर्मा जीने प्रसन्नता प्रकट की कि शास्त्रकार्यमें लोगोंकी रुचि बढ़ रही है। इससे इस कार्यको आगे बढ़ानेमें हमें अभूतपूर्व आत्मसन्तोषका अनुभव हो रहा है। हम सरकार और आयुर्वेदानुसन्धानमें रुचि रखनेवालोंके सम्मुख यह प्रस्तुत करना चाहते हैं कि आयुर्वेदके अनुसन्धानकी यथार्थ दिशा और दृष्टिकोण क्या है? आयुर्वेदके विकासके निमित्त सर्वप्रथम आयुर्वेदके शास्त्रोंका मन्थन होना चाहिये और आधुनिक आयुर्वेदके सर्वाङ्ग पूर्ण वाङ्मयका निर्माण होना चाहिये। विद्वज्जनोंके सहयोगसे ही यह प्रयास सफल हो सकता है। शास्त्रचर्चा परिषदके प्रयत्न से आशा और विश्वास है कि शारीरज्ञान परिवर्धित और स्पष्ट होगा। जिससे हमारे नये इतिहासका निर्माण होगा। इसके उपरान्त हम वनस्पतिशास्त्र पर कार्य करना चाहते हैं। श्री वैद्यनाथ आयुर्वेदभवनकी परम्परा है कि आयुर्वेदशास्त्रके उत्थानहित सक्रिय विद्वानोंको सम्मानित किया जाय। शरीरशास्त्रके ११ विद्वानोंको दिल्ली अधिवेशनमें स्वर्णपदकोंसे सम्मानित किया गया था यहां भी परिषदके कार्यमें सचेष्ट और महत्वपूर्ण योग देनेवाले विद्वज्जनोंको सम्मानित कर रहे हैं। आयुर्वेदमें गम्भीर अध्ययन मनन और विचार परम्पराको प्रोत्साहन देनेके लिये यह आवश्यक है कि प्रतिभाशाली-अध्ययनशील और मौलिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करनेवाले आयुर्वेद शास्त्रज्ञोंको समय समय पर सम्मानित किया जाय। यह व्यक्तिके द्वारा सम्मान नहीं। प्रत्युत ज्ञानका भावना श्रद्धाके द्वारा सम्मान है। इस प्रकार (१) आयुर्वेदाचार्य गणजितरादेसाई सूरत (२) वैद्य-हकीम दलजीत सिंह आयुर्वेदाचार्य चुनार (३) राजवैद्य पं० प्रल्हादरामजी सीकर (४) कविराज विजयकाली भट्टाचार्य कलकत्ता और (५) कविराज ज्ञानभास्कर पाण्डेय जामनगरको स्वास्थ्यमन्त्री जीके हाथों स्वर्णपदकसे विभूषित किया गया। प्राणाचार्य श्री गोडवोले जीको दिल्लीमें स्वर्णपदक भेंट किया गया था। यहां उन्हें महावस्त्रसे सम्मानित किया गया। आपके पधारते ही परिचय पाकर उपस्थित वैद्य गर्वका अनुभव करने लगे। पण्डित विजयकाली भट्टाचार्यने स्वास्थ्यमन्त्र द्वारा धन्वन्तरि संस्थान स्थापक पण्डित मणिरामजी शर्मा और शास्त्रचर्चा परिषदके आयोजक पं० रामनारायणजी शर्माको संस्कृतमें अभिनन्दनपत्र समर्पित कर सम्मानित किया। पण्डित मणिरामजी पण्डित रामनारायण जीके गुरु रह चुके हैं। अतएव गुरु शिष्य को सम्मानित होते देख खूब करतल ध्वनि हुई। पण्डित रामनारायण जीने संस्कृतमें आभार माना।

स्वास्थ्यमन्त्री जीका भाषण और आभार

प्रदर्शन—स्वास्थ्यमन्त्री जीने उद्बोधक भाषणमें कहा कि आज आयुर्वेदमें अनुसन्धान सब चाहते हैं। प्राचीन ज्ञानको पुनरुज्जीवित करनेके लिये जो प्रयत्न पण्डित

रामनारायणजी कर रहे हैं इस पर मुझे उन पर गर्व है क्योंकि वे इसी प्रान्तके हैं। उनका यह अन्वेषणका आयोजन महत्त्वपूर्ण कदम है। आजके विद्वान नये युगके अनुरूप अन्वेषण करें। जिससे आधुनिक लोगोंका आकर्षण हो। जब तक वैज्ञानिक आधार पर आप लोग परीक्षण करके आयुर्वेदकी श्रेष्ठता नहीं सिद्ध कर देंगे तब तक इस प्राचीन विज्ञानको प्रधानता नहीं मिलेगी। हालमें मेडिकल कानफरेंसने मांग की है कि सरकार भारतमें एक ही चिकित्सा प्रणालीको मान्यता देवे। डाक्टर बहुत दिनोंसे कह रहे हैं कि एलोपैथीके समान अन्य कोई पद्धति वैज्ञानिक नहीं है। केन्द्रीय और प्रान्तीय स्वास्थ्यमन्त्री चाहते हैं कि किसी एक प्रणालीको मान्यता देना कदापि न्यायपूर्ण और उपयोगी नहीं है। जनताके स्वास्थ्यरक्षणमें महत्त्वपूर्ण योग देने वाली सभी पद्धतियां समान हैं प्रत्येक प्रणालीको गुणावगुणके अनुसार अपनी उपयोगिता सिद्ध करनेका समान अवसर है। राज्यने आयुर्वेदके लिये काफी दिया है। देशकी जो सेवा अब तक आयुर्वेदसे हुई है वह बहुत बड़ी सेवा है। हम आयुर्वेद को भुला नहीं सकते। परन्तु समयकी आवश्यकताकी ओर सजग होना अपना कर्तव्य है। पुराने शास्त्रोक्त ज्ञानको आजके युगानुरूप उपयोगिताकी दृष्टिसे परिमार्जित किये बिना आयुर्वेदको कायम नहीं रख सकते। निस्सन्देह आजकल आयुर्वेद गम्भीर परीक्षाकालमें गुजर रहा है। ऐसे समय वैद्योंके सुसङ्गठित क्रियात्मक अभियानकी आवश्यकता है। आपके इस ठोस प्रयाससे आयुर्वेदका भविष्य उज्वल होगा। यह एक व्यक्ति नहीं आयुर्वेदजगतके अधिकाधिक लोगोंको विशेष ध्यान देना चाहिये। अपने कार्यके फलको आप प्रकाशमें लायें तो राज्यका सहयोग भी मिलेगा। मैं चाहता हूं कि आयुर्वेदकी शोधके लिये इस परिषदकी भांति एक स्थायी संस्था होनी चाहिये जो निरन्तर कार्य करती रहे। राजस्थानमें हम ऐसी एक स्थायी समिति बनाना चाहते हैं, आप लोग हमारी मदद की जये। आयुर्वेद हमारी संस्कृतिका अविच्छिन्न अङ्ग है। अतः आपके प्रयाससे आयुर्वेद ही नहीं भारतीय संस्कृतिकी भी सेवा होती है।

पण्डित चन्द्रभानु शास्त्री जीने पं० मणिरामशर्मा तथा शास्त्रचर्चा परिषदमें जुटे हुए विद्वानों एवं सहानुभूति पर और सुझाव भेजने वाले सज्जनोंको धन्यवाद दिया। साथ ही कहा कि शीघ्र ही सुसम्पादित और पूर्ण शब्द सूची प्रकाशित की जायगी। आगामी प्रकाशनके रूपके विषयमें विद्वानोंको सुझाव देना चाहिये। संस्कृत संज्ञा शब्दके साथ आंग्ल पर्याय देनेसे एक तो यह सिद्ध होगा कि आयुर्वेदमें शारीर विषय निर्बल नहीं है। साथ ही नवीन स्नातकोंको प्राचीन साहित्य समझने में सुविधा होगी। आगे हम मूल शब्द, सन्दर्भ संकेत, सन्दर्भ वचन, निरुक्ति, आंग्लपर्याय, यूनानी पर्याय, यूनानी विवरण, हिन्दी विवरणके साथ सूची प्रकाशित करेंगे। इस प्रकार शास्त्रचर्चा परिषदका कार्य सोल्लास और सफलताके साथ सम्पन्न हुआ।

बेगूसरायकालेजमें निरंजनदेव

बेगूसराय (मुंगेर) के श्री अयोध्या शिवकुमारी आयुर्वेदकालेजमें गुरुकुलकांगड़ी आयुर्वेदकालेजके यशस्वी प्रिंसपल पण्डित निरञ्जनदेव जीका शुभागमन हुआ। स्टेशनमें शानदार स्वागतके बाद एक जलूस द्वारा वे यहांके प्रिंसपल पण्डित ब्रह्मदत्तजी आयुर्वेदालङ्कार जीके भवन तक पहुँचाये गये। आपका शुभागमन यहां त्रिदोष सम्बन्धी व्याख्यानमालाके सिलसिलेमें हुआ। पहले आयुर्वेदकालेजके सब विभागोंका आपने निरीक्षण कर सुचारु प्रबन्ध देख परम सन्तोष प्रकट किया। रुग्णालय, शल्य-शालाक्यविभाग और कायचिकित्साके प्रबन्ध और आयुर्वेदिक औषधियों और साधनोंके पर्याप्त प्रयोगोंको देख आपने विशेष प्रसन्नता

श्रीधन्वन्तरयेनमः

आयुर्वेदज्ञों द्वारा आयुर्वेदका सर्वनाश !!!

एक भावनापूर्ण लेख

लेखक—
आयुर्वेदबृहस्पति, आयुर्वेदमार्तण्ड
राजवैद्य पं० ख्यालीराम द्विवेदी D. Sc. A.
इन्दौर

सुधानिधि प्रेस प्रयाग

आयुर्वेदज्ञों द्वारा आयुर्वेदका सर्वनाश !!!

—:०:—

(आयुर्वेद बृहस्पति पं० ख्यालीरामजी द्विवेदी D. SC. A. आयुर्वेदमार्तण्ड इन्दौर)

आयुर्वेद कालेजमें आयुर्वेदको दशा — २१ दिसम्बर दोपहरको दिनके दो बजे इन्दौरके एक आयुर्वैदिक कालेजमें छात्रोंका, स्नेह सम्मेलन था उस अवसर पर उनके निमन्त्रण और श्रीप्रिंसिपल महोदयके अनुरोध पर वहाँ गया। जाने पर वहाँके सुपरिण्टेण्डेण्टने, कहा कि आपको यहाँ कुछ बोलना चाहिये। वहाँ जो बोर्ड लगा था उस पर लिखा था। Fifth Medical Conference फिफ्थ मेडिकल कानफरेंस इस प्रकार अंग्रेजीमें ही लिखा था। इसे देखकर मैंने श्री प्रिन्सिपल साहबको भी बुलाया और कहा कि यह क्या ही रहा है? कैसा लिखा गया है? मेरेको यह देखकर दुःख हो रहा है कि इस तरह मेरे समक्ष आयुर्वेदका अपमान करते हुए सर्वनाश किया जा रहा है। जब कि यह आयुर्वैदिक कालेजके छात्रोंका ही पाँचवां स्नेह सम्मेलन हो रहा है तो यह "छात्रोंका पाँचवां आयुर्वैदिक स्नेह सम्मेलन" ऐसा हिन्दीमें ही लिखा होना चाहिये था। जहाँ आयुर्वेदका इस प्रकार अपमान किया जा रहा है वहाँ हम लोगोंका भी पूरा अपमान है। ऐसी स्थितिमें मैं यहाँ बैठना नहीं चाहता और यदि मैं यहाँ कुछ बोलूँगा तो इस सम्बन्धमें पर्याप्त रूपसे प्रकाश डालूँगा और उसमें आपके सम्बन्धमें भी बोला जायगा कि दोनोंके आयुर्वेदज्ञ होते हुए भी ऐसा क्यों किया जा रहा है? इस पर मेरे बोलनेके सम्बन्धमें उन्होंने विशेष अनुरोध नहीं किया। प्रिंसिपल साहबने मुझसे कहा कि मैं बोर्ड पर सुधार कर देता हूँ। बोर्ड पर फिफ्थ मेडिकल कांफरेन्सके ऊपर "श्रीअमुक आयुर्वैदिक कालेज" और लिख दिया। उन्होंने यह सुधार किया। उस सुधारे हुए को मैंने देख लिया और मनमें समझा कि "फिफ्थ मेडिकल कानफरेंस" में कोई सुधार नहीं किया गया है। इससे मेरे कहनेके उद्देश्यकी पूर्ति नहीं हुई है। ऐसा समझकर कुछ देर बैठा और वहाँ कान्फरेन्स शुरू हुई और मैं उठकर चल पड़ा। दोनों महानुभावोंने मेरे रुकनेके वास्ते बहुत अनुरोध किया किन्तु अन्तमें मैं चला ही आया। श्री प्रिंसिपल साहब मेरी मोटर तक रुकने के वास्ते समझाते आये। ये उनकी विशेष कृपा थी और उनका मैं आभारी हूँ; किन्तु यह कहकर कि, जिस स्थितिमें मेरे आयुर्वेदका विरोध व अपमान है वहाँ मैं कैसे बैठ सकता हूं, मैं प्रत्यक्षमें इस प्रकारका आयुर्वेदका अपमान नहीं देख सकता, अतएव चला आया। यह सब वहाँका दिग्दर्शक व सच्ची स्थिति हृदयको ठेस पहुँचानेवाली हैं।

आयुर्वेद नाशके कारण——

१—ऊपरके अनुसार आजकलके सुविज्ञ आयुर्वेद पर अधिकार रखने वाले आयुर्वेदको मेडिकलके समकक्ष लानेकी भूल करनेवाला कार्यक्रम करने वाले संचालक वैद्य महानुभाव भी आयुर्वेदका सर्वनाश कर रहे हैं।

२—भारतवर्षमें जितनी भी फार्मेसियाँ हैं उन फार्मेसियोंमें ९५ प्रतिशत फार्मेसियाँ आयुर्वेद पद्धतिको छोड़कर सस्ते मूल्य पर केवल कमानेकी ही दृष्टिसे अनुचित रूपसे औषधियाँ तैयार कर, सर्वसाधारणमें प्रचार कर विक्रय कर रही हैं। ये भी आयुर्वेदका सर्वनाश करनेका दूसरा कारण है।

३—औषधियाँ बनाने के हेतु कच्ची काष्ठ औषधियों को प्राप्त करनेमें ताजी चालू वर्षकी खुदी व संग्रहकी हुई समय पर मिलना असम्भव सा है। जहाँ १०-१० वर्ष ५-५ वर्ष ३-३ वर्ष पुरानीसे कम मिलना प्रायः असम्भव सा है। यहाँ हमारा शास्त्र और आजकलका विज्ञान भी यह निश्चित कर चुका है कि प्रतिवर्ष ताजी ही समय पर खुदी हुई लाकर ही उपयोगमें लेना चाहिये अन्यथा लेनेसे औषधियाँ काम नहीं कर सकती हैं। यह भी आयुर्वेदमें प्राथमिक रूपसे तीसरा आयुर्वेदके सर्वनाशका कारण है।

४—वर्तमानकी हमारी गवर्नमेण्ट भी आयुर्वेदको सर्वनाश करनेका चौथा कारण है कि जैसे आयुर्वेदके प्रति नगण्य रूपमें सहायता देना और वेंआयुदके प्रति बोगस योजनाएँ बनाकर प्रवञ्चना करना तथा शासकीय आयुर्वैदिक साधनहीन औषधालय, अपर्याप्त, अपूर्ण, नगण्य रूपके साधन

रहित शासकीय आयुर्वेदीय दवाखानोंका खोलना। कोई प्रान्तमें ही आयुर्वेदके स्वतंत्र डायरेक्टरोंको रखना। हमारे मध्यप्रदेशमें भी ज्वाइण्ट डायरेक्टर आयुर्वेद विभागके हैं। वो इसी प्रकार और प्रान्तोंमें भी हैं आयुर्वेदकी उन्नतिकी दृष्टिसे स्वतन्त्र कोई भी कार्य नहीं कर सकते हैं और दवाखानेके वैद्य उस जिलेका जो भी डी० एम० ओ० होता है उसके तत्वावधानमें ही दवाखाने चलाते हैं। वह उन शासकीय वैद्योंके प्रति एक न्युनसे भी न्यूनतम व्यवहार करते हैं। आयुर्वेदके प्रति घृणा उपेक्षाकी दृष्टिसे ही औषधालयके साथ व्यवहार किया जाता है। औषधियां आदि भी जितनी जिस व्यवस्था और विधिकी मिलना चाहिये वे नहीं मिलतीं और अपूर्ण अपर्याप्त मिलती हैं। ऐसी ही स्थिति प्रायः अन्य प्रान्तोंमें भी आयुर्वेद विभाग की है।

शासनके अधिकारीगण यह भी विधि शासकीय औषधालयोंमें फार्मेसियोंसे तैयार औषधियोंको खरीदनेके हेतु आवश्यक औषधियोंकी लिस्ट बनाकर बहुत सी फार्मेसियोंको टेण्डरके रूपमें तैयार कर भेजते हैं और उनसे उन औषधियोंके मूल्य और कमीशन आदि भराकर लिखाकर भेजते हैं। जिन फार्मेसियोंकी ओरसे कमसे कम मूल्य चढ़े हुए औषधियोंके होते हैं व ज्यादासे ज्यादा जो फार्मेसियां कमीशन देती हैं उन्हींके टेण्डर पास कर उन्हींसे औषधि मँगाते हैं। केवल पैसा कमानेकी ही दृष्टिसे जिन लोगोंने फार्मेसियाँ खोल रखी हैं और शास्त्रीय ढङ्गसे जिन औषधियोंका कम मूल्य लगे ऐसी असली औषधियोंके अनुसार तैयार कराकर जनपद आदिकी जो टेण्डर भेजते हैं उनके कार्यालयमें भेज देती हैं। औषधि कम मूल्यकी बनानेके कुछ उदाहरण रखता हूँ जैसे श्वास कुठार—केवल कोयला व कालीमिर्च घुटवाकर श्वासकुठार सरीखा रङ्ग रूप मिलाकर भेज देते हैं। जैसे कपूर रस जिसमें प्रधान गुण कारक चीज अहिफेन 'अफीम' होती है और उसमें हिंगुल मिलाना चाहिये तो हिंगुलकी जगह गेरू मिलाकर पानीमें घुटवाकर इन दो चीजोंसे रहित सस्ता कर्पूर रस तैयार कर असलीके रङ्ग रूपसे मिलाकर भेज देते हैं। जैसे त्रिभुवन कीर्ति रसादि और भी हिंगुलकी जगह गेरू, तुलसीकी भावना आदि रहित केवल जलमें घुटा हुआ रङ्ग रूप असलीसे मिलाकर सस्तेसे सस्ते भाव लगाकर टेण्डरोंको भिजवा देते हैं और अलगसे भी लिखित कमीशनके अतिरिक्त कलर्क आदिकी भी प्रसन्नता सम्पादनका प्रयत्न करते हैं। ये भी एक शासनकी अनुभव शुन्यता और आयुर्वेदके सर्वनाशकी एक प्रक्रिया है।

शासन द्वारा सब प्रकारसे जाँचकी हुई और विश्वसनीय शास्त्रीय ढङ्गसे जिस फार्मेसीमें औषधि बनती हों वहींसे माल खरीदना आवश्यक है। यह शासनके ध्यानमें रहनेकी बात है। तभी आयुर्वैदिक सच्ची औषधि प्राप्त हो सकती है और आयुर्वेद जीवित रह सकता है।

५—पाँचवां आयुर्वेदके विनाशका कारण, आयुर्वेद जगतके कुछ आयुर्वेदज्ञ वैद्य महानुभाव भी हैं जो कि प्रायः एक रुपयेमें १४ आ० १५ आ० ऐलोपैथिक दवाइयाँ ही उनके नाम पलट पलट कर अपनी पेटेण्ट दवाइयाँ ही घोषित कर चिकित्सा क्षेत्रमें चिकित्सा करते हैं और उनका एक लक्ष्य विशेष रूपसे धनराशि कमाना ही बनाकर आयुर्वेद क्षेत्रमें कार्य कर रहे हैं। अनुमान है कि ऐसे वैद्य आज आयुर्वेद जगतमें ८० प्रतिशत हैं।

६—भारतमें अंग्रेजोंने जब मेडिकल कालेज खोले तो उन कालेजोंसे निकले स्नातकोंके संरक्षणार्थ ब्रिटिश मेडिकल कौंसिल एक्टके आधार पर एक इंडियन मेडिकल कौंसिल एक्ट बनाकर उनके अधिकार वहाँके डाक्टरों के अधिकारके समान ही सुरक्षित कर दिये। जिससे एलोपैथिक शिक्षा व्यवस्था पर पूरा नियंत्रण किया गया। इससे मिश्र चिकित्सा व्यवस्थामें लगे समस्त एलोपैथिक डाक्टरों पर भी पूरा नियंत्रण मिल गया था। इसीका वर्तमान हमारे कांग्रेसी शासनने भी पूरा पूरा अनुकरण किया और अपना प्राचीन विकाशवाधित ज्ञान और विज्ञान के ऊपर बिल्कुल भी दृष्टि न रखते हुए पूर्णतः विदेशियोंका ही अनुकरण कर आयुर्वेदके सर्वनाशको ही मद्देनजर रखते हुए ही कार्यरत हैं, उसीका अनुभव अन्तर्दृष्टिसे और बहिर्दृष्टिसे अवलोकन व मनन करनेसे स्पष्ट नग्न चित्र समक्ष खड़ा हो जाता है। प्रायः उन्हीं लोगोंको राजाश्रय दिया जा रहा है और करोड़ों रुपयेकी सम्पत्तिसे सहयोग देकर उन्हींकी उन्नतिके हेतु हमारा शासन 'कार्यरत है। उन्हींके द्वारा स्वास्थ्य रक्षा मेडिकल कौंसिल शिक्षा, शिक्षकोंको नियुक्त करना, पाठ्यक्रम आदि बनाना और यह सबको अनुभव करना चाहिये कि वह कितनी

अधिकार सम्पन्न संख्या है वो चाहे सार्टिफिकेट झूठे दे दे या सच्चे दे दे वे सर्वथा मान्य ही कर लिये जाते हैं। जैसे पोस्टमैनोंकी हड़ताल उनके झूठे सच्चे सब सार्टिफिकेट मान्य कर दिये गये। ये हैं अधिकार प्राप्तकी हुई संस्थाओं के उदाहरण!

इसके विपरीत यदि कितने भी योग्य और पठित वैद्य रजिस्टर्ड हुए और अपने विधिवत् बने हुए बोर्डों द्वारा रजिस्टर्ड किये गये, मान्य किये गये उनके मुकाबलेमें दिये सार्टिफिकेटोंकी भी आज कोर्ट आदिमें कितनी मान्यता है यह वैद्य समाज अनुभव कर रहा है।

७—यह अधिकार सम्पन्न डाक्टरी विभाग आयुर्वेदको भारतवर्षसे बिल्कुल उनमिलन करनेमें कार्यरत रहता है। जैसे एलोपैथिकके डाक्टर एम० बी० बी० एस० का कोर्स पूर्ण समाप्त करनेके बाद स्नातकोत्तर शिक्षाके रूप कर लेनेके हेतु आयुर्वेदका उपयोगी तथा यूनानीका, होमियोपैथिक आदिका जो इनकी महत्वशाली चिकित्सासे आरोग्य होने वाली बीमारियोंके बीमार जो आरोग्य लाभ प्राप्त करते हैं उन्हीं बातोंका अध्ययन स्नातकोत्तर शिक्षामें कराकर सब पूर्ति कर लेना चाहते हैं। इसीके सुझाव गवर्नमेन्टको दे रहे हैं और आयुर्वेद आदिको बिल्कुल बन्द कर देनेका भी सुझाव दे रहे हैं। ये एलोपैथिक शिक्षाके स्तरको नीचे गिरने देना नहीं चाहते। हर प्रकारसे उसके स्तरको ऊँचा करके और तमाम चिकित्सा पद्धतियोंको भारतवर्षसे निकालकर समुद्रमें डुबा देना चाहते हैं। यह भी आयुर्वेद के विनाशका सातवाँ कारण है।

दिल्लीमें मनाई गयी ५० वर्षीय, इंडियन मेडिकल कौंसिलकी सिलवर जुबलीमें डाक्टरोंने एक प्रस्ताव पास किया और उसे सरकारके समक्ष रखा। उसका आशय था मेडिकल कालेजोंमें योग्य शिक्षकोंके लिये वेतन वृद्धि की जाय; क्योंकि पर्याप्त वेतनके अभावमें उन कालेजोंमें योग्य और उच्चश्रेणीके शिक्षकोंकी कमी रहती है; वेतन ग्रेड बढ़ानेसे उच्च श्रेणीके शिक्षक प्राप्त हो सकेंगे, जिनके अध्यापनसे प्रतिभा सम्पन्न छात्रोंकी रुचि अनुसंधान कार्योंमें बढ़ेगी और साथ ही वे उच्च-कोटिके शिक्षक बननेमें भी समर्थ होंगे।

वेतनके बारेमें कौंसिलने जो प्रस्ताव सरकारके समक्ष रखा था उसके अनुसार यह स्वीकृति चाही थी कि प्रोफे-सरको एक हजारसे १४०० तक तथा जो प्रायवेट प्रेक्टिस न करते हों उनको २५० रुपये अतिरिक्त, निम्न श्रेणीके प्रोफेसरके लिये वेतनमान ८०० से १००० तक तथा प्रायवेट प्रेक्टिसके अभावमें २५० रुपये अतिरिक्त, सहायक प्रोफेसरको ५००--३०--८००, बिना प्रायवेट प्रेक्टिसवाले को १५० रुपये अतिरिक्त और जूनियर टीचरके लिये २५०--६०० तथा प्रायवेट प्रेक्टिसके अभावमें १५० रुपये अलगसे भत्ता प्रतिमास दिया जाय।

साथ ही सम्मेलनमें यह प्रस्ताव भी रखा था कि वेतनमान सब प्रदेशोंमें तुल्य रखा जाय जिससे प्रलोभनवश वह शिक्षक एक कालेजसे दूसरेमें जानेकी इच्छा न करे। भारत सरकारके स्वास्थ्य मंत्रालयने उक्त दोनों बातोका सुझाव मान लिया।

इस परिवर्तनसे होनेवाले अधिक व्ययका सारा भार सरकार उठायेगी। वर्तमानमें यह प्रस्ताव द्वितीय योजनाके अन्त तक के लिये स्वीकृत है। राज्य सरकारोंको सूचना दी है कि इस योजना पर व्यय होनेवाली धनराशिको दे जिससे उन्हें आगामी वित्त वर्षसे सहायता प्राप्त हो सके।

पिछले माह इस कौंसिलका अधिवेशन हुआ जिसमें सरकारने उक्त सुझावोंको सहर्ष स्वीकार कर लिया। प्रस्ताव नवम्बरमें पेश हुआ तथा जनवरीमें पास हो गया। कितनी शीघ्रतासे कार्य हो रहा है। और अन्य राज्योंको इस संबंधी सूचना दे दी ताकि वे उसे शीघ्र कार्य रूपमें परि-णित कर सकें।

उक्त बातोंसे पूर्ण स्पष्टीकरण होता है कि सरकार मेडिकल कौंसिल एक्टके सुझावके अनुसार ही कार्यरत रहनेको इच्छुक है तथा एक ही एलोपैथी चिकित्सा पद्धतिको देशमें वर्तमान रूपसे स्थायी रखनेके पूर्णपक्षमें है। यह हमारे देशीय स्वराज्यका ज्वलन्त उदाहरण है कि हमारे वैज्ञानिक अपने देशकी वस्तुके प्रति ही कितनी उपेक्षा करते हैं। यहां अन्य देश अपने विज्ञानों को शिखर पर लानेके हेतु करोड़ों रुपयोंकी धनराशिका व्यय कर आकाश पाताल एक करते हुए अथक परिश्रम द्वारा अपना विज्ञान-चाहे छोटा हो चाहे बड़ा हो उसको शिखर पर लानेमें ही रत रहते हैं। ऐसे अनेक उदाहरण हमारे नेतागणोंकी दृष्टीसे ओझल नहीं है। इसके विपरीत हमारे देशके

सभी अपने स्वराज्यके अधिकारीगण विदेशी विज्ञानपर करोड़ों रुपये व्यय कर अपने देशके विज्ञानको पद दलित कर मिट्टीमें मिला रहे हैं।

८—अपने यहां देशी पद्धतिसे जितने भी आयुर्वेदकी उन्नति हेतु कालेज खुले हुए हैं उनका भी यही लक्ष्य है और इसमें कार्यरूपमें किया भी जा रहा है जैसे हिन्दू विश्वविद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी, डी० ई० एम० एस० आयुर्वेदिक कालेज, ऋषिकुल आयुर्वैदिक कालेज, ललित हरी आयुर्वैदिक कालेज, तिब्बिया कालेज, हमारे इन्दौरके राजकुमारसिंह आयुर्वैदिक कालेज आदि पाठ्यक्रमके सम्बन्धमें लोगोंकी शिकायत है। यह प्रसन्नता की बात है कि गतवर्षोंसे राजकुमारसिंह आयुर्वैदिक कालेजमें मध्यप्रदेशीय गवर्नमेंटका पाठ्यक्रम प्रारंभ किया जा चुका है। जिसमें ७५ प्रतिशत आयुर्वैदिक विषयोंका अध्यापन अनिवार्य कर दिया गया है, एवं २५ प्रतिशति एलोपैथिक विषयोंका समावेश है। इसमें भी कुछ सामान्य रूपसे वांछनीय भी है। दूसरा विचारणीय विषय इन आयुर्वैदिक कालेजोंमें रोगी शैय्याओंका है। इन कालिजोंमें कुछ में छात्रोंके लिये रोगी शैय्याओंका प्रबन्ध है ही नहीं और जिनमें है उनमें नगण्यसा है अर्थात् छात्रोंकी संख्याके निष्पातसे अपूर्ण। यह भी आयुर्वेदके ह्रासका कारण है और जिस पर सरकार कोई ध्यान नहीं दे रही हैं। इनमें प्रायः एलोपैथिक पढ़ानेकी बहुत विशेषता है और आयुर्वेद बहुत न्यून है, जितने छात्र उत्तीर्ण होकर निकलते हैं वह अपनेको डाक्टर घोषित करके ही और डाक्टर नाम रखकर ही चिकित्सा क्षेत्रमें उतरना चाहते हैं। प्रायः रुपये में चौदह आने एलोपैथिक दवाइयें काममें लेते हैं, बहुतसे आयुर्वैदिक औषधि बिलकुल भी कामसे नहीं लेते। उनका अध्ययन और मनन किया जाय और प्रश्न करके भी समझा जाय तो उनमें आयुर्वेदका ज्ञान नगण्य सरीखा प्रतीत होता है। ऐसे ही एलोपैथिक डाक्टर द्वारा भी समझनेकी दृष्टिसे प्रयत्नादि किया जाता है तो वह ज्ञान उनका अधूरा ही अध-कचरा ही समझमें और दृष्टीमें आता है। यह स्थिति हमारे आयुर्वेद कालेजों की है। यह भी एक आयुर्वेदका सर्वनाश करनेका आठवां कारण है।

९—हमारे वर्तमान आयुर्वेद महामंडलसे शिक्षा द्वारा भी कैसे सर्वनाशकी व्यवस्था हो रही है वह भी पूर्ण विचारणीय है यद्यपि ऊपर गिनाये हुए कालेजोंसे आयुर्वेदके ज्ञान संपादनकी दृष्टिसे उसका ज्ञान व स्तर बहुत ऊंचा है; किन्तु ऊपर गिनाये और कालेजोंसे शारीरिक ज्ञान बिना प्रत्यक्ष ज्ञानके नगण्यसा है। वर्तमानमें इस विद्यापीठसे निकले स्नातक केवल कायचिकित्सक ही कहे जा सकते हैं, किन्तु ये शारीरिक ज्ञानके प्रत्यक्ष ज्ञानसे शून्य होते हैं। आजकलके एलोपैथिकके निकले हुए डाक्टर शारीरिक ज्ञानसे पूर्ण भिज्ञ और शरीर सम्बन्धी पूरी वार्तासे परिचित होकर कायचिकित्सक पूर्ण ज्ञान सहित चोटीके रूपमें चिकित्सा क्षेत्रमें चिकित्सा कार्य करते हैं ऐसी स्थितिमें भी जो हमारा आयुर्वेद पूर्ण वैज्ञानिक है और उपरोक्त स्थितिवाले वैद्य भी पूर्ण बाजी मार ले जाते हैं, किन्तु पूर्ण भिज्ञ न होनेसे चिकित्सा क्षेत्रमें नाना प्रकार से अपमानित होते हुए बाधाएँ, अड़चनें उठाते हैं। उन अड़चनों को समझनेकी दृष्टिसे एलोपैथिककी शरणमें उनको जाना पड़ता है। यदि हमारे आयुर्वेद महामंडलमें आयुर्वेदके अनुसार ही शल्य, शालाक्य तथा शारीरिक आदिमें प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करनेकी दृष्टिसे भी अपना सर्वाङ्गपूर्ण विद्यालय अपने अथक परिश्रमों द्वारा ये व्यवस्था लगा लेते तो इन त्रुटियोंका भी बहुत सा अनुभव नहीं होता।

सुश्रुत आदि ग्रन्थोंको उठाकर देखना चाहिये और भी हमारी खामियोंकी पूर्तिकी दृष्टिसे योग आदि बहुतसे शास्त्रोंमें समस्त त्रुटियोंको मिटा देने वाला ऊँचे प्रकारका साहित्य साधन ज्वलन्त रूपमें स्थित है। इससे अपनेको एक्सरे आदिकी भी चिन्ताओंसे मुक्त हो जाना पड़ेगा। तमाम लायब्रेरीकी विभीषिकाओंको भी उठाकर अलग अलग फेंक देना पड़ेगा; किन्तु हमारे कर्णधार इस पर अपना समय क्यों नष्ट करने लगे, उनको तो सहज रूपमें रसायन हाथ लग गई है और सरलता पूर्वक धनोपार्जनकी कुञ्जीके रूपमें कार्यकर उसकी व्यवस्था लगानेमें रत हैं।

जगह जगह बिना उपयुक्त शिक्षा संस्थाके अध्यापन क्रमको छोड़कर घर घर, ग्राम ग्राममें चरक, सुश्रुत, वागभट, माधवनिदान, शारङ्गधर, भावप्रकाश आदि ग्रन्थोंको पढ़ाकर और रटाकर बिना प्रत्यक्ष ज्ञान शून्य विद्यार्थियों को लाखोंकी संख्यामें निकाल चुके हैं और आज भी

हजारोंकी संख्यामें निकाल रहे हैं। इससे अब आयुर्वेद जीवित नहीं रह सकता और टिक नहीं सकता इससे केवल पोथीका ज्ञान ही इनको रहेगा और चिकित्सा क्षेत्रमें मान्यता और प्रतिष्ठा भी नहीं रह सकती और जनताकी दृष्टिमें भी यह चिकित्सक अयोग्य ठहरते जायँगे और उनका विश्वास हटता जायगा और आयुर्वेदका अन्त होगा ही और आज भी ऐसा ही हो रहा है। उत्तरप्रदेशके माननीय मुख्य मंत्री डा० सम्पूर्णानन्दजीने किस समझ बूझके साथ आयुर्वेदके पाठ्यक्रमकी व्यवस्था लगायी है उसको बहुत ध्यान लगनके साथमें अनुकरण करके समस्त कालेजों में व्यवस्था लगाना चाहिये। कीट-पतंगके रूपमें वर्षाऋतुमें उत्पन्न होने वाले जितने भी जन्तु मात्र हैं जो वर्षा समाप्त होते नष्ट भी हो जाते हैं; ऐसे ही इन कालेजोंसे निकलने वाले हजारों छात्रगणको समझना चाहिये। इस प्रकारसे आयुर्वेदका सर्वनाश होनेको ही है यह नौवां कारण।

१०—आयुर्वेदमें अनुसन्धान सम्बन्धी, आयुर्वेदके ही ढंगसे आयुर्वेदिक पद्धति द्वारा निर्माणके कार्य और उनमें अनुसन्धान दृष्टिसे अनुभव प्राप्त करना और उन आयुर्वेदीय प्रत्येक वस्तु पर प्रत्यक्ष अनुभव और ज्ञान द्वारा अनुसन्धान प्राप्त कर उनके गुणोंमें निःसंशयता और निर्भीकता और व्याधियोंको दूर करनेके अकाट्य प्रमाणकी क्षमता और कार्य करना भी हम लोग खो बैठे हैं। बड़े-बड़े जङ्गल अपनी दृष्टिमें हैं, बड़ी बड़ी निर्माण शालाएँ भी अपने अधिकार और दृष्टिमें है और बड़े बड़े धर्मार्थ औषधालय, आतुरालय और निजी औषधायल ये सबोंका अपने सरलता पूर्वक उपयोग कर सकते हैं। अनुसंधान दृष्टिसे इनमें उपयोग कर सकते हैं और उसका पूर्ण फल उठा सकते हैं। आजकलका एलोपैथिक अनुसंधान अपने आयुर्वेदका सर्वनाश कर देने वाला है। अपने ऋषियोंका त्रिकालावाधित ज्ञान योगित्त आदि गुणादिके रूपमें से और अनुभवसे जो गुण निर्दिष्ट किये हैं उससे आज की भी एलोपैथिक रिसर्च ज्यादा नहीं निकाल सकी है। बहुत कम ही निकाल पाता है और वह भी अपूर्ण सरीखा ही सब रहता है और एक एक दो दो चीजोंकी ही रिसर्च करनेमें ही उनका बहुत समय व्यतीत हो जाता है और द्रव्यका भी बहुत अपव्यय होता है। वह अपने यहाँके रिसर्च और ज्ञानके विपरीत ही है। उससे अपनेको बिल्कुल भी सफलता और लाभ नहीं है। हम अपनी ही पद्धतिसे लाभ लेकर जीवित रह सकते हैं। यदि हम इस तरहके कार्य प्रणालीके पीछे लगते हैं, और हमारी ही प्रकारसे अनुसंधान करना जैसे बन्द रखा है रखते हैं तो भी आयुर्वेदका सर्वनाश होगा। यह दसवाँ कारण है।

११—ग्यारहवाँ आयुर्वेदके विनाशका कारण जो चौथेमें मैंने शासनके बारेमें लिखा है वह थोड़े स्पष्ट रूपसे इसमें लिख देना चाहता हूं। जो शासनकी ओरसे साधन विहीन आयुर्वैदिक औषधालय अनग्रेडेड डिसपेंसरियाँ खोली जाती हैं उनमें चिकित्सा आदिके साधन पूरे और पर्याप्त नहीं होते उसमें जो चिकित्सक होता है उसको चिकित्सा क्षेत्रमें पूरी सफलता नहीं रहती है और इस कारणसे उस औषधालय और चिकित्सकके प्रति असन्तोष, अश्रद्धा, रोस, घृणाकी भावना साथ ही आयुर्वेदके प्रति भी ऐसी भावनाएँ वहाँकी जनतामें उग्र रूप उत्पन्न कर देती हैं और वे सब शत्रुके रूपमें विरोधमें कार्य करने लग जाते हैं। जब साधन सम्पन्न ऐलोपैथिक डिसपेंसरियोंमें जाकर अपना इलाज करवाते हैं तो उनको सन्तोष और राहत मिल जाती है और व्याधिसे मुक्त होनेका अनुमान होता जाता है, तो वे लोग एक स्वरसे आयुर्वेद और आयुर्वैदिक औषधालयके विपरीत आवाज उठाते हैं और उस सम्बन्धी कार्यवाहीं शासनसे शुरू कर देते हैं और किसीकी प्रेरणासे यह लिखा पढ़ी करते हैं कि हमें यहाँ यह आयुर्वैदिक दवाखाना और चिकित्सक बिल्कुल नहीं चाहिये, ये आयुर्वैदिक दवाखाना और चिकित्सक बिल्कुल हटा दिया जाय हमको इससे कोई लाभ नहीं है। आदि बहुत सी अनर्गल बातें भी लिखकर रिपोर्ट करते हैं और लिखते हैं कि इस आयुर्वैदिक दवाखानेको शीघ्र ही हटा दिया जाय और यहाँ एलोपैथिक दवाखाना ही खोला जाय व रखा जाय। उसीके द्वारा हम रक्षित रह सकेंगे और बिमारियोंसे मुक्त हो सकेंगे यह भी सब आयुर्वेदज्ञ गम्भीरतासे विचार करें और देखें कि ये भी कितना सरल किन्तु भयंकर मार्ग आयुर्वेद को नाश करनेका शासनने अपना रखा है और इसी दृष्टिसे जहा जहाँ पर हमारे आयुर्वैदिक दवाखानें अच्छे अनुभवी और पठित चिकित्सकों द्वारा उत्तम प्रकारसे आयुर्वेदका कार्य हो रहा है; सैकड़ोंकी तादादमें जनता उत्तम प्रकारका

लाभ भी उठा रहीं है। इसको भी ध्यान न देते हुए एलोपैथिक डाक्टरोंकी माँग पर ही और सुविधाकी दृष्टि से एलोपैथिक उत्थानका ही पूरा ध्यान रखते हम वहाँ ग्रेडेड डिस्पेंसरीके रूपमें खोलकर एलोपैथिक डाक्टरोंकी नियुक्ति कर तथा अन्न ग्रेडेड डिस्पेंसरी वहीं स्थापित कर कार्य करा रहे हैं। यह भी शासन द्वारा आयुर्वेदके सर्व-नाशका एक प्रधान कारण है यह ध्यान रखनेकी बात है कि बिना शस्त्र अपर्याप्त स्वरूपके बड़ेसे बड़ा योद्धा भी युद्धमें क्या कर सकता है ऐसी ही स्थिति शासकीय चिकित्सक और आयुर्वेदिक औषधालयोंकी है। और भी प्रधान प्रधान कारण बहुतसे हैं ही वो सबके अनुभवमें भी आ रहे हैं। सहायता आदिमें व उत्थानमें भी नगण्य सरीखा सहयोग है। एक उदाहरण और रख रहा हूँ, हमारे इन्दौरमें बीमा योजना मजदूरोंमें लागू है वहाँ केवल शासन ने एलोपैथिक दवाखाने ही खोल दिये हैं वहाँ चाहिये था यह कि एक एलोपैथिक व एक आयुर्वेदिक दवाखाना खोला जाता। वहाँसे अनेक मजदूर भाई ऐलोपैथिक इलाज से जब बिल्कुल राहत नहीं मिलती है और हताश हो जाते हैं तो वे लोग आयुर्वेदकी शरण आते हैं और पूर्ण आरोग्यता प्राप्त कर चले जाते हैं। उस समय वे अनुभव करते हैं कि शासन कितना अविवेकता पूर्ण कार्य कर रहा है और हमारे त्रिकालवाधित वैज्ञानिक आयुर्वेदिक शास्त्र की अवहेलना कर रहा है व ठुकरा रहा है और उसे पद दलित कर रहा है। इस प्रकार हमारे धनका अपव्यय व दुरुपयोग कर रहा है। आदि कई कार्य प्रणाली हैं उनको लिखूँगा तो पोथा हो जावगा। एक दो उदाहरण रखकर शासन की स्थितिका स्पष्टीकरण कर दिया है।

१२—थोड़ा वर्तमान आयुर्वेदीय चिकित्सकोंका और स्पष्टीकरण कर देना चाहता हूँ कि वे वैद्य महानुभाव मेरे स्पष्टीकरण पर कृपाकर ध्यान अवश्य दें कि जो वैद्य महानुभाव चिकित्सा क्षेत्रमें विशेष रूपसे रुपयेमें १४ आने १५ आने एलोपैथिक औषधियें उनके नाम बदल बदल और बड़े सुन्दर नाम कल्पित रखकर, उन औषधियोंके संबंधमें पूछनेपर पेटेण्टका उल्लेख कर, उन औषधियोंका चिकित्सा क्षेत्रमें उनसे सफलता प्राप्त करना व द्रव्य कमानेका ऊंचा मार्ग बनाकर रात दिन कार्य करना यह आयुर्वेदकी घातकताकी दृष्टिसे कहां तक ऐसा करना उचित हो सकता है? आपके पास जो भी चिकित्सा करानेको बीमार आते हैं वह तो यही दृष्टि और अपना लक्ष्य बनाकर आते हैं कि आयुर्वेद चिकित्सा ही कराकर हम आयुर्वेदका और बहुतसे एलोपैथिक हताश होकर और यह लक्ष्य बनाकर आते हैं कि आयुर्वेदसे ही लाभ प्राप्त करें और आप फिर भी उनकी चिकित्सा बहुतसी एलोपैथिक इलाजसे ही करते हैं और उनके सामने भी किसी न किसी प्रकारसे यह पोल अवश्य ही खुल जाती है और उनको मालूम हो ही जाता है तो उनको यह अनुभव होता है कि आयुर्वेदमें औषधियें ही नहीं रही हैं और ऐसा समझकर कई बीमार तो यह विचार करके कि हम डाक्टर एलोपैथिकसे ही इलाज क्यों न कराये जो कि इस ज्ञानसे परिपूर्ण है। यहाँ तो हम केवल आयुर्वेद की दृष्टिसे ही इलाज कराने आये थे। जब ये बहुतसी औषधियां एलोपैथिक ही देते हैं तो उनका इलाज कराना खतरा मोल लेना है, क्योंकि ये इस ज्ञानसे अपूर्ण हैं उनका इलाज छोड़ चले जाते हैं। बहुतसे अन्य विश्वासी होते वे इलाज कराते ही रहते हैं और ये सोचते रहते हैं कि कोई हरकत नहीं। एलोपैथिक दवा भी दे रहे हैं तो क्या? ये भी वैद्य हैं और एलोपैथिक कुछ ज्ञानसे ही हमारा एलोपैथिक इलाज कर रहे हैं। अन्ततः उन्हें एलोपैथिक दवा पर ही पूर्ण विश्वास होता जाता है।

इस लाभ और प्रतिष्ठासे क्या लाभ? आयुर्वेदका ही सब दृष्टियोंसे नाश हम कर रहे हैं। क्या अपना यही कर्तव्य होना चाहिये? सुन्दर और राजमार्ग तो यही है कि प्रथम हम आयुर्वेदिक शुद्ध प्रणालीसे बनी हुई औषधियोंका ही प्रयोग करके देखें यदि उनसे लाभ नहीं हो तो एलोपैथिक इलाज जो अपने अनुभवमें स्पष्टतया आ चुका है वह उस बीमारीके योग्य हो तो उस बीमारको बीमारीके लिये लिख दें। खरीदकर वह ले ले या डाक्टर को बुलाकर अपने समक्ष उसका निदान व चिकित्सा लिखा लिया जाय। उससे कहा जाय कि इन इलाजोंको भी कुछ दिन करके देखो। यदि अच्छे हो जावें तो अच्छा ही है नहीं तो हम फिर विचारकर पुनः आयुर्वेदिक इलाज करेंगे। जल्दी होनेकी दृष्टिसे ही हमने ऐसी तजवीज सोची है।

आयुर्वेदिक इलाज दोष साम्य करते हुए देरसे किन्तु

स्थायी फायदा करता है तथा व्याधिको जड़से समाप्त कर देता है। एलोपैथिकका तुम भी सुनते हो और देखा भी होगा कि एंजेक्शन आदिका प्रायः टेम्प्रेरी लाभ होता है। बहुत कम बीमार ऐसे आरोग्य होते हैं जिनकी बीमारी जड़से चली गयी हो। बहुधा यही देखा गया है कि अच्छे हो जाते हैं फिर बीमार होते हैं और बार बार यही दवाई लेनी पड़ती है उन दवाइयोंसे आरोग्य होने पर भी नयी बीमारियां आ जाती हैं। कभी कभी भयंकर परिणाम भी उनसे घटते रहते हैं। जैसे प्रोकीन पेनिसिलिंग एंजेक्शनोंसे वर्तमानकी कई घटनाएं तथा लिवर एक्ट्रेक्ट के एंजेक्शनोंसे भी कई घटनाएं होती देखी जाती हैं। और भी कई औषधियोंसे भी ऐसी दुर्घटनाएं होती रहती है जो सबके अनुभवमें है और ज्ञानसे बाहर नहीं है। डा० लोग भी इसे समझते हैं। एलोपैथिकके संबंधमें ये विभीषिकाएं बताकर बहुत ही उचित मार्गसे आयुर्वेद की विशेषता समझाते भी रहना चाहिये। उसमें भी अपने शपथको विशेष खर्च करते रहना चाहिये। अथवा ऐसे रु० में १४-१५ आने एलोपैथिक चिकित्सा करनेवाले लोगोंके कारण भारतीय गवर्नमेंटने आयुर्वैदिक चिकित्सकोंको एलोपैथिक काममें लेनेपर कानूनी प्रतिबंध लगा दिया है। ये लोग एलोपैथिक औषधिएँ प्रयोग करनेमें बहुत ही कठिनताका अनुभव करेंगे, इन बातोंको वैद्य समाज छोड़ेगा तभी आयुर्वेद जी सकेगा नहीं तो हम अपने हाथोंसे ही आयुर्वेदका सर्वनाश कर रहे हैं। यह बारहवां कारण भी आयुर्वेदकेपूर्ण विनाशका कारण है। ये भी लक्ष्यमें उसको रखना चाहिये कि उसका प्रभाव वर्तमान शासनमें भी पड़ ही रहा है कि आयुर्वेदमें नगण्य सरीखी स्थितिसी प्रतीत हो रही है कि जब १०० में से ८० प्रतिशत आयुर्वेदज्ञ एक रु० में १४ आना १५ आना एलोपैथिक औषधि काममें ले रहे हैं ऐसी स्थितिमें अधिकार सम्पन्न एलोपैथिक बोर्ड जो सुझाव रख रहा है कि आयुर्वेद आदि अन्य चिकित्सा प्रणालियोंको बोर्डसे अनुरूप ही व्यवस्था लगाकर आयुर्वेद चिकित्सा पद्धतिको बिलकुल बंद कर देना चाहिये और इन चिकित्सा पद्धतिके वास्ते क्यों द्रव्यका व्यय किया जाय। ये भी शासनको ठोस मार्ग हैं वे उदाहरण सहित प्रबल शक्ति है। आयुर्वेदको नाश करने का।

१३—मेरा यह सुझाव है कि आयुर्वेदको शासन यदि यथार्थमें जीवित रखना चाहता है तो उसे एलोपैथिक के अनुसार उसकी उन्नति पर पूर्ण ध्यान देना चाहिये तथा आयुर्वैदिक जितनी भी भारतवर्षमें फार्मसी हैं एलोपैथिक फार्मसियोंमें जैसे नियंत्रण हैं उसी प्रकारके नियंत्रण केवल आयुर्वैदिक पद्धतिसे ही और शास्त्रीय ढंगसे पूर्ण रूपेण तेयार करें। ऐसे प्रतिबंध अविलंब लगाकर और कार्यको शुरू कर देना चाहिये और वनस्पतियोंके बड़े बड़े डिपो ताजी एक वर्षके भीतरकी संग्रह की हुई नियंत्रित ढंगसे खोल देना चाहिये। अन्यथा शासन यदि ध्यान न दे तो और मेरे सुझावको मान न ले तो विनाशका तेरहवां कारण होगा।

१४—चौदहवां कारण—बोर्डमें हमारे वैद्य भी मेम्बर हैं, किन्तु यह बड़ी भूल हुई है कि ऐसे वैद्योंका रजिस्ट्रेशन परस्पर के प्रेम मुलाहिजेमें कर दिया है जो रजिट्रेशन लायक नहीं थे। यह भी चौदहवां विनाशका कारण है।

रक्षाके उपाय—अभी और भी कारण हैं किन्तु अब लेखको यहीं रोक रहा हूँ उन्हें भविष्यमें प्रकट करनेका प्रयत्न करूंगा। अब यह अपील एवं प्रार्थना है कि ऊपरके समस्त कारणोंका अध्ययन और मनन करते हुए आयुर्वेद को सर्वनाशसे बचानेके हेतु अपना सुदृढ़ संगठन भारतवर्ष भरमें किया जाय। एकसा पाठ्यक्रम और एक ही प्रकारकी उपाधि भारत भरमें रखी जाय। छात्रोंको प्रवेश होते वक्त मध्यमा तक संस्कृत बनारस विश्वविद्यालयसे उत्तीर्ण और अंग्रेजी मैट्रिक तककी योग्यता होनी चाहिये। आयुर्वेदके पूर्ण अध्ययनके बाद ही स्नातकोत्तरमें एक वर्ष तक शेष रही हुई आवश्यकीय एलोपैथिक शिक्षा उसमें भी मेरी दृष्टिसे मटेरियामेटिकाका अध्ययन करना और एलोपैथिक औषधियोंका अध्ययन कराना सर्वथा त्याज्य ही रखना चाहिये। शासन तो इस संबंधमें प्रयत्न करेगा ही ऐसा मेरा विश्वास है। साथ ही जन नेता गणोंसे भी मेरा अनुरोध है कि वे भी आयुर्वेदकी वास्तविक उन्नतिमें अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें। यह काम बड़ा व्यापक है और आजके युगमें इसकी महान आवश्यकताएं हैं। वास्तविक स्थिति इस प्रकार है कि

आयुर्वेदके अध्ययनमें संस्कृतकी अनिवार्य आवश्यकता है। देखा यह जाता है कि संस्कृत वे ही बालक पढ़ते हैं जिनके पास स्कूलों और कालेजोंमें शिक्षा प्राप्त करनेके हेतु द्रव्यका अभाव रहता है। इन अभाव ग्रस्तोंमेंसे योग्य प्रतिभा सम्पन्न बालक चुनकर उनके निवाससे लेकर भोजन, पठन-पाठन आदिकी सभी व्यवस्था विद्यालयों द्वारा ही होने पर इन्हें योग्य आयुर्वेदज्ञ प्राप्त हो सकेंगे। चाहे प्रारम्भमें इनकी संख्या अत्यन्त अल्प रहे किन्तु मेरे नम्र मतसे योग्य आयुर्वेदज्ञ तैयार करनेके लिये इससे भिन्न दूसरा कोई मार्ग नहीं है। शासन समर्थ है। वह इस प्रकारकी व्यवस्था सुविधापूर्वक कर सकता है। जन नेता इस कार्यके लिये शासन और जनताको तैयार कर सकते हैं। मुझे विश्वास है कि जनता जनार्दनकी इस महान सेवामें जो सस्ती, सुलभ और अधिकाधिक प्रभावकारी है प्रत्येक सक्षम व्यक्ति अपना सहयोग देनेमें कुछ भी उठा नहीं रखेगा। ऐसे योग्य आयुर्वेदज्ञ तैयार होनेपर उन्हें डाक्टरोंकी समताका वेतन दिया जाकर उनसे काम लिया जाय। साथ ही उन्हें शुद्ध और शास्त्रीय ढंगसे तैयार की गयी औषधियोंके उपयोगके लिये ही विवश किया जाय। यह कड़ा प्रतिबंध रहना आवश्यक है कि वे किसी भी दशामें कोई भी एलोपैथिक औषधिका प्रयोग न कर सकें न शासन द्वारा ही उन्हें एलोपैथिक औषधिके उपयोगके लिये कहा जाय या सुविधा दी जाय।

उपाधि—आज करोड़ोंकी सम्पत्ति विदेशोंमें विदेशी दवाइयोंके हेतु व्ययकी जा रही है। यदि हम और हमारा शासन आयुर्वेदको पूर्ण रूपेण उपरोक्त सुझावके अनुसार इस वैज्ञानिक त्रिकालाबाधित ज्ञानको एलोपैथिकसे चौथाई भी व्यय कर एलोपैथिकके समान व्यवस्थित ढंगसे अपना लेते हैं तो यह करोड़ोंका निरर्थक व्यय सुरक्षित हो जा सकता है। जिसे देशके नव निर्माण कार्य में लगाया जा सकता है और देशकी उन्नतिमें विशेष प्रगति कर सकते हैं। आज भी आयुर्वेदकी ऐसी स्थितिमें भी ८० प्रतिशत जनता उसका लाभ उठा रही है। वैद्योंकी उन्नतिके हेतु और आयुर्वेदकी रक्षाकी दृष्टिसे यह भी आवश्यक है कि वर्तमान आयुर्वैदिक कालेजोंसे निकलनेवाले छात्रोंको जो एलोपैथिक ढंगकी उपाधियां दी जा रही है जैसे बी० आई० एम० एस० और ए० एम० एस० तथा "डाक्टर" लिखने की छूट, इनको बिलकुल ही कानून द्वारा हटाकर कड़ा प्रतिबंध लगा देना चाहिये। वे लोग केवल आयुर्वैदिक उपाधि आयुर्वेदाचार्य आदि जो एक उपाधि उनकी निश्चित हो वही लगाकर चिकित्सा क्षेत्रमें कार्य कर सकें। एम० बी० बी० एस० डाक्टरके अतिरिक्त कोई भी एलोपैथिक ड्रग्स बिलकुल ही काममें न ले सकें तथा एलोपैथिक डाक्टर कोई भी एलोपैथिक ड्रग्स मंगाकर वैद्य लोगोंको काममें लेनेको भी न दिया करें। यदि उनके यहाँ कोई रुग्णी हो और चिकित्सामें एलोपैथिक ड्रगकी जरूरत पड़े तो स्वतः एलोपैथिक डाक्टर, एलोपैथिक ड्रगसे चिकित्सा करनेके हेतु स्वतः उनके यहां चिकित्सा करे। चिकित्सा करने और डाक्टरके आने जानेमें कोई फीस आदिकी आवश्यकता नहीं रहे, ऐसी व्यवस्था सहित नियम बनाकर और उन पर कठिन प्रतिबंध लगा देना चाहिये। तभी आयुर्वेद जी सकता है अन्यथा कोई भी उपाय दृष्टिमें नहीं आ रहे हैं। साधारण स्थितिके और निर्धन गरीब मनुष्योंके लिये आजकी एलोपैथिक चिकित्सा असम्भवसी ही है। धनिक लोग ही इस चिकित्साका पूरा उपयोग ले सकते हैं। यह प्रायः निर्धनों और गरीबोंका ही देश है।

साहित्य रक्षा—पाठ्यग्रन्थोंके विषयमें मेरा मत है कि उनमें आवश्यक सुधार संशोधन और वृद्धिके साथ निर्माण होना चाहिये। भूतकालमें हमारे साहित्यका बहुत विनाश हुआ है। यवनकालमें महीनों उनसे हम्माम गरम किये गये हैं। बहुतसा साहित्य विदेशी पर्यटक यहांसे खरीदकर ले गये हैं। जो वहांके पुस्तकालयोंमें संग्रहीत है और उससे वहांके विद्वान लाभ उठा रहे हैं। बहुतसा साहित्य देशमें ही लापरवाहीसे नष्ट हो गया है। अतएव यह कहना कठिन है कि पूर्ण साहित्यका कितना भाग नष्ट हो गया है। आज समयकी आवश्यकताके अनुसार जो ज्ञातव्य विषय अपने यहां न हों या संक्षिप्त और अपूर्ण हों, उनकी पूर्ति करना आवश्यक है। भूतकालमें हमारे आयुर्वेदसे अन्य वैज्ञानिकोंने लाभ उठाया है, आज यदि हम आधुनिक विज्ञानसे अपने साहित्यकी पूर्तिमें सहायता ले तो कोई लज्जाकी बात नहीं है। स्वर्गीय महामहोपाध्याय कविराज गणनाथसेनजीने इस सम्बन्धमें मार्ग प्रदर्शन किया भी है। उनके प्रत्यक्ष शारीरका निर्माण इसी पूर्तिके

दृष्टिकोणसे हुआ है। इनके पश्चात् भी विद्यापीठके वयोवृद्ध कविराजसेनजीने भी इसमें प्रयत्न किया था और सम्मेलन पत्रिकाके अङ्कोंमें उसे क्रमशः प्रकाशित भी किया था। इस सम्बन्धमें एनाटमी, फिजियालोजी, पैथालोजी, टाक्सिकालोजी जैसे विषयोंके पाठ्यग्रन्थ सावधानीसे संशोधित रूपमें तैयार करने होंगे। हमारे प्राचीन ग्रन्थोंका विदेशोंमें गया हुआ कुछ भाग प्रकाशित भी हुआ है। उससे भी हमें सहायता लेनी चाहिये। यही नहीं विदेशियोंकी लायब्रेरियोंमें जो साहित्य संग्रह है उसका योग्य पात्रों द्वारा अवलोकन कराकर उनमेंसे आवश्यक और उचित अंश ग्रहण कर लेना चाहिये। वैदिक साहित्य, दर्शन और योग ग्रन्थोंमें भी कुछ ऐसी बातें मिलेंगी जिनसे इस पूर्तिके कार्यमें सहायता मिलेगी; उसका भी यथा स्थान संकलन हो जाना चाहिये।

सरकारी रुख—दिल्लीमें मनायी गयी ५० वर्षीय, इंडियन मेडिकल कौंसिलकी गत सिलवर जुबलीमें डाक्टरों ने एक प्रस्ताव पास किया और उसे सरकारके समक्ष रखा है कि मेडिकल कालेजोंमें योग्य शिक्षकोंके लिये वेतन वृद्धिकी जाय; क्योंकि पर्याप्त वेतनके अभावमें इन कालेजों में योग्य और उच्च श्रेणीके शिक्षकोंकी कमी रहती है। वेतन ग्रेड बढ़ानेसे उच्च श्रेणीके शिक्षक प्राप्त हो सकेंगे। जिनके अध्यापनसे प्रतिभा संपन्न छात्रोंकी अभिरुचि अनुसंधान कार्योंमें बढ़ेगी और साथ ही वे उच्च कोटिके शिक्षक बननेमें भी समर्थ होंगे।

वेतनके बारेमें कौंसिलने जो प्रस्ताव सरकारके समक्ष रखा था उसके अनुसार यह स्वीकृति चाही थी कि प्रोफेसरको एक हजारसे १४०० तक तथा जो प्रायवेट प्रेक्टिस न करते हों उनको २५० रुपये अतिरिक्त, निम्न श्रेणीके प्रोफेसरके लिये वेतनमान ८०० से १००० तक तथा प्रायवेट प्रेक्टिसके अभावमें २५० रुपये अतिरिक्त, सहायक प्रोफेसरको ५००-३०-८००, बिना प्रायवेट प्रेक्टिस वालेको १५० रुपये अतिरिक्त और जूनियर टीचरके लिये २५०-६०० तथा प्रायवेट प्रैक्टिसके अभावमें १५० रुपये अलगसे भत्ता प्रति मास दिया जाय।

साथ ही कौंसिलने यह प्रस्ताव भी रखा था कि वेतन मान सब प्रदेशोंमें तुल्य रखा जाय जिससे प्रलोभन वश शिक्षक एक कालेजसे दूसरेमें जानेकी इच्छा व्यक्त न करें। भारत सरकारके स्वास्थ्य मंत्रालयने उक्त दोनों बातोंका सुझाव मान लिया।

इस परिवर्तनसे होने वाले अधिक व्ययका सारा भार सरकार अर्थात् भारतीय प्रजा उठायेगी। राज्य सरकारोंको सूचना दी गयी है कि इस योजना पर व्यय होने वाली धन-राशिका हिसाब दे जिससे उन्हें आगामी वित्त वर्षसे सहायता प्राप्त हो सके। इतनी तत्परता कि नवम्बरमें अधिवेशन हुआ और जनवरीसे उसे स्वीकार कर लिया गया। इसी बीच कार्यमें परिणत करनेके लिये अन्य राज्योंको भी सूचित कर दिया गया।

उक्त बातोंसे पूर्ण स्पष्टीकरण होता है कि सरकार मेडिकल कौंसिलके सुझावके अनुसार ही कार्यरत रहनेकी इच्छुक है तथा एक सी चिकित्सा पद्धतिको देशमें स्थायी रखनेके पूर्ण पक्षमें है। यह हमारे देशीय अर्थात् स्वराज्य का ज्वलन्त उदाहरण दुःखदायी है कि हमारे वैज्ञानिक अपने देश की वस्तुके प्रति ही उपेक्षादृष्टि रखते हैं। जहाँ अन्य देश वाले अपने विज्ञानों को शिखर पर लानेके हेतु करोड़ों रुपयेकी धनराशि व्यय कर आकाश पाताल एक करते हुए अथक परिश्रम द्वारा अपना विज्ञान चाहे छोटा हो चाहे बड़ा हो उसको शिखर पर लानेमें ही रत रहते हैं। ऐसे अनेक उदाहरण हमारे नेतागणोंकी दृष्टिसे ओझल नहीं है। इसके विपरीत हमारे देशके सभी अपने स्वराज्यके अधिकारीगण विदेशी विज्ञान पर करोड़ों रुपये व्यय कर अपने देशके विज्ञानको पद दलित कर मिट्टीमें मिला रहे हैं। यह असहनीय और परिवर्तन योग्य है।

जनतामें आन्दोलन—आजका युग जनताका युग है। सरकारको आज नहीं तो कल वह काम करना ही पड़ेगा जिसे जनता एक स्वरसे कहती है। कांग्रेसवालोंको जो आजादीकी प्राप्तिमें सफलता मिली है वह जनताके सहयोगसे ही सम्भव हुआ है। सरकार आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये प्रयत्नशील नहीं है। इससे अधिक दुःखकी बात यह हैकि स्वयं कुछ वैद्य ही अपने समुदायके लिये अनहित कर रहे हैं। वे कार्यरूपमें तो कुछ नहीं करते केवल आयुर्वेदका गौरव गाकर अपनेको प्रशंसाका पात्र सिद्ध करनेका असफल सा प्रयास करते हैं। डाक्टरोंकी बुराई कर उन्हें अपने

विपरीत कर लेते हैं। इसी तरह सरकारके प्रति भी बातें कर उसकी कृपा दृष्टिसे भी हाथ धो बैठते हैं। इस प्रकार से आप आयुर्वेदको ऊँचा नहीं उठा सकते। यह तभी संभव है जब कि आप देशकी जनतामें यह विश्वास उत्पन्न कर दें कि आयुर्वेद उनके लिये अन्य विदेशी चिकित्सा प्रणालीसे कहीं अधिक उपयुक्त और लाभप्रद है। अपने कठिन प्रयत्नोंसे वैद्य समाज जब यह सिद्ध कर देगा कि उससे देशकी दो तिहाईसे अधिक जनता लाभ उठा रही है और वह उसके पक्षमें है तभी आयुर्वेद उन्नतिके शिखर पर चढ़ सकता है।

आपसी मतभेद—इसके लिये जनतामें वैद्य आन्दोलन उठा सकता है, जनता जब मँहगाई, आर्थिक, बेकारी आदि समस्याओंके लिये आन्दोलन करती है तो कोई कारण नहीं जो इससे लाभ होनेके बाद उसकी उन्नति के लिये कदम न उठाये। केन्द्र और स्वास्थ्य मंत्रालयका कहना है कि जनता आयुर्वेदको नहीं चाहती। वैद्य समाज अपने प्रयत्नोंके द्वारा यह सिद्ध कर सकता है कि जनता आयुर्वेदके पक्षमें है। इसके लिये हस्ताक्षर आन्दोलन चला सकते हैं। और उसकी सूची देशके कर्णधारोंको भेज कर वास्तविकतासे उन्हें परिचित करा सकते हैं। जो दल दूसरी ऐसी समस्याओंके हलके लिये प्रयत्नशील है उन्हें आयुर्वेदकी समस्या हल करनेका भार भी समझाइये। इसके महत्वको और इसके अभावकी स्थितियोंका स्पष्टीकरण करिये। आयुर्वेदका रहस्य क्या है? यह एक कठिन और प्राथमिक समस्या है। सरकारके मंत्रीगणोंका मत है कि इस विषयमें वैद्योंमें ही एक मत नहीं है। इसे दूर करिये। एक मतसे आयुर्वेदका स्वरूप पोषित कीजिये। शुद्ध और मिश्र पद्धतिकी समस्या सुलझाइये। इस कारणसे जो अकारण ही वैद्योंमें दो विरोधी दल बन गये हैं उनमें परस्पर प्रेमका वातावरण पैदा कर देना चाहिये। यह स्पष्ट कर दें कि किन किन विषयोंसे युक्त चिकित्सा प्रणालीका आयुर्वेद है। आयुर्वेद स्वतः ही शुद्ध है। उसमें शुद्ध अशुद्ध शब्दोंके लगानेकी आवश्यकता नहीं है। वह केवल आयुर्वेद है।

हस्ताक्षर आन्दोलन— परमप्रिय वैद्यराज द्वारकेश मिश्रजीने युक्ति युक्त लेखलिख विशेष रूपसे हस्ताक्षरीय आन्दोलन तथा आयुर्वेदका स्वरूप क्या हो? इस संबन्धमें आयोजना प्रकट की है। वह बहुत ही सुन्दर और विधिवत लिखी है और मेरी दृष्टिमें भी अन्तिम रूपसे आयुर्वेदको बचानेका प्रबल और अकाट्य शस्त्र है। इसी को आज का वैद्य समाज अपनी एक मात्र प्रतिनिधि संस्था नि० भा० आयुर्वेदीय महा सम्मेलनके द्वारा अपना ले। फरवरीके अधिवेशनमें मिश्रजीके सुझावानुरूप हस्ताक्षरी आन्दोलनको अपना ही लेना चाहिये और उसी रूपमें एक दम कार्य प्रारम्भ कर देना चाहिये। आयुर्वेदकी रक्षाके लिये यह उपाय मेरी दृष्टिमें कारगर समझ पड़ रहा है। हम सब आयुर्वेदज्ञोंको आयुर्वेदके और अपने जीवन मरणके प्रश्नको पूर्णतया दृष्टिमें रखते हुए इस आन्दोलनको अविलम्ब शुरू कर ही देना चाहिये। यही मेरी भी अन्तिम अपील है।

पार्टी बन्दी—हमें देशकी राजनैतिक पार्टीबन्दियोंके दलदलमें फँसनेसे बचना चाहिये। हमारा ध्येय आयुर्वेद है। जो भी व्यक्ति या दल आयुर्वेदका समर्थक है वह हमारा मित्र है। हमें अपना एक ध्येय निश्चित कर जनता के सामने रख देना चाहिये। आयुर्वैदिक स्वराज्य, राष्ट्रीय चिकित्सा विज्ञानका ध्येय और आयुर्वेदको विश्वव्यापी प्रभाववाला बनानेके दृष्टिकोणसे उसके शिक्षण, प्रसार और सहायता द्वारा उन्नति करनेके उपायोंमें जो हमारा साथ दे वह हमारा मित्र है। इसी दृष्टिकोणसे हमें कम्यूनिष्ट पार्टी, हिन्दू महासभा, जनगण पार्टीसे सहानुभूति प्राप्त करना चाहिये। होमियोपैथिक, यूनानी, दलाल पार्टी जो संस्थाएँ शासन द्वारा तिरस्कृत हैं और असन्तुष्ट हैं उनका अपने आन्दोलनमें सामयिक उपयोग कर अपनी शक्तिका वर्धन किया जा सकता है। शासनके साथ असहयोग और सत्याग्रह भी एक अन्तिम उपाय है; परन्तु यह आन्दोलन दुधारी तलवार है। सहयोग और समझाने बुझानेके सब उपाय निष्फल हो जाने पर ही इसका उपयोग हो सकता है। वैसी दशामें हमें जनतामें विकट आन्दोलन करना पड़ेगा। जनताको भी उधरसे विमुख बनाना पड़ेगा। जहाँ उनकी सभाएँ हों वहाँ जनता न जाय इसका उद्योग करना पड़ेगा। ऐसे शासकोंसे हमें अपने उद्घाटन कार्य करानेमें रुकना पड़ेगा। वोटोंके समय उन्हें वोट न मिले

इसका उद्योग करना होगा। वैद्योंको ऐसी संस्थाओंसे अपना सम्बन्ध त्याग करना होगा। अंग्रेजी शासनमें आयुर्वेदको पनपनेका अवसर नहीं मिला। यदि वही रवैया अब भी चलता है तो हमारे असन्तोषको शासनको समझना होगा। आयुर्वेदके पूर्ण विकासके लिये उसे तैयार होना पड़ेगा। यदि वह नहीं चेते तो सबसे ऊँचा चोटोका साधन असहयोग ही है। ऐसी दशामें शासनकी नाराजीसे जेल भी जाना पड़ सकता है। किन्तु आजकल शासन जेलके आन्दोलनसे भयभीत नहीं होता। जो हो जब विपत्ति सामने है तब जो करना पड़े वह करना ही होगा। किन्तु हमें आशा रखनी चाहिये कि हमारे अधिकारियोंका विदेशी प्रेम सीमित होगा और वे देशी आयुर्वेद विज्ञानके व्यापक स्वरूपका ध्यान रख उसकी उन्नतिमें तत्पर होंगे। इसके लिये हमारा कठिन तप, जन सहयोग और जनताकी सेवा का अवलम्ब प्रबल रूपसे सहायक होगा।

अनुसन्धान—हमें अपने रिसर्चको अपनी पद्धतिके अनुरूप रस, भस्म आदि बनाकर काममें लेना चाहिये। अपने जितने भी शास्त्रीय पद्धतिके प्रयोग हैं इनके पेनि शिलिंग, एम० बोम्बीन क्लोरोमाइसीटीन, एफ्रोमाइसीटीन आदि से कम नहीं है। सब इनके जितने भी नवीन शोध है अपने यहाँ से अलग नहीं है। अभी भी हमारे यहाँ से इनको बहुत ही लेना आवश्यक है; किन्तु हमें अपने विज्ञान पर हमारी ही पद्धति द्वारा कार्य करने पर अविलम्ब कटिबद्ध हो जाना चाहिये। दूसरोंको भी चकित कर देना चाहिये। ऐसी ही हमारे यहाँ निदान पद्धति भी है उसकी भी सर्वाङ्ग रूपेण उसी प्रकार करना चाहिये। उस पर भी पूर्ण ध्यान देकर कार्य करना प्रारंभ कर देना चाहिये।

आवश्यकता पड़ने पर जहाँ तक ऊँचे स्तर पर अपनी पद्धतिसे अपना ज्ञान नहीं बढ़ जाता है वहाँ तक अपने यंत्रादिक भी परीक्षाके हेतु उपयोगमें लिये जा सकते हैं उनके यहाँ के शस्त्र तो अपने यहाँ की ही पूरी नकल है।

सारांश—(१) अखिल भारतीय स्तर पर एक आयुर्वेदीय पाठ्यक्रम और उपाधिकी मान्यता।

(२) औषधि निर्माणका एक स्तर, केन्द्रिय औषधानुसंधानशाला हर योगोंका शास्त्र प्रभाव पुरस्सर योग परीक्षित मानित हो।

(३) आयुर्वैदिक व्यवसायी वैद्योंका अ० भा० स्तर पर रजिस्ट्रेशन व अखिल भारतीय एवं अखिल क्षेत्रीय डाक्टरोंकी भाँति मान्यता व केवल सुशिक्षित वैद्योंका रजिस्ट्रेशन हो।

(४) राज सेवामें वैद्य डाक्टरोंके वेतन स्तर व औषधालयोंके स्तरमें समानता, राजाश्रयमें समान व्यवहार।

एतदर्थ वैद्योंकी दलबंदी समाप्त होकर वैज्ञानिक संगठन बनाना चाहिये। मैं न मिश्र आयुर्वेदका समर्थक हूँ न शुद्ध आयुर्वेदका। इन दोनोंका विचार ही अशुद्ध और झगड़े की जड़ है। मैं आयुर्वेदको आयुर्वेदके रूपमें ही देख समझकर उसका सर्वाङ्गीण विकास चाहता हूं। आधुनिक कालेजके सम्बन्धोंमें मेरे विचारके अनुरूप जो मैंने सूक्ष्म रूपरेखा रखी है तदनुसार सुधार हो जाना चाहिये।

प्रकट की । संग्रहालय, शवच्छेदालय, पुस्तकालय, रसायनशाला आदिके साज-सम्भार आपको आकर्षक प्रतीत हुए।

व्याख्यानमालाका आरम्भ होने पर पं० निरञ्जनदेव जीने त्रिदोषके त्रिधातु रूप द्वारा देहधारकत्व कार्य विवेचन किया । आपका उपनाम "प्रियहंस" है। अतएव हंसके समान आपके नीरक्षीर विवेकी भाषणमें त्रिदोष सिद्धान्त, पञ्चकर्मसे प्रत्यक्ष ज्ञानसूचक विवरण, चरक-सुश्रुत-वाग्भटके प्रमाणों द्वारा पुष्टीकरणके महत्वपूर्ण भाषणका सब पर अच्छा असर पड़ा। दूसरी बार सजीव शरीरमें दोषोंकी उत्पत्ति किस प्रकार होती है इसे वैज्ञानिक सरणीसे आपने उपस्थित किया। इस विषय पर लोगों द्वारा जो शङ्काएँ प्रश्नरूपमें उपस्थित हुईं उनका भी आपने विद्वत्तापूर्ण समाधान किया।

आपके स्वागत और समादरमें स्वागतगान, छात्र समितिके सभापति पं० क्रान्तिकृष्णजी द्वारा अभिनन्दन पत्र समर्पण, छात्र समिति द्वारा पुष्पमालार्पण, उनका परिचयात्मक गुणगान, आयुर्वेद और काव्यकी पारङ्गतता, दशकुमार चरितके अनुवाद, शास्त्रीय पाठ्य-ग्रन्थोंके निर्माण कार्योंमें योगदान आदिका जिक्र हुआ। आपके सम्मानमें नागरिकों, अधिकारियों, अध्यापकों, छात्र आदिके सहित चायपार्टी दी गयी। रातमें मनोरञ्जनकारी सांस्कृतिक कार्यक्रम विशेष आकर्षक रहा। भारतमातागान, नृत्य, प्रहसन, सङ्गीत, संपेरा आदिके नाट्यदृश्य, पिकनिक प्रहसन, आदि द्वारा सबका खासा मनोरञ्जन हुआ।

आपका तीसरा भाषण वात-पित्त कफ द्वारा स्वास्थ्यविवेचनका भी महत्वपूर्ण रहा। प्रवाहमयी धारा रूपमें गहन विषयका सरलतासे ऐसा अवगाहन आपने कराया जिससे सब प्रभावित हो वाह वाह कर उठे। प्रीतिभोजके बाद गङ्गामें बनते हुए मोकामाके पुलको देखनेके बाद पिकनिककी विधि पूर्ण की गयी। इस यात्रासे बेगूसरायकालेज और गुरुकुल कांगड़ीके साथ गौरवपूर्ण मैत्रीका स्थापन हुआ है, वह महत्वपूर्ण है।

प्राचार्य

समाचार

श्री शिवप्रसाद गुप्त औषधालय—काशीके बाबू शिवप्रसाद गुप्तने आज पत्रका सञ्चालन, काशी विद्यापीठ और भारतमाता मन्दिर खोलकर अपना नाम अमर कर लिया; किन्तु अपने नामसे किसी भी कामका नामकरण नहीं किया। पण्डित शिवविनायक मिश्र वैद्यको आपने स्थान आदिकी सुविधा दी और क्षयरोगसे छुटकारा पाने योग्य सहायता पहुँचायी। मिश्र जीने १५ वर्ष पहले उन्हींके नामसे हिन्दू विश्वविद्यालयके पास लङ्कामें एक औषधालय खोल दिया है। तबसे यह औषधालय सफलतापूर्वक चल रहा है। आजकल ५००) साल सरकारी सहायता भी मिलती है। आपके उद्योगसे इसकी कई शाखाएँ भी हैं और औषधि निर्माणशाला भी। आप और आपके सहायक वैद्य औषधालयकी अवैतनिक सेवा करते हैं। जो फ़ीस आदि पाते हैं वह भी औषधालयमें जमा कर देते हैं। आपके इस परिश्रम और त्यागके कारण सभी औषधालय और इनका गुणगान करते हैं। आपने अब औषधालयकी एक कमेटी बना दी है; जिसके सभापति माननीय पं० कमलापति त्रिपाठी और मन्त्री आप स्वयं हैं।

एलोपैथिक औषधालय बढ़ रहे हैं—

उत्तरप्रदेशमें अभी तक ५० देहाती एलोपैथिक चिकित्सालय हैं। सरकार आनन फानन मार्चमें ही और ५० बढ़ाकर उनकी संख्या १०० कर रही है। इनके द्वारा स्वास्थ्य केन्द्रोंका कार्य आरम्भ होगा। कर्मचारियोंकी नियुक्ति, दवा, फरनीचर आदिकी पूर्ति हो रही है। जिन पर पिया प्रसन्न वही सोहागिनत !!

मुद्रक :- पण्डित राजेन्द्रचन्द्र शुक्ल वैद्य, सुधानिधि प्रेस सम्मेलन मार्ग, प्रयाग
प्रका० :—वैद्य पण्डित सिद्धिनाथ दीक्षित कवीश्वर, प्रयाग।

वर्ष ४६ सं० ६ } { जून १६५८ ई०, आषाढ़ २०१५ वै०

समाचार

शर्मा जीका स्वर्गवास—हरिद्वार ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रमके भूतपूर्व मन्त्री पण्डित केदारनाथजी शर्माका स्वर्गवास हो गया। आप सुप्रसिद्ध व्याख्यान वाचस्पति पं० दीनदयालु शर्मा जीके जामाता थे। ऋषिकुलकी आपने २२ वर्ष सेवा की। आयुर्वेद विद्यापीठमें भी वर्षों काम किया। परलोक पत्रके सम्पादक और साहित्य तथा सनातन धर्म क्षेत्रके कार्यकर्ता थे। ऋषिकेश बाबा कालीकमली क्षेत्र और भिवानी ब्रह्मचर्याश्रम तथा अन्य कई संस्थाओंसे भी आपका सम्पर्क था। आपका स्वर्गवास ऋषिकुलमें ही हुआ। हम उनके पुत्र पं० कैलासनाथ शर्मा जीके प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं।

आसव अरिष्ट पर—सागरमें प्राणाचार्य पण्डित सुन्दरलालजी शास्त्रीके सभापतित्वमें वैद्यों और आयुर्वेद प्रेमियोंकी महती सभा हुई। उसमें सरकारसे प्रार्थना की गयी कि आसव-अरिष्टों पर लगी हुई रोक सरकार शीघ्र हटावे। यह भी कहा गया कि भङ्ग तथा अफीम आदिकी प्राप्ति पर जो बाधाएँ हैं वह भी दूर की जायँ।

बोर्डके रजिस्ट्रार—बोर्ड आफ इण्डियन मेडिसिनके रजिस्ट्रारकी जगह खाली हुई है। उसके लिये १५ अगस्त तक दरखास्त मांगी गयी थीं। पहले नियुक्ति अस्थायी होगी, इसके बाद स्थायी होनेकी सम्भावना है। जो आयुर्वेद अथवा तिब्बकी ऐसी डिग्री प्राप्त हों जिसके आधार पर रजिस्ट्री हो सकती है और जिनकी उमर ३५ वर्षसे कम न हो; एवं जिन्हें किसी सार्वजनिक संस्था चलाने अथवा शासकीय अनुभव ५ वर्षका हो; उन्हें सार्टिफिकट और प्रशंसा पत्रोंकी प्रामाणिक प्रतिलिपियोंके साथ आवेदन पत्र भेजना चाहिये। पता बोर्ड आफ इण्डियन मेडिसिन, मोतीमहल, लखनऊ।

मेडिकल समाचार—दाइयोंका काम सीखनेके लिये अभी तक १०) महीना वजीफा मिलता था। अब २०) महीना मिला करेगा। जिन राज्योंमें अभी तक दाइयों की शिक्षा आरम्भ नहीं हुई, वहां आरम्भ की जायगी। स्वास्थ्य मन्त्री मा० ठाकुर हुकुमसिंहजी अस्पतालोंका अचानक दौरा कर असावधान कर्मचारियोंको सावधान करते और सावधान कार्यकर्ताओंको प्रोत्साहन दे रहे हैं।

शुद्ध स्नातकोंको सुविधा—बम्बई सरकारने निश्चय किया है कि जो विद्यार्थी शुद्ध समितिकी अन्तिम परीक्षामें विषतन्त्र (टॉक्सीकोलोजी) और न्याय वैद्यक (मेडिकल जूरिस प्रूडेंस) विषय लेकर आयुर्वेद प्रवीण (D. S. A. C.) की उपाधि प्राप्त करेंगे, उन्हें बाम्बे मेडिकल सर्विसकी तृतीय श्रेणीकी नौकरीमें लिया जा सकेगा। ऐसे उम्मेदवारोंको नौकरीके

पहले बम्बई प्रान्तके किसी सरकार मान्य अस्पतालमें तीन महीने तक मेडिकोलीगल (नायवैद्यक) और पोस्टमार्टम (शवपरीक्षा) का शिक्षण लेना पड़ेगा। ऐसे लोगोंको सबसीडाइज्ड मेडिकल प्रैक्टिशनरकी तरह सहायता भी मिल सकेगी। इनकी नियुक्ति ८०) मासिक पर होगी और ५) प्रतिवर्ष उन्नति कर १००) होनेके बाद ६) प्रतिवर्ष उन्नति प्राप्त १६०) पर पहुँचेंगे। इसके बाद ८) वार्षिक तरक्की करते हुए २४०) मासिक मिलेगा। महँगाई भी मिलेगी।

शिक्षण संस्थाओंको सहायता—बम्बई प्रान्तकी फैकल्टी मान्य संस्थाओंमें पूना आयुर्वेद महाविद्यालयको १२०८७२), सूरतके ओच्छवलाल नाजर-महाविद्यालयको १११०५८), अहमदनगर आयुर्वेद महाविद्यालयको ७०४१८), सतारा आर्याग्ल महाविद्यालयको ६५०४०), नडियाद आयुर्वेद मेडिकल कालेजको ५०६३१) इस वर्ष मिलेंगे। शुद्ध आयुर्वैदिक संस्थाओंमें शिव आयुर्वेद विद्यालयको ३१०६२), नासिक आयुर्वेद विद्यालयको १६६२१), पूना अष्टांग आयुर्वेद विद्यालय को १००८६) और पुनर्वसु आयुर्वेद विद्यालय बम्बईको ५१२३) मिलेंगे। आयुर्वेद विद्यालय बड़ोदाको १५ हजार, भावनगर पाठशालाको १० हजार और पूना अष्टांग आयुर्वेद विद्यालयको भवन निर्माणके लिये भी १५ हजार रुपये मिलेंगे। आयुर्वेदजगत।

कैंसर क्लीनिक—मध्यप्रदेशके जबलपुर, भूपाल, इन्दौर और ग्वालियरमें चार कैंसर क्लीनिक खोले जायँगे। प्रयत्न होगा कि प्रारम्भिक अवस्थामें ही रोगका पता लग जाय। रोगियोंकी यहां दुबारा रोग निर्णय जांच होगी। सभी अस्पतालोंमें ऐसे पोस्टर-विज्ञप्ति पत्र लगाये जायँगे। जिनसे कैंसर होनेके कारणों पर प्रकाश डाला जायगा और उससे बचनेके उपाय समझे जायँगे।

जोधपुरकी सभा—मारवाड़ आयुर्वेद प्रचारिणी सभाके नये चुनावमें अर्श-भगन्दर विशेषज्ञ राजवैद्य सत्यदेवजी सभापति चुने गये। कविराज माधवप्रसाद शास्त्री, श्री जसराजजी जोशी, श्री रामचन्द्र शास्त्री उपसभापति चुने गये हैं।

शारीर शब्दशास्त्र परिषद—पहले काशीमें त्रिदोष चर्चा परिषद हुई। फिर पटनामें वैद्यनाथ आयुर्वेदभवनके द्वारा त्रिदोष चर्चाका विवेचन शास्त्रचर्चा परिषदमें हुआ। इसके बाद फिर वैद्यनाथ आयुर्वेदभवनके उद्योगसे पं० यादवजी त्रीकमजी आचार्यके सभापतित्वमें हरिद्वारमें रस-वीर्य-विपाक और प्रभावका विवेचन हुआ। अब फिर तृतीय शास्त्रचर्चा परिषद श्री वैद्यनाथ आयुर्वेदभवनके सञ्चालक पं० रामदयालुजी जोशी और पण्डित रामनारायण शर्मा वैद्य शास्त्री जीके द्वारा हरिद्वारमें २० जूनसे होने वाली थी; किन्तु वह अब टल गयी है। अभी केवल सब कमिटी दिल्लीमें होगी। सम्भवतः सितम्बर अक्टूबरमें बड़ी सभा होगी। इस संस्थाने ५ वर्षोंके परिश्रम और उद्योगसे जो शारीर सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दोंका चयन किया है उनका विचारपूर्वक निर्णय होगा।

श्री धन्वन्तरयेनमः

सम्पादक—
आयुर्वेदबृहस्पति श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल आयुर्वेदपंचानन, साहित्यवाचस्पति, प्रयाग

वर्ष ४६ सं० ६ —— सुधानिधि —— जून १९५८ ई०
अषाढ़ २०१५ वै०

सुधा स्वादीयसी ह्येतद्वचो नहि परीक्षितम् ।
प्रददाति सुधामेष सुधास्रावी "सुधानिधिः" ॥

विज्ञापन १) प्रतिपंक्ति प्रतिकालम

वार्षिक मूल्य ३)
प्रति अङ्क ।-)

सामयिक चर्चा

डाक्टरोंसे अनुरोध—

भारतके प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू जीने डाक्टरोंसे अनुरोध किया है कि वे गावोंमें मिशनरियोंकी भावनासे काम करें। वे देहातियोंको बन्धु, सखा और साथी बनाकर अपना काम करें। आपने यह भी कहा कि देहाती अस्पतालोंकी इमारतें सादी हों और उनके उपकरण कम खर्च वाले हों। भारतके पांच लाख गांवोंमें शहरोंके समान अस्पताल नहीं बनाये जा सकते। आपने उस सम्भावनाका भी अनुमान लगाया कि इस तरह समूचे देशमें निश्शुल्क चिकित्सा प्रणाली चालू की जा सकती है। आपने कहा कि देहाती लोगोंको अस्पतालोंके लिये चन्दा देना चाहिये। भवननिर्माणके लिये भूमि दें और स्थानीय संस्थाएँ ऐसे अस्पतालोंके संचालनका दायित्व अपने कन्धों पर लें। मेडिकल कालेजोंमें पढ़ने वाले युवकोंमें यह भावना पैदा की जानी चाहिये कि वे देहातों, पर्वतीय क्षेत्रों और दूरके इलाकोंमें जायँ। हर एक डाक्टरी विद्यार्थीके लिये यह अनिवार्य होना चाहिये कि वह जीवन क्षेत्रमें उतरनेसे पहले एक दो साल गांवोंमें जरूर सेवा करें। गांवके लोग आपसमें मिलकर कमेटियां बनालें और डाक्टरको भी उसका सदस्य रखें। इमारतोंमें अधिक रुपया खर्च करनेकी अपेक्षा भले आदमियों, अध्यापकों अथवा डाक्टरों तथा बुनियादी उपकरणों पर खर्च करना अधिक अच्छा है। बरमिंघमें पिछले साल एक भारतीय डाक्टरकी मृत्यु हुई। उसके अन्तिम संस्कारके लिये ऐसा शानदार जलूस निकाला गया जैसा बड़े बड़े राजा महाराजाओंका भी नहीं निकलता। दो दिनों तक लोग श्रद्धाञ्जलि देते रहे, तब तक शव नहीं उठाने दिया गया। उस डाक्टरने जनताकी सेवा सखाके रूपमें की थी। जनताका प्रेम सम्पादन करना भी एक असाधारण वस्तु है। मानवमात्रकी सेवा करनेसे वह मनुष्य अपेक्षाकृत अच्छा मानव साबित होगा। पूर्वी पहाड़ी इलाकोंमें स्काटलैण्डकी एक महिला ऐसे लोगोंके बीच वर्षोंसे काम कर रही है जो नरमुण्डोंका शिकार करते रहते हैं। डाक्टरोंको सुख सुविधाएँ अवश्य मिलनी चाहिये किन्तु केवल सुख सुविधाओंके लिये ही सोचते रहना मनुष्यको समाज सेवाके लिये अयोग्य बना देता है। इस सभाके सभापति केन्द्रीय स्वास्थ्यमन्त्री डाक्टर डी० वी० करमरकर थे।

नेहरू जीका उपदेश १६ आने ठीक है और डाक्टरोंमें ऐसी सेवा भावना आ जावे तो अच्छा ही होगा। किन्तु हमारी शिकायत यह है कि जिन वैद्योंमें यह भावना पहलेसे वर्तमान है और जो देहातके

लोगोंसे घुल मिलकर सेवा कार्य कर रहे हैं और सरकारी प्रोत्साहन मिलनेसे और भी अधिकतासे कर सकते हैं उन्हें क्यों नहीं प्रोत्साहन देकर सेवाके लिये अधिक तैयार किया जाता। देहातियोंकी सेवा जितनी उत्तमतासे वैद्य कर सकते हैं उतनी कोई डाक्टर नहीं कर सकता। नेहरूजी अपना रुख पलटें और करमरकर जीको सलाह दें तो देहातोंका सोलहों आने काम वैद्योंको सौंप दिया जाय फिर देखिये कुछ वर्षोंमें देहातोंकी मेडिकल और स्वास्थ्य सम्बन्धी स्थिति कैसी सुधर जाती है—

आयुर्वेद संशोधनभवन, निकोल—

अहमदाबादमें एक अनुसन्धान संस्थाका उद्घाटन हो रहा है। उसका नाम "आयुर्वेद संशोधनभवन, निकोल" होगा। इस कार्यके लिये संस्थापकोंने ७० बीघा जमीन ले ली है। संस्थाकी रजिस्ट्रीकी कार्यवाही हो रही है। हमसे भी इसके "फाउण्डर मेम्बर आफ दी बोर्ड आफ ट्रस्टीज आफ दी इंस्टीट्यूट" संस्थापक सदस्य होनेका अनुरोध किया गया था। किन्तु लगातार यात्रामें रहनेके कारण हम समय पर उत्तर नहीं दे सके। कुछ भी हो ऐसी संस्थाके स्थापनके समाचारसे हमें हार्दिक प्रसन्नता है और एक आयुर्वैदिक सदस्य होनेके नाते हमें ही नहीं सभी वैद्योंको इसकी शुभचिन्तना और सफलता की कामना करनी चाहिये। इसका स्थायी कार्यालय निकोल-अहमदाबादमें रहेगा। इस संस्थाके उद्देश्य हैं आयुर्वैदिक कालेज, रसायनशाला आदि स्थापित कर आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणोंकी सहायतासे आयुर्वेदमें अनुसन्धानका काम करना एवं सार्वजनिक चिकित्सालयों, कालेजोंकी स्थापना कर छात्रों तथा अध्यापकोंके निवास भोजन आदिकी व्यवस्था करना। साथ ही आयुर्वेद सम्बन्धी पुस्तकालय और वाचनालयकी स्थापना करना एवं अप्रकाशित साहित्यका संग्रह करना है। संस्थाके उद्देश्योंमें एक प्रकाशन विभागकी व्यवस्था कर आवश्यक टिप्पणियोंसहित अप्रकाशित आयुर्वैदिक पुस्तकोंका प्रकाशन भी है। यही नहीं आयुर्वेदके पाठ्यक्रमका निर्धारण और संशोधनके लिये परिषदों (बोर्ड) की स्थापना एवं शास्त्री, आचार्य, पोस्टाचार्य आदि आयुर्वैदिक उपाधियोंके लिये अध्यापनका प्रबन्ध करना और क्षेत्रीय आयुर्वैदिक शास्त्रचर्चा परिषदोंकी आयोजना करना भी है। संस्थाके डाइरेक्टर और ट्रस्टियोंके अतिरिक्त कमसे कम २ लाख रुपये देनें वाले सज्जनोंको संरक्षक, एक समयमें कमसे कम २५ हजारसे १ लाख तक देने वालोंको उपसंरक्षक, एक बारमें एक हजारसे ५ हजार तक देने वालोंको आजीवन सदस्य एवं ५०) साल सहायता देने वालों को वार्षिक सदस्य बनानेकी भी व्यवस्था है। कोई २३ वर्षसे अधिक उमरका व्यक्ति संस्थाके उद्देश्य और नियमोंसे सहमत होने पर संस्थाका सदस्य हो सकता है। प्रत्येक सदस्यको मतदानका अधिकार और बोर्ड आफ ट्रस्टीज़के निर्वाचनमें (यदि वह पागल या दीवालिया न हो) खड़े होनेका अधिकार है। संस्थाकी ओरसे एक आयुर्वेद संशोधन पत्रिका प्रकाशित होगी और वह सदस्योंको बिना मूल्य मिला करेगी। संस्थाके कार्योंकी व्यवस्था बोर्ड आफ ट्रस्टीज द्वारा होगी। फाउण्डर-अर्थात संस्थापक डाइरेक्टर आजीवन ट्रस्टी रहेंगे प्रथम डाइरेक्टर अपना स्थानापन्न या उत्तराधिकारी नियुक्त कर सकेंगे। इसी प्रकार फाउण्डर ट्रस्टी भी आजीवन होंगे और उन्हें भी अपना स्थानापन्न नियुक्त करनेका अधिकार होगा। यदि किसी फाउण्डर ट्रस्टीका स्थान रिक्त होगा तो बोर्ड आफ ट्रस्टी उसकी निर्वाचन करेगा। बोर्ड आफ ट्रस्टीजकी संख्याके चौथाई संख्याका निर्वाचन प्रति तीसरे वर्ष हुआ करेगा। कोई पागल, दीवालिया या नैतिक अपराध का अपराधी ट्रस्टी नहीं रह सकेगा। बोर्ड आफ ट्रस्टीजकी बैठक सालमें कमसे कम एक बार अवश्य होगी। (१०) संस्थाकी सम्पत्ति बोर्ड आफ ट्रस्टीजके अधीन रहेगी। संस्थाकी व्यवस्था और कर्मचारियों के वेतनका प्रबन्ध बोर्ड आफ ट्रस्टीज करेगा। (११) संस्थाका धन उद्देश्योंके प्रतिकूल कार्यमें नहीं लगाया जा सकेगा। (१२) बोर्ड आफ ट्रस्टीज कर्म-

चारियोंकी नियुक्ति, ग्राण्ट और संस्थाके उद्देश्योंकी पूर्ति और प्रगतिके कार्य करेगा। (१३) मन्त्री संस्था का स्थायी कार्यकर्ता होगा। वह बोर्ड आफ ट्रस्टीज के निर्देशके अनुसार कार्य करेगा। मन्त्री भी बोर्ड आफ ट्रस्टीजका एक्स आफिसियो मेम्बर होगा और मतदान भी कर सकेगा किन्तु अपना स्थानापन्न नियुक्त नहीं कर सकेगा। (१४) बोर्ड आफ ट्रस्टीजके चौथाई सदस्योंके निर्वाचनके लिये तीन वर्ष में एक बैठक होगी। किन्तु साधारण कार्योंके लिये वार्षिक बैठक हुआ करेगी। (१५) बोर्ड आफ ट्रस्टीजकी मीटिङ्गके लिये दो महीने पहिले सूचना दी जाया करेगी। (१६) अदालती कामोंके लिये बोर्ड आफ ट्रस्टीज दो स्थानीय ट्रस्टी नियुक्त कर सकेगा। (१७) बोर्ड आफ ट्रस्टीज ऐसे अधिनियम बना सकेगा जो संस्थाके नियमोंके प्रतिकूल न हों। (१८) संस्थाका विघटन सोसायटीज रजिस्ट्रेशन ऐक्ट १८६० की धारा १३ के अनुसार ही हो सकेगा। हम चाहते हैं कि संस्था चिरजीवनी हो और सफलता पूर्वक अनुसन्धानका कार्य करती रहे। इससे सरकारी संस्थाओंको आवश्यक प्रवृत्ति मिलती रहेगी और अखिल भारतीय तथा प्रान्तीय आयुर्वैदिक संस्थाओंको भी कर्तव्य बोधकी प्रेरणा मिलती रहेगी। हम संस्थाकी शुभकामना करते हैं।

सम्मेलनके सभापति और सम्मेलन—

आगामी अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन दिल्लीमें होने वाला है। अनेक वर्षोंके पश्चात उत्तरी भारतमें अखिल भारतीय सम्मेलनका यह अधिवेशन होगा। दिल्लीमें पहले एक बार कविराज उमाचरण भट्टाचार्यके सभापतित्वमें सम्मेलन हुआ था तब सम्मेलन द्वारा एक आयुर्वेद महाविद्यालय स्थापित करनेकी चर्चा प्रधान रूपसे हुई थी। उस समय काशीमें आयुर्वेद महाविद्यालयके स्थापनकी भी चर्चा चल रही थी; किन्तु वैद्योंमें यह मत प्रबलता पा रहा था कि विश्वविद्यालयके साथ जो आयुर्वेद महाविद्यालय हो उसका तो हमें स्वागत करना ही चाहिये और यथाशक्ति उसकी सहायता भी करनी चाहिये; किन्तु आयुर्वेद विद्यापीठके पाठ्यक्रमके अनुसार शिक्षण देने वाला सम्मेलनका अपना विद्यालय होना अनिवार्य है और उसके लिये वैद्य समुदायको प्रयत्न करना ही चाहिये। इसलिये महामना मालवीय जीकी सलाहको यवतमालके डाक्टर पराञ्जपेने वैद्यों पर प्रेमपूर्वक अत्याचारकी उपमा दी थी। दूसरे बार जब दिल्लीमें आयुर्वेद महासम्मेलनका अधिवेशन स्वर्गीय यादवजी भाईके सभापतित्वमें हुआ तब भी आयुर्वेद महाविद्यालय स्थापनकी चर्चा प्रधानतासे हुई थी और एक प्रस्ताव के द्वारा उसका समर्थन हुआ था। कविराज उपेन्द्रनाथदास जीने इस कार्यमें बड़ा उत्साह और दिलचस्पी दिखाई थी। किन्तु आगेकी घटनाएँ ऐसी ताजी हैं कि महाविद्यालयकी स्थापनामें जो विघ्न आये, उनका स्मरण न होना ही अच्छा है। किन्तु उनके स्मरणसे हमें सावधान रहनेकी चितावनी अवश्य मिलेगी। अब सम्मेलनका तीसरी बार अधिवेशन दिल्लीमें हो रहा है। अब तीसरी बार चर्चा नहीं अवश्य स्थापनका काम ही होना चाहिये। पचास वर्ष चर्चा करते हुए अब तो 'कार्यं साधयामि वा शरीरं पातयामि" की प्रतिज्ञाके साथ हमें मैदानमें अवतीर्ण होना पड़ेगा। आयुर्वेद विद्यापीठ के स्नातकोंका जैसा चाहिये वैसा मान नहीं हो रहा है। अब उन्हें सरकारी नौकरी प्राप्त करनेमें बाधाएँ उपस्थित होती हैं। कहीं कहीं तो विद्यापीठके स्नातकोंकी रजिस्ट्री होनेमें भी बाधा उत्पन्न होती है। हम न तो विद्यापीठकी परीक्षाओंको छोड़ सकते हैं और न उसके स्नातकोंका अपमान देख सकते हैं। इस दृष्टिकोणको लेकर अगले सम्मेलनके लिये हमें पैर उठाना है; और इसमें उसके सभापतियोंका महत्व विशेष रूपसे है।

महासम्मेलनके सभापति पण्डित अनन्तशर्मा त्रिपाठी एम० ए० आयुर्वेदाचार्य हैं, जो पिछले वर्ष भी सभापति रह चुके हैं और अपनी योग्यता और कार्यपटुताकी छाप आयुर्वेद जगत पर डाल चुके हैं। आपका गंजाम जिला पहला आन्ध्र और मद्रासमें

था और अब उड़ीसामें है। आपमें दोनों प्रान्तोंकी कार्यतत्परताका समावेश है। मद्रासका दृढ़ निश्चय और उड़ीसाकी महत्वपूर्ण आकांक्षाएँ आपके हृदय पटल पर निवास करती हैं। इस समय आप ५३ वर्षके हैं, अब जीवनका खेलवाड़ नहीं कर्तव्य-निष्ठाके साथ दृढ़निश्चय पूर्वक स्थायी कार्यसाधन आपका ध्येय होना चाहिये। आपकी विद्वत्ता और अनुभव इस कार्यमें आपका पथप्रदर्शन करें और विघ्नकारी झंझावात एवं परामर्शोंके आप शिकार न हों यही अभीष्ट है। सम्मेलनका आयुर्वेद महाविद्यालय स्थापित कर आप अपना नाम आयुर्वेदके इतिहासमें कीर्तिके साथ अमर कर जायँ यही अभीष्ट है।

सम्मेलनके साथ ही आयुर्वेद विद्यापीठका भी अधिवेशन होता है। उसे सीधा विद्यापीठका अधिवेशन न कहनेकी मनहूसियत इधर कुछ दिनोंसे भले ही हो; किन्तु है वह विद्यापीठका ही अधिवेशन और उसके सभापति चुने गये हैं हमारे चिरपरिचित और आयुर्वेद महाविद्यालय स्थापनके उद्योगी कविराज उपेन्द्रनाथ दासजी। आप काव्य-व्याकरण-सांख्य और आयुर्वेदके सुप्रसिद्ध विद्वान हैं और आयुर्वेद तिब्बिया कालेजमें आयुर्वेदके प्रधानाध्यापक रहकर आपने काले बालोंमें सफेदी लानी आरम्भ की है। आयुर्वेदका शिक्षण कैसा होना चाहिये। उसमें किस अंशमें और कहां कितना वृंहण या संशोधन होना अपेक्षित है; इसका आपको अनुभव जन्य ज्ञान है। आयुर्वेदको दुनिया किस दृष्टिसे देखती है और आयुर्वेदजगतका दृष्टिकोण क्या है और क्या हो सकता है यह आपका विचारणीय विषय हो सकता है; क्योंकि इस सम्बन्धमें आपके मस्तिष्कको परिचालना वर्षोंसे हो रही है। आप आयुर्वेद विद्यापीठके चार बार प्रधान मन्त्री और दो बार उपाध्यक्ष रह चुके हैं। इस बार दो संघर्षोंके बाद आप विद्यापीठके सभापति विशाल बहुमतसे चुने गये हैं। अतएव अपने चिर अभिलषित आयुर्वेद महाविद्यालयके स्थापनके लिये आपको दृढ़ संकल्प होना है। आपको अपनी सारी शक्ति आयुर्वेद महाविद्यालयकी स्थापना और उसकी समीचीन योजना तैयार करनेमें लगानी है। आयुर्वेद जगतके कर्मनिष्ठ तपस्वियों, उत्साहियों, मनस्वियोंको लेकर उनकी सम्मतिके निचोड़के सहारे आप अपना मार्ग बनाइये। अपनी धारणा तो प्रधान है ही; किन्तु अपने सहयोगियोंकी सम्मतिका भी आदर करते हुए कर्तव्य पथमें बढ़नेका प्रयत्न कीजिये। आयुर्वेद विद्यापीठकी कागजी स्थितिको अब प्रत्यक्ष व्यापक कर्मक्षे विविध स्वरूपोंको साकार कर दिखाइये। जिस प्रकार आयुर्वेद विद्यापीठका पाठ्यक्रम इधर चालीस वर्षोंसे आदर्श और मार्गदर्शक रहा है, उसी प्रकार उसका शिक्षण भविष्यके लिये आदर्श और मार्गदर्शक होकर भारतव्यापी प्रभाव उत्पन्न करने वाला और विश्वमें आयुर्वेदको प्रतिष्ठाके साथ गुरुत्व प्रदान कराने वाला हो। किसी सरकारी संस्थासे अभी ऐसी आशा फलवती होनेकी सम्भावना नहीं है। अतएव अपने दृष्टिकोणके अनुसार आयुर्वेद वालों को अपना शिक्षणक्रम निर्धारित कर प्रवर्तित करना है। इसी आशाको लेकर हम आयुर्वेद महासम्मेलनके निर्वाचित सभापति और आयुर्वेद विद्यापीठके चुने हुए सभापतिका स्वागत करते हैं और दिल्लीमें यथार्थ सफल सम्मेलनकी सम्पन्नताकी ईश्वरसे प्रार्थना करते हैं। दिल्लीमें सम्मेलनकी तैयारी दृढ़ता और जोर शोरसे होती रहे। उसकी हलचल वैद्योंके हृदय को आन्दोलित करती रहे यही हम स्वागतकारिणीसे आशा रखते हैं।

आचार्योंकी जयन्ती—आयुर्वैदिक आचार्यों की जयन्ती मनाना आवश्यक है और उसके लिये हमने विचार कर एक धारणा प्रसिद्ध की है। इस विषय पर आयुर्वेदजगतमें चर्चा होनी चाहिये। आयुर्वैदिक पत्रोंमें इस सम्बन्धमें विचार प्रकट होने चाहिये। यदि व्यवसायी आयुर्वैदिक पत्रोंको इसके लिये अवकाश न हो तो आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिकाके कालम तो इसके लिये खुले रहने चाहिये। आचार्योंके स्मरणसे हमारी परम्परा उज्वल होती है,

हमारे इतिहासकी शृङ्खला दृढ़ होती है, हमारी भारतीय बुद्धिमें प्रेरणा और आस्थाकी दृढ़ता आती है। हमें इस बातका अवसर मिलता है कि हम अपने स्वरूपकी महत्ताको देखें और भारतीय जनताको बतलावें कि आपका धार्मिक, भारतीय, व्यावहारिक और नैतिक कर्तव्य है कि आप अवतारोंके समान अपने वैदिक और ऐतिहासिक आचार्यों पर अपनत्व भाव प्रकट करते हुए समझें कि आयुर्वेद हमारा है और उसके प्रति हमारा कुछ कर्तव्य भी है। यही नहीं प्रचारके लिये यह एक अच्छा साधन है जिसके द्वारा हम आयुर्वैदिक आन्दोलन बढ़ा सकते हैं।

आयुर्वेदके आचार्य तीन कोटिके हैं। (१) देव कोटि (२) ऋषिकोटि और (३) मानव कोटि। देव कोटिमें ब्रह्मा, दक्षप्रजापति, अश्विनीकुमार, शिव, इन्द्र, भास्कर, सोमदेव और धन्वन्तरि हैं। ऋषिकोटिमें वृहस्पति, भरद्वाज, आत्रेय, काश्यप, भेड़ु, हारीत, क्षारपाणि, सुश्रुत, अथर्वण, अग्निवेश आदि हैं। मानव कोटिमें इतिहास कालसे इधरके आचार्य हैं। जिनमें श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदेका नाम मुख्य है। ब्रह्माकी जयन्तीके लिये कल्पादिकी कोई तिथि निश्चित करनी चाहिये। कृतयुगका आरम्भ कार्तिक शुक्ल ९ अक्षय नौमी या कल्पादिकी कोई तिथि चैत्र शुक्ल ६ या युगादि अक्षय तृतीया वैशाख शुक्ल ३ निश्चित करना उचित होगा। दक्ष प्रजापतिकी कोई तिथि अभी निश्चित मालूम नहीं हुई। ब्रह्माके साथ ही उनका स्मरण किया जा सकता है। अश्विनीकुमारोंका जन्मदिन आश्विन शुक्ल पूर्णिमा है जिसमें अश्विनी नक्षत्र अवश्य रहता है। इन्द्र जयन्तीके लिये आषाढ़ मासमें जिस दिन वर्षाका आरम्भ कारक हस्तार्क हो उस दिन होना चाहिये। पहले व्रजमें कार्तिकमें इन्द्र पूजन होता था; किन्तु उसे कृष्ण भगवानने बन्द करा दिया था। इस वर्ष हस्तार्क आषाढ़ शुक्ल पञ्चमी रविवारको है। रसशास्त्रके आचार्य भगवान शिव हैं। विषोंका विश्लेषण और प्रयोग आरम्भ करनेके लिये उन्होंने फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशीको विषपान किया था। शिवरात्रिके नामसे वह तिथि प्रसिद्ध है ही। पुराणों में आयुर्वेदके आचार्योंमें भगवान भास्करका भी नाम आता है। "आरोग्यं भास्करादिच्छेत" प्रसिद्ध ही है। खासकर पशु चिकित्साकी परम्परामें भी उनका नाम आता है। कार्तिक शुक्ल ६ को सूर्य षष्ठीव्रतका विधान है, वही दिन इसके लिये उपयुक्त होगा। औषधियोंके आचार्य और राजा चन्द्रमा हैं। चन्द्रपूजनके लिये आश्विन कृष्ण ६ को चन्द्रषष्ठी व्रत प्रसिद्ध है। यों भी चन्द्रमा अत्रिपुत्र होनेके कारण आत्रेय हैं ही। धन्वन्तरि जयन्ती प्रसिद्ध ही है। इसी उत्सवके सिलसिलेमें भगवान धन्वन्तरि, काशिराज धन्वन्तरि, दिवोदास धन्वन्तरि, विक्रम सभाके धन्वन्तरि और वङ्गदेशीय धन्वन्तरि आदिके नामकी भी चर्चा हो सकती है।

ऋषिकोटिके आचार्योंमें महर्षि भरद्वाज मुख्य हैं। उनकी जन्मतिथि कार्तिक शुक्ल ९ अक्षय नौमी है। धन्वन्तरि उत्सवसे लेकर अक्षय नौमी तक एक उत्सव पक्ष मनाया जाया करे, उसमें क्रमशः सभी आचार्योंके नामों और कार्योंकी चर्चा हो सकती है। चरक संहितामें जिन जिन ऋषियोंका नाम आया है उन सभीके सम्बन्धमें इस पक्षमें चर्चा हो सकती है। सुश्रुतादि शल्य शालाक्यके आचार्योंका उल्लेख धन्वन्तरि उत्सवके सिलसिलेमें हो सकता है। कश्यपका उल्लेख भी कार्तिकमें ही ठीक रहेगा। कश्यपसे सृष्टि हुई है और सृष्टिका आरम्भ कृतयगका आरम्भ अक्षय नौमीसे माना जाता है। अतएव यही तिथि उनकी चर्चाके लिये भी अनुकूल रहेगी। देवगुरु वृहस्पति आयुर्वेदके आचार्य हैं। महर्षि भरद्वाजके पिता हैं और वेदोंमें उनका उल्लेख औषधियोंके नाममें वृहस्पति प्रसूता कहकर हुआ है। उनकी यदि अलग जयन्ती मनायी जाय तो श्रावण कृष्ण द्वितीयाको अभीष्ट सिद्धिके लिये हल्दीके वृहस्पति बनाकर पूजा करनेका विधान है। वही तिथि उपयुक्त रहेगी। संहिता लेखकोंमें पुनर्वसु आत्रेय, कृष्णात्रेयका नाम विशिष्टतासे आता है। अतएव उनकी जयन्ती पृथक रूपसे मनायी जा

सकती है। महाराष्ट्रके वैद्योंने कार्तिक या मार्गशीर्षमें उसे मनाना आरम्भ किया है; परन्तु वह तिथि अप्रामाणिक मालूम पड़ती है। आत्रेयने जनपदोध्वंसका उपदेश आषाढ़ मासमें किया था अतएव उसके लिये आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशीकी तिथि उपयुक्त है। भाद्र शुक्ल पञ्चमी ऋषिपञ्चमीके नामसे प्रसिद्ध है। अतएव उस समय भी ऋषियोंकी जयन्तीके रूपमें चर्चा हो सकती है। आयुर्वेदका वैदिककालीन विकास अथर्ववेदमें अधिकतासे हुआ है और दध्यङ्ङ अथर्वणकी तिथि दधीचि जन्मकी तिथि भाद्र शुक्ल अष्टमीको रखना उचित है। उसी दिनसे महालक्ष्मीका व्रत भी आरम्भ होता है जो ऐश्वर्य सूचक है। इस तिथिका अवश्य प्रचार होना चाहिये।

इतिहासकालसे लेकर आधुनिककाल तकके आचार्योंके स्मरणके लिये उचित यह होगा कि शङ्करदाजी शास्त्री पदेकी जन्मतिथि चैत्र कृष्ण त्रयोदशीसे लेकर मरण तिथि चैत्र शुक्ल नौमी तक एक उत्सव पक्ष मनाया जाय। उसमें शङ्कर शास्त्रीके सहित आधुनिक सभी आचार्यों और आयुर्वेद सेवकोंका उल्लेख और चर्चा हो। सभाएँ और सम्मेलन हों। भिन्न भिन्न आचार्योंके नामसे भी अलग सभाएँ की जा सकती हैं। आचार्य गङ्गाधर, शार्ङ्गधर, भावमिश्र, लोलिम्बराज, चक्रपाणि, कविराज द्वारकानाथसेन, गणनाथसेन, योगीन्द्रनाथसेन, राजेन्द्रनाथसेन, श्यामादास वाचस्पति, यामिनीभूषण राय, विनोदलालसेन, उपेन्द्रनाथसेन, व्रजविहारी चतुर्वेदी, रामावतार मिश्र, गणेशदत्त त्रिपाठी, अर्जुन मिश्र, श्यामसुन्दराचार्य, जगन्नाथशर्मा, रामनारायण मिश्र, उमापति वाजपेयी, यागेश्वरजोशी, रामचन्द्रशर्मा, वैद्यराज देशाई, पं० वाल्मीकिशर्मा, कविराज उमाचरण, त्र्यम्बक शास्त्री, कृष्णराम शास्त्री, लक्ष्मीराम स्वामी, नन्दकिशोर, झण्डू भट्ट, जटाशङ्कर त्रिवेदी, बाबाभाई अचलजी, जुगतराम, देवधरशास्त्री, भालचन्द्र भाटवडेकर, वामनशास्त्री दातार, पण्डित हरिप्रपन्नाचार्य, बाटवेशास्त्री, साठेजी, लागवणकर, यादवजी त्रीकमजी आचार्य, गुणेशास्त्री, नानलशास्त्री, डाक्टर भण्डारकर, पटवर्धन, पण्डित डॉ० गोपालाचालू आदि नामोंकी एक लिस्ट तैयार कर उनके संक्षिप्त जीवन चरित्र और कार्योंका उल्लेख कर चर्चा होनी चाहिये। इनके जीवन चरित्रका एक संग्रह ग्रन्थ प्रकाशित होना चाहिये। समय बीतता जायगा और आने वाली पीढ़ी पीछेके कार्यकर्ताओं को भूलती जायगी। अभी अपने सामनेके कितने ही कार्यकर्ताओंका नाम हमें ही याद नहीं आ रहा। फिर क्या हाल होगा। हमारा इतिहास ही विस्मृत हो जायगा। आयुर्वेद महासम्मेलनको इस कार्यके लिये प्रयत्नशील होना चाहिये। इस प्रकार आचार्यों की जयन्तीके रूपमें हम अपना इतिहास ताजा रखेंगे। परम्परा कायम रखेंगे। इसमें भूल करना हमारे अपराधमें शामिल है। आयुर्वेद महासम्मेलन को यथार्थ आन्दोलनकी प्रवृत्ति उत्पन्न कर बढ़ानी चाहिये।

आयुर्वेद विश्व परिषद्—हम बहुत दिनोंसे इस बातकी चर्चा करते आ रहे हैं कि एक ऐसा सङ्गठन होना आवश्यक है, जिसके द्वारा लङ्का, ब्रह्मदेश, चीन, श्याम, हिन्दएशिया, सुमात्रा, जावा आदिमें आयुर्वेदकी चर्चा की जा सके। इन देशोंमें प्राचीन कालमें और बौद्धकाल तक आयुर्वेदका प्रचार होता आया है; किन्तु इधर अशान्ति और पराधीनताके पाशमें जकड़ा हुआ भारत ऐसी परवशता में दिन काटता रहा कि इस कार्यके लिये उसे अवकाश और सुविधा नहीं थी। अब भारत स्वतन्त्र है और अब आवश्यक है कि देशमें आयुर्वेदका प्रधानतासे व्यवहार और प्रचार हो और साथ ही जिन देशोंमें अब भी आयुर्वेद किसी रूपमें विद्यमान है वहां प्रचार कर समन्वय रूपमें उसका प्रचार बढ़ाया जाय। एशियाके जिन देशोंमें इस समय प्रचार नहीं भी है; किन्तु मिश्र, अरब, फारस, जापान आदिमें नये सिरेसे फिर उद्योग किया जाय। अच्छा तो यह होता कि यह कार्य अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलनकी ओरसे आरम्भ होवे;

किन्तु इस समय सम्मेलनमें आत्मशक्तिका समतोल किस मात्रामें है इसका विश्वास शायद उसके वर्तमान अधिकारियोंको भी नहीं है। किन्तु समय अपनी आवश्यकताका मार्ग स्वयं निकाल लेता है। मालूम पड़ता है कि ईश्वरको यह कार्य अभीष्ट प्रतीत होता है। पण्डित प्रभाकर शास्त्री आचार्य एम० ए० पहले झांसी आयुर्वेद विश्वविद्यालयमें थे। इस समय महामान्य मुंशी जीके द्वारा स्थापित भारतीय विद्याभवन (चौपाटी बम्बई ७) में रजिस्ट्रारका काम कर रहे हैं। उनसे अभी हरिद्वारमें हमारी मुलाकात हुई। उन्होंने बतलाया कि "आयुर्वेद विश्वपरिषद संस्था" की स्थापना हो गयी है। उसके प्रधान सभापति माननीय सर राधाकृष्णन और कार्याध्यक्ष चेयरमैन माननीय मुरारजी देशाई हैं। महामान्य मुंशीजी निर्देशक हैं और पण्डित शिवशर्मा जी भी उसके सदस्य हैं। मन्त्रीका काम स्वयं प्रभाकर शास्त्रीजी करेंगे। प्रत्येक प्रान्तसे चार चार आयुर्वैदिक विद्वान इसमें सदस्य रूपसे लिये जायँगे। हम इस संस्थाकी स्थापनासे बहुत प्रसन्न हुए हैं। हमारी आशाका क्षेत्र विस्तीर्ण हो गया है। इस संस्थाके द्वारा पडोसी देशोंमें तो आयुर्वेदके प्रचारका प्रयत्न होगा ही; किन्तु इस समय रूसकी ओर हमारी नजर विशेष है। यूनान, इटली और जर्मनीमें भी कार्य हो सकता है। इसके बाद इङ्गलैण्ड और अमेरिकामें भी काम हो सकता है। हम चाहते हैं कि संस्था उत्साहके साथ कार्य करे और भारतीय सरकार उदारताके साथ इसे सहायता दे। जिन पश्चिमी भावापन्न हमारे मन्त्रियों और अधिकारियों को अभी आयुर्वेदमें विश्वास नहीं है, उन्हें समझना चाहिये कि आयुर्वेदमें मूलतः वह शक्ति और आधार भूत योग्यता है कि विश्वके नये प्रकाश, अनुसन्धान, उपयोगी शैली और क्रियाको अपनेमें पचा सके और विश्वके स्वास्थ्य और चिकित्सा क्षेत्रमें उपयोगी कार्य पूरा कर सके। अतएव सरकार अपने सांस्कृतिक विभागके द्वारा इसकी समुचित सहायता करे और विदेशोंमें आयुर्वेदके प्रचारका मार्ग सुगम करे। आयुर्वेद विश्वमें अपना प्रभाव बढ़ा सके यही अभीष्ट है।

धुलेकरजी चुन लिये गये—

आयुर्वेद क्षेत्रके शायद सभीको यह अच्छी तरह मालूम है कि वैद्य न होते हुए भी झांसीके पण्डित रघुनाथ विनायक धुलेकर जी पिछले ४० वर्षोंसे आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये प्रयत्नशील हैं। आपने आयुर्वेदकी दशा जाननेके लिये उसके साहित्यका अध्ययन किया और उसकी उन्नति कामनासे प्रेरित होकर पहले झांसीमें एक आयुर्वेद कालेजकी स्थापना की। यही नहीं उच्च आयुर्वेद साहित्यके मन्थन अध्ययन और अनुसन्धान सम्बन्धी प्रेरणाकी जागृतिके लिये उन्होंने एक आयुर्वेद-विश्वविद्यालयकी भी प्रतिष्ठा की। सबसे पहले आयुर्वेदिक स्नातकोत्तर शिक्षण और परीक्षाकी व्यवस्था आपने इस विद्यालयके द्वारा आरम्भ की। स्नातकोत्तर शिक्षणमें एम० एस० सी० के समकक्ष आयुर्वैदिक एम० एस० सी० आयुर्वेद वाचस्पतिकी परीक्षा और उपाधि प्रचलित की। डी० एस० सी० या डाक्टर आफ आयुर्वेदकी उपाधिकी भी प्रतिष्ठा कर आपने आयुर्वेद-बृहस्पति उपाधिका निर्माण और प्रचलन किया। इस विश्वविद्यालयके लिये आप सतत प्रयत्नशील रहते हैं। सरकार और आयुर्वेदजगतका कर्तव्य था कि इसे दृढ़ कर इसका कार्यविस्तार करनेका कार्य होता; किन्तु जैसा चाहिये वैसा तूफानी कार्यक्रम इसके लिये नहीं देखा जाता। न तो वैद्य जगतने इसे अपनी भावी उन्नति का आशास्थल समझ इसमें अपनी संलग्नता दिखाई और न सरकारने दिल खोलकर इसे सहायता देकर पूर्ण रूपसे अपनानेका प्रयत्न किया। सब प्रकारसे अनुत्साह पूर्ण वातावरण रहने पर भी धुलेकरजी तो उसके लिये पागल बने फिर रहे हैं असेम्बलीमें जावें तो आयुर्वेदकी धुन, पार्लिमेंटमें जावें तो आयुर्वेदकी धुन इनके साथ रहती है। आयुर्वेदके लिये ये अड़ जाते हैं, लड़ जाते हैं और कड़े पड़ जाते हैं। इसलिये राजनैतिक क्षेत्रमें भी लोग इनसे भयभीत रहते हैं। इन्हें देखते ही इनके सहयोगी मजाकमें कह उठते हैं देखो

आयुर्वेद आये, आयुर्वेद विश्वविद्यालय आये। ये अपने सहयोगियोंको, अधिकारियोंको भी आयुर्वेदके लिये आग्रहके साथ परेशान करते रहते हैं। इतना होने पर भी दैवदुर्विपाकसे पिछले चुनावके समय पार्लिमेंटमें जानेका इन्हें अवसर नहीं मिला। यही नहीं केन्द्रीय राज्य परिषदमें भी ये न पहुँच पाये। आयुर्वैदिक संसारकी उत्सुकता और निराशाका प्रभाव उत्तरप्रदेशीय अधिकारी वर्ग पर मालूम पड़ता है पड़ा। प्रान्तीय कौंसिलमें म्युनिसिपल बोर्ड, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और टाउनएरिया क्षेत्रसे कुछ लोगोंका चुनाव हुआ। उसमें इलाहाबाद और झांसी डिवीजनसे आप उम्मेदवार हुए। यही नहीं सर्वाधिक वोटोंसे आप चुन लिये गये। हम इसके लिये वोटर वर्गको धन्यवाद देते हैं और इस चुनावके लिये धुलेकर जीको भी बधाई देते हैं। आशा है कुछ महीनोंसे पार्लिमेंट, परिषद और असेम्बलीमें सुसङ्गठित आन्दोलन क्रममें जो शिथिलता थी वह आपकी लखनऊकी उपस्थितिसे अंशतः अब दूर होगी। धुलेकर जी आयुर्वैदिक आन्दोलनको गति प्रदान करेंगे और विश्वविद्यालयको भी बलवान बनानेका प्रयत्न करेंगे। हमारे पास जिलोंसे जो पत्र आये हैं; उनसे मालूम पड़ता है कि इलाहाबाद, फतेहपुर, कानपुर, फर्रुखाबाद, इटावा, झांसी, जालौन, हमीरपुर और बांदा जिलेके वैद्य इस चुनावसे बहुत प्रसन्न और आशान्वित हुए हैं। लोगोंकी इच्छा है कि बारी बारीसे इन जिलोंमें आपका दौरा हो और आयुर्वैदिक आन्दोलनकी लहर जोरसे लहरायी जावे। लोग आपको देखें, आपसे कुछ कहें और आपसे कुछ सुनें। हमें आशा है कि जो जिले आपको बुलावेंगे यथा समय जाकर आप लोगोंकी इस इच्छाकी भी अवश्य पूर्ति करेंगे।

शङ्करदाजी शास्त्रीपदे स्मारक

श्री शङ्करदाजी शास्त्रीपदे उन्नीसवीं सदीकी समाप्ति और बीसवीं सदीके आरम्भकालके सन्धिकालके उन वीर पुरुषोंमेंसे हैं, जिनमें आयुर्वेदोद्धारकी लगन ईश्वर प्रेरणासे उत्पन्न हुई थी। उस समय आयुर्वेदकी सेवाकी न तो लोगोंमें प्रवृत्ति थी न समयकी अनुकुलता थी। ब्रिटिश राज्य भारतमें पूरे प्रतापसे चमक रहा था, मोह निद्रामें लोग अपना पन भूले हुए खोयेसे जीवन बिता रहे थे। उस समय एलोपैथीका साम्राज्य जम चुका था और इस बातकी चर्चा बराबर छिड़ती रहती थी कि आयुर्वेदमें कुछ नहीं है, इसे कायदेसे बन्द कर एकमात्र एलोपैथीका ही प्रचार रहे। कुछ विचारशील मनीषी जो यदाकदा इसका विरोध करते थे, उन्हींको साथी बनाकर शङ्करदाजी शास्त्रीपदेने आयुर्वेदका आन्दोलन उठाया, जहां तहां सभाएँ होने लगीं, जहां तहां आयुर्वेदकी शिक्षाके लिये प्रबन्ध होने लगे। आपने आर्यभिषक, राजवैद्य, त्रैमासिक आदि पत्र निकाले। अन्तमें सन् १९०७ में प्रथम वैद्यसम्मेलन नासिकमें स्थापित हुआ और संघटनके साथ आयुर्वेदके उद्धारका आन्दोलन चलने लगा। मनुष्य वर्तमानमें खोया रहता है, बहुत हुआ तो भविष्यकी कुछ चिन्ता कर लेता है, किन्तु भूतकालकी ओरसे बिलकुल बेखबर रहता है। पिछले समयमें इस भूलके स्वभावके कारण देशकी ऐतिहासिक सम्पत्तिकी बड़ी हानि हुई है। अब हमें सावधान रहना चाहिये। इसी प्रवृत्तिको लेकर कई वर्ष पहले श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदेके स्मारककी चर्चा चली और ईश्वर कृपासे इस फण्डमें आज आयुर्वेद महासम्मेलनके पास सत्रह अठारह हजार रुपये जमा हैं।

इस स्मारक समितिकी जो नियमावली तैयार हुई थी उसमें एक तो आयुर्वेदके अच्छे ग्रन्थ लेखकोंको प्रोत्साहित करनेके लिये ५००) के पुरस्कारकी व्यवस्था

है। इसके अतिरिक्त पुस्तक प्रकाशन और सम्भव हो तो मुद्रणालय खोलकर पुस्तक प्रकाशनका विस्तार करनेका भी एक उद्देश्य है। प्रकाशित पुस्तकोंसे आयुर्वैदिक साहित्यकी वृद्धि होगी और जिन्होंने स्मारकके लिये दान दिया है उनके पास ऐसे साहित्य सुलभतासे पहुँचाकर उन्हें भी अपने दानकी स्मृति बनाये रखनेकी व्यवस्था सोची गयी थी। पुरस्कारका प्रचलन तो हो चुका है और तीन चार बार ऐसा पुरस्कार दिया भी जा चुका है। इस बार भी उसके सम्बन्धमें सूचना निकली है। सन् १६५५ से इधर जो आयुर्वैदिक ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं उनकी पांच पांच प्रतियां पुरस्कारकी प्रतियोगिताके लिये श्री शङ्करदाजी शास्त्री पुरस्कार समिति ३ सम्मेलनमार्ग प्रयागके पते पर १५ सितम्बर तक भेज देनी चाहिये। पुरस्कार समिति उपयुक्त विद्वानोंसे उनका निर्णय कराकर सर्वोत्तम ग्रन्थ लेखकको ५००) के पुरस्कारसे पुरस्कृत करनेकी व्यवस्था करेगी। आगामी आयुर्वेद महासम्मेलनके अधिवेशनके समय ऐसे सर्वोत्तम लेखकको पुरस्कृत किया जायगा। नियमावलीमें पुरस्कारके लिये भेजी जाने वाली पुस्तकोंकी चर्चा करते हुए (१) स्वास्थ्यविज्ञान (२) रोगनिदान (३) चिकित्साविज्ञान (४) कौमारभृत्य (५) धात्रीविज्ञान (६) मानसरोगविज्ञान (७) कीटाणुशास्त्र (८) ऊर्ध्वाङ्ग चिकित्साविज्ञान (६) शल्यतन्त्र (१०) अगदतन्त्र (११) रसायन-वाजीकरण (१२) पदार्थविज्ञान (१३) द्रव्यगुणविज्ञान और वनस्पतिशास्त्र (१४) रसतन्त्र और संयोगशास्त्र कैमिस्ट्री (१५) पञ्चकर्म (१६) शरीर रचना और शरीर क्रियाविज्ञान (१७) सुश्रूषाविज्ञान (१८) आघात और प्रारम्भिक चिकित्सा (१६) उपवैद्य कर्मविधान (२०) नूतन अनुसन्धान और (२१) आयुर्वैदिक इतिहासके विषय निर्देशित हैं। हमारी समझमें इसमें प्रायः सभी विषयोंका समावेश हो गया है। आशा है इस प्रोत्साहवर्धन कार्यको आगामी सम्मेलनमें प्रभावशाली ढङ्गसे सम्पन्न किया जायगा।

हमारी शिकायत है और वह उचित है कि सम्मेलन और विद्यापीठकी ओरसे श्री शङ्करदाजी शास्त्री पदेके स्मारक कार्यको असरकारक ढङ्गसे प्रचलित करने पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया गया। सम्मेलनकी कार्यवाहियोंमें इसका उल्लेख प्रमुखतासे नहीं किया जाता। आयव्ययके व्योरेमें रकम दिखा देनेके अतिरिक्त कभी प्रभावशाली कार्यका निर्देश नहीं होता। इसके लिये स्थापित समितिको परामर्श और प्रोत्साहन देनेका प्रयत्न नहीं होता। सम्मेलनके समय समितिके नवीनीकरण पर शायद विचार नहीं होता। वर्षों बीत गये किन्तु अब तक इस स्मारक कोषसे एक भी पुस्तकका प्रकाशन नहीं हुआ। हम चाहते हैं कि आधुनिक आवश्यकताओंको दृष्टिमें रख उपयुक्त पुस्तकोंके निर्माणका कार्य विद्यापीठ अपने दृष्टि केन्द्रमें रखे। सिवाय परीक्षाएँ लेनेके विद्यापीठकी ओरसे आयुर्वैदिक साहित्यके निर्माण और प्रचारकी चर्चा नहीं होती। हम चाहते हैं कि विदेशों और पडोसी देशोंमें आयुर्वेद पहले किस प्रकार और कितना पहुँचा और आजके वहांके चिकित्साविज्ञानमें उसका कितना प्रभाव है, इसकी ऐतिहासिक खोज हो। हम अपने आरम्भिक कार्यकर्ताओंको भूल न जायँ; इसलिये आवश्यक है कि पिछले सौ वर्षोंमें जो जो आयुर्वैदिक सेवक, विद्वान, प्रचारक और उन्नायक हुए हैं, उनका एक सङ्कलित ग्रन्थ तैयार हो। इस प्रकार हम एक "शताब्दी इतिहास" ग्रन्थका निर्माण करें। आयुर्वेद और यूनानीको एक समीप लानेके लिये आलोचक और मीमांसक साहित्यका निर्माण हो। यह सभी कार्य इस स्मारक समितिके द्वारा वखूबी हो सकते हैं। विद्यापीठ स्मारक समितिको अपना अङ्गभूत मानकर उससे आयुर्वैदिक साहित्यके निर्माण और प्रचारका काम ले। अब सम्मेलन केवल प्रचारका मञ्च बना रहे यह अभीष्ट नहीं। आयुर्वेदके संरक्षण, निर्माण, पुष्टीकरण और वर्धन कार्य भी उसके द्वारा प्रभूत मात्रामें होना चाहिये। आशा है आगामी सम्मेलनमें इस पर अवश्य विचार होगा।

चिकित्सा निरीक्षण

[ले० वैद्य श्री त्र्यं० म० गोगटे अमरावती]

(इस बातकी आवश्यकता सभी समझ रहे हैं कि आयुर्वेदमें अनुसन्धान रिसर्च होना चाहिये। किन्तु आयुर्वेदीय पद्धतिके अनुसार उसकी सरणी कैसी हो यह प्रश्न सामने आता है। पाश्चात्य पद्धति अपने लिये सर्वथा उपयोगी नहीं हो सकती। क्योंकि आयुर्वेदीय सिद्धान्त और आयुर्वेदीय मूलाधार नियमोंके अनुसार ही अनुसन्धान होनेसे आयुर्वेदका उपकार हो सकता है। जामनगर और अन्य जहां ऐसा कार्य आरम्भ हुआ है वहां आयुर्वैदिक अनुसन्धानके सम्बन्धमें प्रकाश डालनेका प्रयत्न नहीं किया गया। मिरजके महाराष्ट्र प्रान्तीय वैद्यसम्मेलनके समय श्री गोगटे महोदयने मराठीमें एक निबन्ध पढ़ा था, जिसमें "आयुर्वेदीय चिकित्सेंतील माझ्या निरीक्षणांचे निष्कर्ष" शीर्षकमें चिकित्साके पहले निदानके महत्व पर जोर दिया था। उससे चिकित्सा संशोधनकी प्रक्रिया पर प्रकाश पड़ता है। यह वैद्योंके लिये मार्गदर्शक होगा। अतएव "आयुर्वेदपत्रिका" से हम उसका आवश्यक अनुवाद नीचे देते हैं। (सम्पादक)

अड़चन—

आयुर्वेद चिकित्साका अर्थ चरक-सुश्रुत-वाग्भट के ग्रन्थोंके तत्वानुसार जो चिकित्सा की जाय वही "आयुर्वेदीय चिकित्सा" है। आयुर्वेदीय चिकित्सा सन्तर्पणात्मक और अपतर्पणात्मक होती है। अपतर्पणमें "शोधन चिकित्सा" की जो विशेषता है वह प्रत्यक्षमें लुप्त हो गयी है। व्यक्तिगत प्राइवेट चिकित्साके व्यवसायमें कोई नया प्रयोग, नया संशोधन करनेकी हिम्मत सहसा नहीं करता। मूलशास्त्रसे हम कितने भ्रष्ट हो गये हैं उसकी खोज खबर करनेके लिये कोई तैयार नहीं होता। इसलिये इस समय पुरानी बात नयी सी मालूम हो सकती है। आयुर्वेदीय क्षेत्रमें यह कठिनाई है कि अड़चनके समय योग्य सलाह भी मिलनेकी सुविधा नहीं है। मान लीजिये किसीको वमन देने पर कुछ व्यापत्ति उपस्थित हो तो किससे जाकर सलाह ली जाय? प्रत्यक्ष अनुभवके बिना चिकित्सा कार्यका उत्तरदायित्व लेना अड़चन उत्पन्न करता है। उदाहरणार्थ वमनके लिये कौन सा द्रव्य चुना जाय, वह कितनी मात्रामें दिया जाय, वेग आरम्भ न होने पर क्या किया जाय, वेग कितनी देरमें आरम्भ होता है, वेग आरम्भ होने पर क्या किया जाय? अयोग, हीनयोग, सम्यक् योग अथवा अतियोग किस प्रकार समझा जाय? उपस्थित व्यापत्ति किस प्रकार दूर की जाय? किससे सलाह ली जाय? ऐसे कितने ही प्रश्नोंका कोलाहल उत्पन्न होता है। भारत-रूस सङ्घके सांस्कृतिक मण्डलके साथ में रूस गया था। उस समय मैंने वर्तमान भारतीय चिकित्सापद्धति पर भाषण किया था। मुझसे प्रश्न किया गया कि भारतमें आयुर्वेद अग्रणी क्यों नहीं है? तथा आयुर्वेद अन्य पैथीका सहारा क्यों ढूंढ़ता है? इसका उत्तर यह देकर मैंने छुटकारा पाना चाहा कि परकीय शासनमें राज्याश्रयके अभावमें आयुर्वेद लुप्त हुआ; किन्तु इससे स्वतः मेरा समाधान नहीं हो रहा था। मैंने इसके बाद निश्चय किया कि चिकित्सा सम्बन्धी प्रत्यक्ष अनुभवका रिकार्ड-कोष्टक अर्थात् स्टेटिसटिक्स तैयार किये बिना काम नहीं चलेगा। मैंने यह भी समझा कि आयुर्वेद शास्त्रको जनताभिमुख करना चाहिये। वही वैद्यक श्रेष्ठ हो सकता

है जो जनताभिमुख अथवा लोकाभिमुख हो। आयुर्वेद इस योग्यताका है ही; क्योंकि आयुर्वेद तात्विक चर्चा वाला तो है ही वह प्रत्यक्ष शास्त्र भी है। किन्तु "तद्विद्यैर्बहुभिः सह" सार्वजनिक संस्थामें यह कार्य हो तो उसे निराला महत्व प्राप्त होगा। मैंने अपने व्यक्तिगत निरीक्षणका निष्कर्ष निकाला है उसका एक विभाग सैद्धान्तिक निष्कर्ष और दूसरा व्यावहारिक निष्कर्ष है। ऐसा निष्कर्ष एक हजारसे अधिक उदाहरणोंके बाद निकाला गया है।

निदानपद्धति—चिकित्सा प्रयोगका अवलम्बन करनेके पहले निदानपद्धतिकी रूपरेखा पहले निश्चित करनी पड़ती है। इस पद्धतिसे निदानके कदम स्थूलसे सूक्ष्मकी ओर पड़ने लगते हैं। उदाहरणार्थ अन्धेरेमें गांवके बाहर जाने पर स्थूल रूपसे दूर पर एक वृक्ष दिखता है। ज्यों ज्यों उजेला होता जाय और उसकी ओर बढ़ते जायँ त्यों त्यों उसकी पींड, शाखा दिखेंगी; और आगे बढ़ने पर उसके पत्ते, फूल, फल स्पष्ट होंगे। अर्थात स्थूलसे सूक्ष्मका बोध होगा। आयुर्वेदीय सूत्रोंका अनुसरण करते हुए रोगके नामका निश्चय करना यह एक गौण विषय है; क्योंकि आयुर्वेदीय निदानपद्धतिमें "दोष-दूष्य संमूर्छन" समझ लेना महत्वका विषय है। आयुर्वेदीय चिकित्सा रोगानुसार नहीं बल्कि दोषदूष्य-संमूर्छन पर अवलम्बित है। रोगानुसार चिकित्सा करना मामूली बात है। प्रत्येक रोगकी भिन्न भिन्न अवस्थामें दोष, दूष्य, बल, काल, अग्नि, प्रकृति, वय, सत्व, सात्म्य, आहार-विहारके अनुसार चिकित्सा बदलती है। एक रोगमें भी परस्पर विरोधी व्यवस्था आ सकती है। किसी रुग्णके सम्बन्धमें पहले लङ्घन अवस्था आवे तो भी उसी रुग्णको तीन, पांच, सात दिनोंके पश्चात बृंहणकी अवस्था आनेकी सम्भावना हो सकती है। किसी रोगीको पहले स्नेह सरीखी सन्तर्पण क्रिया करनी पड़ेगी और फिर शोधनके समान अपतर्पण क्रिया करनी पड़ सकती है। एक ही रोगके भिन्न भिन्न रोगियोंको भिन्न भिन्न रसके द्रव्य देने पड़ेंगे। किसी रोगके वातज प्रकारमें मधुर-अम्ल-लवण द्रव्य दिये जायँगे; किन्तु उसी रोगके कफज प्रकारमें उक्त रसोंकी मनाही रहेगी। उसे कटु-तिक्त और कषाय रसके द्रव्य देने पड़ेंगे। इसी रोगके पित्तज प्रकारमें मधुर-कटु और कषाय द्रव्य देने पड़ेंगे। किसी रोगके वातज प्रकारकी चिकित्सामें वस्ति और तेलकी प्रमुखता रहेगी तो उसी रोगके पित्तज प्रकारमें विरेचन और घृतकी श्रेष्ठता मानी जायगी। इसी रोगके कफज प्रकारकी चिकित्सामें वमन और मधुकी आवश्यकता समझी जायगी। इससे स्पष्ट है कि आयुर्वेदीय चिकित्सा उस रोग पर वमन नहीं बल्कि उस समयके शारीरिक दोष और धातुओंकी स्थिति पर अवलम्बित रहती है। आयुर्वेदीय पद्धतिमें रोगके कारण बृंहण या लङ्घनात्मक होते हैं। अतएव रोगोंकी चिकित्सा भी लङ्घनात्मक या बृंहणात्मक होगी। निदानशास्त्र इसी पद्धतिके अनुसार तैयार होनेके कारण निदानका वर्गीकरण भी सन्तर्पणोत्थ विकार और अपतर्पणोत्थ विकारके रूपमें करना पड़ेगा। स्थूलसे सूक्ष्मकी ओर बढ़ना है, ऐसी दशामें रोगके नामका महत्व नहीं बल्कि यह निश्चय करना पड़ेगा कि यह व्याधि सन्तर्पणात्मक है या अपतर्पणात्मक। रोगी स्थूल है या कृश है, अथवा मध्यम है, इसका भी निर्णय करना पड़ेगा। अवस्था विशेषका रोगी सन्तर्पणोत्थ होते हुए भी कृश हो सकता है। कृश किन्तु सन्तर्पणोत्थ कास रोगीको लघु आहारसे उपशय हो सकता है। अपतर्पणोत्थ स्थूल रोगीको सूखी खांसी होने पर स्नेहके द्वारा उपशय हो सकता है। हां, स्नेहन चिकित्सा हरीतकीके द्वारा हो सकती है। यह समझनेमें अधिक समय नहीं लगेगा कि रोगी स्थूल है अथवा कृश है? इसकी बारीकीसे जांच करनी पड़ती है कि रोग सन्तर्पणोत्थ है या अपतर्पणोत्थ है। रोगीके आहार-विहार करनेसे पता लगता है। उसकी उमर दिन या रातका हिसाब बैठाना पड़ता है। मान लीजिये कुकुर खांसीकी बीमारी है, यह प्रायः लड़कोंको होती है। अर्थात इसका वयकाल बाल्यकाल अर्थात् कफकाल है। इसका जोर प्रायः

रातमें अधिक होता है अतएव तर्क सिद्ध हुआ कि इसमें कफके साथ वातका अनुबन्ध होता है। इसका स्थान उर स्थान अर्थात् कफ स्थान है। यह स्थूल कल्पना हो जाने पर सूक्ष्म विचारके साथ अंशांश कल्पना हो सकती है। कफ दोष, उरस्थान अतएव वमन द्वारा शमन चिकित्सा उपयुक्त होगी। सन्तर्पणात्मक व्याधि होने पर भी यदि रोगी कृश है तो पहले सन्तर्पण चिकित्सा ही करनी पड़ेगी। इसके बाद जो कर्म उचित हो वही करना पड़ेगा। अपतर्पणमेंसे पहले शोधन चिकित्सा हो या शमन; इसका विचार करते समय कभी कभी आहारमें अपतर्पण और विहारमें सन्तर्पण क्रिया करनी पड़ती है। आहारमें लाई और विहारमें मनमाना आलस और निद्राकी व्यवस्था करनी पड़ती है। कुकुर खांसीमें कभी कभी अनुवासन वस्तिसे भी उपशय होता देखा जाता है। स्नेहपानसे भी उपशय होता है। किन्तु यह स्मरण रखना चाहिये कि कुकुर खांसीमें उरस्थानका ध्यान रहे।

दोष-धातु विचार—आयुर्वेदीय निदानपद्धति में दोष, स्थान, सञ्चय, प्रकोप, प्रसार, स्थान-संश्रयका निदान करना पड़ता है। अतएव कहा जा सकता है कि आयुर्वेदीय निदानमें यह निश्चय करना पड़ता है कि दोष कोष्ठमें है अथवा शाखामें है; यदि कोष्ठमें दोष है तो किस स्थानमें है—आमाशयमें है या नाभि में है या पक्वाशयमें है, इसका निश्चय करना पड़ता है। चिकित्साकी सुविधाके लिये यह निदान भी करना पड़ेगा कि यदि दोष कोष्ठमें नहीं है तो उसे किस मार्गसे कोष्ठमें लाना पड़ेगा। दोषका स्थान निश्चित होने पर इसका भी निदान होना चाहिये कि उसका अनुबन्ध किसका है? इसका निदान होना चाहिये कि संसर्ग है या सन्निपात है। इसी विषयमें सूक्ष्म निदान करना हो तो यह देखना पड़ेगा कि दोष उत्क्लिष्ट है या नहीं। यदि उत्क्लेश हुआ है तो किस स्थानमें किस दोषका उत्क्लेश हुआ है? दोष सदा उत्क्लिष्ट ही नहीं होते लीन भी रह सकते हैं अर्थात् शाखा, सन्धि, शिर आदिमें दबे रह सकते हैं।

धातुसे दोषका छुटकारा—यहां तक विचार करनेके पश्चात वैद्यको अधिक निदानकी आवश्यकता रहती है। मान लीजिये दोष उत्क्लिष्ट नहीं है; किन्तु उसका उत्क्लेश करना आवश्यक है। दोषका छिन्न होना आवश्यक है अर्थात् धातुओंसे उसे या उन्हें अलग करना–छुड़ाना आवश्यक है। सम्प्राप्तिमें जो स्थान संश्रयकी मञ्जिल है उसे नष्ट करना है। यह बहुत महत्वपूर्ण विषय है; क्योंकि दोष कोष्ठसे बहिर्मार्गी होने पर धातुसे छुड़ानेके लिये क्या करणीय है इसका निदान होना आवश्यक है। इसके लिये स्नेह और स्वेदकी अवस्थाका निदान आवश्यक होगा। निदानका यह भाग आयुर्वेदीय चिकित्साकी दृष्टिसे बड़े महत्वका है। स्नेहकी अवस्था है या नहीं इसका निदान करनेमें अधिक सूक्ष्म विचारमें जानेकी आवश्यकता रहती है। इस सम्बन्धमें पहले यह विचार करना पड़ेगा कि विशिष्ट रोगी किस स्नेहके योग्य है। इस विषयमें स्थूल और सूक्ष्म निदानके द्वारा यह सोचना पड़ेगा कि घृत-तैल-वसा या मज्जा किसकी अवस्था है। स्नेहका चुनाव करते समय दोष, दूष्य, बल, काल आदि सबका विचार करना पड़ेगा। यह भी देखना होगा कि स्नेहमेंसे अभ्यङ्ग, पान, नस्य, अनुवासन आदिमेंसे किस मार्गका अवलम्बन करना होगा। यही नहीं अच्छ-विचारणा, इसके सिवाय शमन, शोधन, बृंहण आदिके निदानको विचारमें लेना पड़ेगा। रोगी स्नेहार्ह है या नहीं इसका विचार जैसा आवश्यक है उसी तरह यह भी आवश्यक और महत्वपूर्ण है कि स्नेहनके अनुषङ्गसे कौन सी बात होगी। यही नहीं यह भी देखना होगा कि चिकित्सा आरम्भ होने पर स्नेहन सम्यक् हुआ या नहीं अयोग या अतियोग तो नहीं हुआ? इसका विचार करनेमें सूक्ष्म निदान दृष्टिकी आवश्यकता है। पहले स्नेहार्हका विचार, फिर स्नेहन मात्राका–बूंदोंकी संख्यासे लेकर दश दश तोले तककी मात्राका निर्णय और स्नेहन कार्य कितने दिनमें पूरा होता है इसका

विचार करना पड़ेगा।

मान लीजिये कोई रोग सन्तर्पण जन्य है; किन्तु रोगीका अपतर्पण हुआ है तो पहले उसका सन्तर्पण कर फिर अपतर्पण करना होगा। एक लड़कीको सन्तर्पणजन्य व्याधि कानका बहना और कानमें दर्द था। उस पर अपतर्पणात्मक चिकित्सा करनेकी आवश्यकता थी; किन्तु उसे लगातार सूखी वान्ति-ओकारी हो रही थी। पेटमें कुछ ठहरता नहीं था। लड़की अधिक कृश दुर्बल हो रही थी। ऐसे अवसर पर पहले उसकी अपतर्पणावस्थाका निदान कर स्नेहन द्वारा बृंहण करना उचित समझा जाता है। उसे महातिक्तक घृत ३० बूंद आरम्भमें दिया। जिससे सूखी वान्तिका होना बन्द हुआ। क्रमशः स्नेहकी मात्रा बढ़ाते हुए एक सप्ताह तक स्नेहन दिया। इस प्रकार बृंहण कर फिर उसे वमन कराया। परिणाम स्वरूप कर्णस्राव बन्द हुआ, कर्णशूल बन्द हुआ और जहां कुछ सुनाई नहीं पड़ता था वहां कुछ कुछ सुनाई पड़ने लगा।

चिकित्सा चलती रहे तौ भी भिन्न भिन्न अवस्थाओंको समझनेके लिये निदानकी आवश्यकता पड़ती रहती है। कभी कभी ऐसा होता है कि निदानके अनुसार रोगी शोधनार्ह है, दोष भी क्लिन्न नहीं है; अतएव रोगी शोधनार्ह है; किन्तु प्रत्यक्ष स्नेहनकी चिकित्सा आरम्भ होने पर दाद खाज ऐसे रोग कम हो जाते हैं क्योंकि धातुसे दोष अलग हो गये-क्लिन्न हुए तौ भी शरीरसे बाहर न जानेके कारण रोगके फिर होनेकी सम्भावना रहती है; अतः उनके शोधनकी आवश्यकता रहती है। कभी कभी स्नेहनके बाद भी शोधनावस्था पूर्ण हुई सी नहीं रहती। अतएव दीपन-पाचन चिकित्सासे काम निकालना पड़ता है। दोषकी अधिकता, मध्यमावस्था अथवा अल्पावस्थाके विचारसे शोधनावस्था अथवा शमनावस्थाका निदान करना पड़ता है।

स्नेह-स्वेद विरहित शोधन—कभी कभी स्नेहावस्था या स्वेदावस्थाके पहले ही शोधनावस्था दिखाई पड़ती है। ऐसी स्थितिमें यह आवश्यक नहीं कि स्नेहन-स्वेदन दिया ही जाय। कभी कभी बालकोंको वमन देने पर मालूम होता है कि उन्हें स्नेहनकी आवश्यकता नहीं है और स्वेदनकी आवश्यकता तो नहीं ही है। क्योंकि उनका आहार स्निग्ध रहता है, उनका वयकाल कफका रहता है और रोग भी अधिकतर कफ सम्बन्धी ही होते हैं। अतएव बालकोंको वमन-शोधन तत्काल दिया जा सकता है। इसके विरुद्ध कुछ लड़कोंको दोषोंके उत्क्लेशके लिये पहले स्नेहन देना पड़ता है। दोष धातुगत होने पर धातुओंको बल देनेके लिये और दोषको धातुसे अलग करनेके लिये स्नेहन देना पड़ता है। शोधन देते समय दोषोंके कार्य व्यापारका निदान करना आवश्यक होता है। दोष धातुसे अलग होकर कोष्ठमें आये या नहीं आये, तो किस स्थान पर आये, वे उत्क्लिष्ट हैं या नहीं, इसे जाननेके लिये सूत्रस्थानोक्त निदान सूत्रोंके अतिरिक्त निदान सहायक सूत्रोंकी सहायता लेनी पड़ती है। एक लड़केको कानका बहना और बहरापन एक ही वमनसे आराम हो गया। उसकी भूख भी बढ़ गयी! एक रोगीको सूखी खांसी, छातीमें पीड़ा, बेचैनी, निद्रानाश, चेहरा पागलोंकासा था। एक घण्टेमें खांसीके ३० चालीस वेग आते थे। उसे लहसुन सिद्ध तेल २॥ तोले पिलाया गया। एक ही दिनमें खांसीके वेग थम गये, चेहरा अच्छा अच्छा दिखने लगा। रात भर सोया और सवेरे उठ बैठा। स्नेह जारी रहा और मृदु शोधन भी दिया गया। उससे वातसाम्य होकर विकार शान्ति हुई। तेलके स्नेहसे बालकोंकी खांसी भी दूर होती है।

स्वेद्य और अस्वेद्यका निदान—स्नेहन देनेके बाद इस विषयका निदान करना चाहिये कि रोगी स्वेदनके योग्य है या नहीं। स्वेदनके अनेक प्रकार हैं। दोष और दूष्यका विचार कर स्वेदनका प्रकार निश्चय करना होता है। मुंहको गरम कपड़ेसे ढांककर अग्नि स्वेदन होता है। अग्नि स्वेदन तो है ही। शोधनके पहले, स्नेहनके पश्चात या बिना

स्नेहनके ही रोगीको कुछ देर तक धूपमें बैठा रखने से भी स्वेदन होता है। ऋतुमानके अनुसार रोगीको धूपमें कम या अधिक देर तक बैठाना होगा। वसन्त ऋतुमें ६ बजेके समय बीस मिनट तक, १० बजे १५ मिनट तक, ११ बजे १० मिनट तक, १२ बजे ५ मिनट तक बैठना बस होगा। यदि रक्तमोक्षणका समय एक बजेका रखा गया हो तो बिना धूपमें बैठाये रक्तमोक्षण हो जाना चाहिये। उष्ण देशमें स्वेदनकी आवश्यकता प्रायः नहीं पड़ती। यदि करना ही हो तो थोड़े समयके लिये करे। स्नेहन स्वेदन कर्म चिकित्साका पूर्व कर्म भी है और स्वतन्त्र चिकित्सा भी है।

अपतर्पण—चिकित्साकी अपेक्षाके अनुसार निदानकी व्याप्ति होती है। चिकित्सा कर्ममें द्रव्य व्यवहार और आहार-विहारकी योजनाकी विशिष्ट अवस्था रहती है। उस अवस्थाके अनुरूप ही योजना होती है। उपशयके विचारसे रोगीके लिये औषधान्न विहारकी योजना करनी पड़ती है। किन्तु इसमें अन्धेरेमें निशाना मारना होता है। उससे अनुपशय होनेकी भी सम्भावना रहती है। किन्तु भूल भी मार्गदर्शक होती है। योजनाके पूर्व कर्मका महत्व है। अवस्थाका निरीक्षण ही निदान है। इस अवस्थाकी जानकारीके लिये अनेक बातोंका विचार करना पड़ता है। प्रत्यक्ष चिकित्सा चलती रहने पर भी दोषपाक, धातुपाक जैसी अवस्थाओंका भी निदान करना आवश्यक रहता है। रोगीको अन्न देनेके सम्बन्धमें "युक्त' लक्षित-लिंगैस्तु" सूत्र कहा गया है। लक्षितके लक्षणका निरीक्षण करना ही अन्न देनेकी अवस्थाका निरीक्षण है। इस प्रकार प्रत्यक्ष चिकित्सा आरम्भ करनेके समय शोधनावस्थाका निदान करना आवश्यक होता है। शोधनावस्थाका निदान करनेमें सम्प्राप्तिका विचार बहुत बारीकीसे करना पड़ता है। पहले देखना पड़ता है कि रोगी शोधनके योग्य है या नहीं? रोग और रोगीका बल देखना पड़ता है। फिर देखना पड़ता है कि रोगके दोष कहां हैं। यदि शाखामें हैं तो उन्हें कोष्ठमें किस प्रकार लाना होगा? दोषकी वृद्धि कर, अभिष्यन्दकी वृद्धि कर, दोषोंका पाक कर अथवा केवल वायुका निग्रह अथवा अनुलोमन कर दोषोंको कोष्ठमें लानेका उपाय सोचना होगा। दोषको कोष्ठमें लानेके लिये स्नेहन स्वेदन आवश्यक हो तो उसके लिये कौनसा द्रव्य चुनना होगा। दोष कोष्ठमें आ जाय तब यह देखना होगा कि दोष किस स्थान पर है। सूक्ष्म दृष्टिसे यह देखना आवश्यक है कि किस स्थानमें कौनसा दोष है। कफस्थानमें पित्त आया है या पित्तस्थानमें कफ आया है अथवा वातस्थानमें कफ आया है या कफस्थानमें वात आया है, इसके निर्णयके लिये निदान शास्त्रकी हर जगह मदद लेनी पड़ेगी।

सूत्रस्थानका महत्व—जब मालूम हो जाय कि दोष कोष्ठमें आ गये हैं तब यह देखना होगा कि उनका उत्क्लेश पूरी तरह हुआ है या नहीं। ऐसी स्थिति पर पहुँचनेके पश्चात "क्रियाकालं न हापयेत्" सिद्धान्तके अनुसार चिकित्साका आरम्भ हो जाना चाहिये। विषमज्वरके उदाहरणके द्वारा समझिये कि सम्प्राप्तिके पीछे चिकित्सा किस प्रकार चलती है। जिस दिन ज्वरकी पारी होती है उस दिन दोष आमाशयमें पहुँचकर अग्निका हनन कर उसके साथ रसके अनुगामी होते हैं। इसके अनुसार निश्चित हुआ कि उस दिन आमाशयमें उपाय करना होगा। वह उपाय शोधनात्मक, शमनात्मक अथवा बृंहणात्मकमेंसे कोई हो सकता है। ज्वर आ जाने पर दोष धातुमें रहते हैं। अतएव पारीके बीचके दिनोंमें चिकित्सा धातुओं पर होगी। इस प्रकार चिकित्सामें सम्प्राप्ति शास्त्रकी मदद क्षण क्षणमें होगी। आयुर्वेदीय ग्रन्थोंमें निदान स्थान और चिकित्सा स्थानका सच्चा विचार सूत्रस्थानमें भरा हुआ है। सूत्रस्थानमें निदान और चिकित्साके मूलसूत्र आ गये हैं। निदान और चिकित्सा सदा हाथसे हाथ मिलाकर चलते हैं। जैसे इञ्जीनियर और कण्ट्रक्टर साथ साथ रहते हैं।

कुछ अनुभवकी बातें—सन् १६३४ में अहमदनगरमें एक ५० वर्षके दमाके रोगीको बसन्त ऋतुमें ८ रत्ती मैनफल, पीपल, सेंधानमक और ऊखका रस मिलाकर दिया। स्नेहन नहीं दिया था, उत्क्लेश नहीं हुआ था, स्वेदन भी नहीं हुआ था। कुछ वान्ति हुई। दूसरे समय वह घबड़ाता हुआ आया। मैंने आव देखा न ताव, उसके ऊपर पानी उंडेलना शुरू किया। उससे उसे और मुझे दोनोंको शान्ति मिली। फिर कुमारीआसव पिलाया। क्योंकि कुमारीसे पिपासा, शोष और कफदोष कम होंगे। आसवके मद्यसारूपके कारण श्वासके अवरुद्ध स्रोत खुलेंगे। यह विचार उपशयात्मक हुआ। फिर मुलेठी, देवदारु, मैनसिल और गुड़का धूम्र दिया। रससिन्दूर और सोंठका योग भी दिया। उसके बाद कई वर्षों तक उसे दमा नहीं हुआ। यह घटना मेरे लिये भी उत्साहवर्धक हुई।

सन् १६५६ में अमरावतीमें एक १३ वर्षके लड़केको वान्ति पर वान्ति होती थी, पेटमें पानी भी नहीं ठहरता था, कान बहता था, सुनाई नहीं पड़ता था, वह कृश और दुर्बल था। उसे दिनमें दो तीन बार दश दश बूंद महातिक्तक घृत दिया। वह पच गया और वान्ति थम गयी। स्नेहनकी मात्रा ६ दिनोंमें २॥ तोले तक पहुँची। तेलकी मालिश भी करायी। कान साफ कर सौंफका अर्क डाला। घरमें जाकर कानमें तुलसीका रस डालनेको कहा। इसके बाद ४ दिन तक घी और वसाका यमक स्नेहन नित्य ५ तोलेके हिसाबसे दिया। इस प्रारम्भिक तैयारीके बाद वमन दिया। वमन ठीक हुआ और उसे कुछ सुनाई पड़ने लगा, मवाद कम हुआ, कानकी सड़ी गन्ध कम हुई। कानमें मधुघृत डालना आरम्भ किया। कर्णार्श काट दिया, कुछ अस्रविस्रुति हुई। स्नेह पूर्व फिर वमन दिया पेटमें हरीतकी और वचा खिलाई। आहारमें लाई दिया। तीन दिन स्नेहन देकर फिर वमन दिया। वमनमें चिकना कफ निकला। शोधनसाध्य रोग होने पर भी पहले सन्तर्पण देकर शोधन दिया। रोगी आराम हुआ।

सन् ५५ में ४० वर्षकी अवस्थाके शिक्षकको पांवमें शोथ, खुजली (इसब) और अग्निमांद्य था। स्नेहन योग्य होनेके कारण पहले दिन ढाई तोला स्नेह पिलाया। दूसरे दिन ५ तोला, तीसरे दिन ७॥ तोला और चौथे दिन १० तोला दिया। इसके बाद एक दिन अन्तर देकर दश दश तोले दो दिन दिये। एक दिन ७॥ तोला दिया। इसके बाद रोगीको थकी मालूम पड़ने लगी और स्नेहके नामसे उद्वेग मालूम पड़ने लगा। पाखानेकी हाजत अधिक होने लगी। एक दिन फिर स्नेहन देकर सोलहवें दिन विरेचन दिया। दोषोंका स्थान संश्रय पावों पर था। दोष प्रवृत्ति भी नीचेकी ओर थी। विरेचनका कार्य सुकर होनेके लिये विरेचनके पहले एक दिन अनुवासन वस्ति दिया। विरेचनसे संशोधनका काम अच्छा हुआ। सब विकार दूर हुए। अग्निबल भी बढ़ गया।

सन् १६५६ में एक वातजकासका रोगी आया। पहले स्नेहनके लिये नित्य ढाई तोला तैलपान कराया। एक सप्ताह तैल स्नेहन देनेके बाद घी और तेलका यमक स्नेह १० तोला दिया। एक दिन विश्राम देकर स्वेदन दिया। कफ छूटने लगा, नींद आने लगी, खांसी कम हुई। स्रंसनके लिये अमिलतासका कल्प दिया। फिर ३ दिन स्नेहन देकर अमिलतासका विरेचन दिया। फिर विरेचन दिया व्याधिमें कमी हुई।

सन् १६५७ में एक ६ वर्षका कर्णरोगी आया। बायें कानके नीचे सूजन थी। दोनों कान बहते थे। कानके नीचेकी गांठ (Cervical glands) बढ़ गयी थी। दो तीन वर्षसे भोजनके बाद पेट फूलता था। बाल्यावस्थामें कृमि विकार था। बालक निस्तेज और बहरा था। रोगी बृंहणके योग्य स्नेहार्ह था। पहले दिन महातिक्तक घृत एक तोला, दूसरे दिन ढाई तोला और तीसरे दिन ५ तोला देकर चौथे दिन वमन दिया। खानेके लिये औषधि त्रिकटु और बच दिया। कानमें धूप दिया। कानके नीचेकी गांठ छोटी पड़ गयी। एक सप्ताहमें वह कुछ सुनने लगा। कुछ ज्वर था, पाखाना पतला हुआ। मुखमें कुछ रौनक आयी।

१० दिन बाद फिर पहले दिन २॥ तोला, दूसरे दिन ५ तोला और तीसरे दिन ७॥ तोला महातिक्तक घृत दिया। चौथे दिन वमन दिया। ऊर्ध्वजत्रु विकारके अनुरूप पथ्य देना आरम्भ किया। सभी दृष्टिसे रोगी सुधर गया।

५५ वर्षका रोगी खांसी और त्रासदायक दमसे त्रस्त था। बायीं छातीमें पीड़ा, निद्रानाश और बेचैनी थी। कफ कम किन्तु खांसी अधिक थी, इञ्जेकशन वगैरह सब हो चुके थे। वातभूयिष्ट कास और जाड़ेके दिन थे। लसुन सिद्ध तैल २॥ तोला पीनेको दो बार दिया। पहले ही घण्टेमें खांसीका वेग कम पड़ा, वेदना मिटी और चौथे घण्टेमें कफ छूटने लगा। रात भर खांसी नहीं आयी, गहरी नींद रात भर रही। स्नेहन जारी रहा, कुछ दिनों बाद बसा दिया, अभ्यङ्ग भी होता रहा, सौम्यसारक भी दिया।

एक लकड़ीके टाल वालेकी एक वर्षकी लड़की लायी गयी। वह धीरे धीरे खांस रही थी। ज्वर नहीं था, छातीमें कफ भी नहीं था। खांसी वातभूयिष्ट थी। १० बूँद तेल गरम कर ड्रापरसे मुंहमें डाला। दूसरे दिन खांसीका नाम निशान न था।

इन उदाहरणोंसे निदान करने और चिकित्सा निश्चित करनेमें सफलता मिल सकती है।

साहित्य चर्चा

आयुर्वेद सेवा संघ का कैलेण्डरः—नासिक आयुर्वेद सेवासंघ का कैलेण्डर आया है। इसमें शक संवत् १८०० की सौर तिथियां और नीचे अंग्रेजी तिथियां दी गयी हैं। साथ ही मुख्य पर्वोंका भी उल्लेख हुआ है। कुछ आयुर्वैदिक सूत्रों का भी उल्लेख है। एक पृष्ठ पर दो महीने की तिथियां और उलट पीठ पर फिर दो महीनोंकी तिथियां देकर चार चार महीनोंका दिग्दर्शनकर तीन पन्नो में साल भर का विवरण दे दिया गया है। उपयोगी है।

कलाङ्क:—अनुभूतयोगमाला (वरालोकपुर-इटावा) के जनवरी मास का यह कलांक बहुत उपयोगी विषयोंसे पूर्ण है। कितने ही आयुर्वैदिक और यूनानीके परीचित योगोंका इसमें संग्रह है। साथ ही रघुनाथ नामक महाराष्ट्र पण्डित राघवकृत राघवानुभव नामक संग्रह पुस्तिकाका भी इसमें संकलन हुआ है। यह संकलन संस्कृतमें है, जिसकी टीका सम्पादक पं० विश्वेश्वर दयालुजी वैद्यराजने प्रकाशित की है। इसमें कितने ही योग, भस्मनिर्माण, शोधन-मारण आदिके प्रयोग हैं और अच्छे हैं। साबुन, तेल, शर्बत, विषप्रतीकार, धूपबत्ती, मोमबत्ती, सुहागवेंदी, दियासलाई, बनाने की तरकीबें कही गयी है। अंक उपयोगी और संग्रहणीय हैं। मूल्य १)

प्राकृतिक चिकित्सा:—प्रेम नगर बरेली के डाक्टर कुन्दनलाल अग्निहोत्री एम० डी०, एल०, ई०, एम०, आर०, ए०, एस (लन्दन) सरकारसे पुरस्कृत और क्षय चिकित्सामें पुरस्कार प्राप्त सज्जन हैं। आरोग्य शास्त्र पर भी आपने पुस्तकें लिखी हैं। जबलपुर सी० पी० सेनीटोरियममें आर मेडिकल आफिसर रह चुके हैं। आपने ही प्राकृतिक चिकित्सा पर यह पुस्तक लिखी है। इसकी भूमिका भारतीय लोकसभा के अध्यक्ष श्री गणेश वासुदेव मालवंकर जीने लिखी थी। इस पुस्तकमें आपने अपने ५० वर्षोंके अनुभव और शास्त्र अवलोकन द्वारा प्राप्त विद्वत्ताका उपयोग वर्तमान परिस्थितिके अनुकूल चिकित्साके साधन बतलाने में किया है। अधिकांश रोगोंकी जड़ पेट है। आंतोंकी सफाई रखने से रोग होने की सम्भावना कम रहती है। प्राकृतिक साधनोंमें सूर्य और वायुकी शक्तिके

उचित उपयोगकी भी इसमें सलाह दी गयी है। जल-चिकित्सा वेदों और आयुर्वेदके कथनका आपने उद्धाटन किया है। वस्तिकर्म पर भी वेद तथा आयुर्वेदके उदाहरण दिये गये हैं। शारीरिक अंगों का वर्णन कर कहा गया है कि जब एक निर्जीव मैशीनकी समय समय पर सफाई और सँभाल पर ध्यान दिया जाता है, तब इस परमात्मा निर्मित सजीव शारीर यन्त्रकी सफाई और सँभाल और रक्षा करनेमें लापरवाही दिखाना अपराध हैं। शरीरमें कृमियोंकी संभावना, नाड़ी संस्थानकी शक्तिका वर्णन, व्यायाम और बल वर्धक ब्रह्मचर्यनुवर्तन पर बल दिया गया है। भोजन और उपवास, संक्रामक रोगोंकी रुकावट तथा मनोबल-वर्धनकी सलाह दी गयी हैं। दूसरे भागोंमें विविध रोगोंके उपाय बतलाये गये हैं। बीच बीच में चित्र देकर विषय स्पष्ट किये गये हैं। पुस्तक बहुत कामकी है और इसे लिखकर डाक्टर फुन्दनलाल जीने समाज का बहुत उपकार किया है। लगभग ४०० पन्ने की पुस्तकका दाम ४) है। इसका प्रकाशन ग्राम उद्योग ट्रस्ट कानपुर के द्वारा हुआ हैं और ट्रस्ट अथवा डाक्टर साहब से पुस्तक प्राप्त हो सकती है।

राष्ट्र उत्थानकी कुंजी:—गऊ सेवा मण्डल के दूसरे पुष्पके रूपमें इस पुस्तकको प्रेम नगर भूड़ बरेली के डाक्टर फुन्दन लालजी अग्निहोत्री, एम०,डी०, डी० एस० ई० यम० आर० ए० एस० महोदय ने लिखी है। स्वास्थ्य भण्डार प्रेमनगर भूड़ बरेलीके द्वाराइसका प्रकाशन हुआ है। मुल्य ।।) हैं। पुस्तकका आरम्भ ऐसे वेदमन्त्रसे होता है जिसमें कर्तव्यरत जातियों, दुधारगौवों, वेगवाही अश्व-आदि पशु राष्ट्रकी आधाररूपा आदर्श नारी, इच्छानुसार जलवृष्टि और फलफूलसे लदी ओषधियोंके द्वारा राष्ट्रकी स्वाधीनता रक्षित होती रहे। गोधनकी उपयोगिता, गोधनसे स्वास्थ्य वृद्धि, विटामिनका आधार, गोवंश चिकित्सा, दूध, घी, दही आदिका तुलानात्मक विवेचन, गौरक्षाका राष्ट्रीयत्व, सरकार और जनता का कर्तव्य आदि विषयोंका इसमें सप्रमाण वर्णन है। पुस्तक हर एक गृहस्थके देखने योग्य है।

हीरक जयन्ती:—अमृतधाराके अन्वेषक कविविनोद, वैद्यभूषण पण्डित ठाकुरदत्त शर्मा देहरादून वालोंको उनकी ७५ वर्षकी पूर्तिके उपलक्ष्यमें यह जयन्ती ग्रन्थ भेट किया गया है। इसका सम्पादन वैद्यरत्न, आयुर्वेदवृहस्पति कविराज प्रताप सिंह जीने किया है। इसमें प्रथमांजलिमें २५ पृष्ठोंमें वैद्य जी और उनकी धर्मपत्नी पूर्णादेवी जीका जीवन चरित लिखा है। द्वितीय अञ्जलिमें श्रद्धाञ्जलियां और शुभकामना सं० २५ पृष्ठोंमें हैं। तृतीय अंजलिमें आयुर्वेदका वैज्ञानिकत्व, आयुर्वेदमें सूचीवेध, अमरफल और प्रतिकूल आहार सम्बन्धी लेख ७३ पृष्ठ तक है। चौथी अंजलि योगसाधनसे दीर्घजीवन, सूर्य नमस्कार, दिनचर्या और दश नियम, साठवर्षसे अधिक आयुवालोंके रहन सहन सम्बन्धी संक्षिप्त वर्णन और दीर्घायुषी धनीमानी सज्जनोंके लेख हैं। पांचवी अंजलिमें कई सज्जनोंके अनुभूत प्रयोग हैं। पूरी पुस्तक सुधानिधिके आकारके १६० पृष्ठमें पूरी हुई है। कितने ही चित्र भी हैं। ग्रन्थको उपयोगी और दीर्घायु प्राप्त करनेके लिये मार्गदर्शक बनानेका प्रयत्न हुआ है। पुस्तकालयोंमें रखने और गृहस्थोंके पढ़ने योग्य है। दाम लागतमात्र २॥ और वी० पी० से ३) रखा गया है।

गौहाटी आयुर्वेदकालेज मैगजीन—आसाम गौहाटीमें जो आयुर्वेदकालेज है, उसके विद्यार्थियोंके उपयोग के लिये यह कालेज पत्रिका प्रकाशित होती है। जो पत्रिका हमारे सामने है, उसमें सुधानिधि आकारके ५२ पृष्ठ बँगला अक्षरोंमें और ७० पृष्ठ अंग्रेजीमें हैं। असम भाषा बंगला भाषासे मिलती जुलती; किन्तु स्वतन्त्र भाषा है। कालेज अब तक ५० स्नातक निकाल चुका है। इस पत्रिकाके द्वारा आसामके आयुर्वैदिक छात्र और आयुर्वैदिक परिस्थितिमें सुधार हो सकता है। हम पत्रिका की सफलता के लिये शुभकामना प्रकट करते हैं। लेख ऊंचेदर्जे के महत्व पूर्ण हैं।

समाचार

पूर्वजन्मकी स्मृति—गङ्गानगर राजस्थानकी सेठ मोहनलाल मेमोरियल संस्थाके द्वारा इस बातका अनुसन्धान होनेवाला है कि कुछ लोगोंको पूर्वजन्मका स्मरण किस प्रकार रहता है। साथ उस परिस्थितिका भी अनुसन्धान होगा कि व्यक्तित्व परिवर्तन किस प्रकार होता है। अर्थात् कभी कभी किसी लड़की या स्त्रीका पुरुष हो जाना या किसी पुरुष बालकका स्त्रीलिङ्गमें परिवर्तन हो जाना कैसे होता है? सितम्बर महीनेमें सागर विश्वविद्यालयमें इस विषयकी एक गोष्ठी होगी। इसके साथ कुछ मनोवैज्ञानिक विचित्रताओंका भी रहस्य प्रकट होनेकी सम्भावना है।

ग्राहकोंसे—सुधानिधिका मूल्य अभी तक बहुत थोड़े लोगोंने भेजा है। कृपा कर सभी ग्राहक शीघ्र मूल्य भेजनेकी कृपा करें। पत्रकी रक्षा करना सबका धर्म है।

मैनेजर

वैद्य हकीमोंकी परेशानी—अभी दिल्लीमें अखिल भारतीय यूनानी तिब्बी कानफरेंसका अधिवेशन हकीम अब्दुल हमीद साहबके सभापतित्वमें हुआ था। इसमें एक प्रस्ताव द्वारा सरकारसे मांग की गयी है कि सन् १६४० के औषधि कानून और सन् १६४५ के ड्रग्स नियमोंके कारण वैद्य और हकीमोंको कभी कभी काफी परेशानी उठानी पड़ती है। सरकार इन नियमोंके सम्बन्धमें स्पष्टीकरण प्रकाशित करे और आयुर्वेदिक और यूनानी चिकित्सापद्धतिकी जब तक वैधानिक स्थितिका अन्तिम फैसला न हो जाय, तब तक चिकित्सकोंके विरुद्ध कोई कार्यवाही न की जाय।

मुद्रक :—पण्डित राजेन्द्रचन्द्र शुक्ल वैद्य सुधानिधि प्रेस सम्मेलन मार्ग, प्रयाग,
प्रका० :—वैद्य पण्डित सिद्धिनाथ दीक्षित कवीश्वर, प्रयाग।